[६] ॐ यच्चाहमेनो विद्वांश्चकार यच्चाविद्वाँस्तस्य सर्वस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा, इदमग्नये न मम।

—इस प्रकार होम सम्पन्न कर पञ्चोपचार—गन्ध, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्यसे अग्निकी उत्तर-पूजा करके न्यूनतापूर्तिके लिये प्रार्थना करे—

ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरा पृणस्व घृतेन स्वाहा॥ अन्तमें निम्नाङ्कित वाक्य कहकर कृत हवन-कर्म भगवान्को अर्पित करे—**अनेन नित्यहोमकर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयताम् न मम।**

ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।

यजमान आने पर मंगलाचरण - **मङ्गलम् भगवान विष्णुः, मङ्गलम् गरुणध्वजः। मङ्गलम् पुण्डरीकाक्षः, मङ्गलाय तनो हरिः॥ मंगलं भगवान् शंभुः मंगलं वृषभध्वजः । मंगलं पार्वतीनाथो मंगलायतनो हरः ।।** or **शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।। ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः। भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँसस्तनूभिः। व्यशेम देवहितं यदायूः।** or **स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः । स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्ताक्षर्यो अरिष्टनेमिः । स्वस्ति नो वृहस्पतिर्दधातु ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः** or *शांति पाठ*

सीतानाथ समारम्भां रामानन्दार्य मध्यमाम्। अस्मदाचार्य पर्यन्तां वन्दे श्रीगुरू परम्पराम् ।। Guru parmpara ko namskar

गुरु वंदना - **गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः । गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१॥ अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् । तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥२॥ ध्यानमूलं गुरुर्मूर्तिः पूजामूलं गुरुर्पदम् । मन्त्रमूलं गुरुर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरूर्कृपा ॥**

व्यास वंदना - **व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे । नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः ।। नमोस्तुते व्यास विशाल बुद्धे फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र। येन त्वया भारत तैल पूर्णः प्रज्वलितो ज्ञानमय प्रदीपः ।।**

शुकदेव - **यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेत कृत्यं द्वैपायनो विरह कातर आजुहाव। पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदुः तं सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोस्मि॥**

सरस्वती वंदना - **या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता। या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना॥ या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता। सा माम् पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥**

शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमाम् आद्यां जगद्व्यापिनीम्। वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्। हस्ते स्फटिकमालिकाम् विदधतीम् पद्मासने संस्थिताम्। वन्दे ताम् परमेश्वरीम् भगवतीम् बुद्धिप्रदाम् शारदाम्॥

शान्तिकरण - **ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः।** - *हे देवी (शनिदेव), हमें सुख, शांति, और समृद्धि प्रदान करें। हमारे पानी और जलस्रोत शुद्ध रहें। हमारे जीवन में शांति और सुख के लिए बहें।"*

परिवारी जन पर जल सिंचन - **ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः ता नऽऊर्जे दधातन, महे रणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसः, तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। ॐ तस्माऽअरंगमामवो, यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जन यथा च नः॥ - ३६.१४-१६**

सभी साधन सामिग्री पर जल सिंचन पवित्र करें - **पुनन्तु माँ देवजनाः पुनन्तु मनसा धिया | पुनन्तु बिश्वा भूतानि पवमानः पुनातु मा ||** *"हे देवगण, आप मुझे पवित्र करें, हे मन के विचार, आप मुझे पवित्र करें, हे सभी प्राणी, आप मुझे पवित्र करें, हे पवमान (वायु), आप मुझे पवित्र करें।"*

पवित्रीकरण - **ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।**

» जल से आचमन करने के 3 मंत्र - **ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः।** *तीन बार आचमन कर आगे दिये मंत्र पढ़कर हाथ धो लें।* **ॐ हृषीकेशाय नमः।।**

हवन में - **ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१॥ ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥२॥ ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥३॥**

प्राणायाम - **ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य** ... **प्रचोदयात ।ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥** *हस्तप्रक्षालन*

(अंगन्यास) अंग न्यास ... सीधे हाँथ के अंगूठे ओर अनामिका अंगुली को आपस में जोड़ ले। सम्बंधित मंत्र का उच्चारण करते जाये, शरीर के भागों स्पर्श करते हुए यह भावना रखे की... वे भाग अधिक शक्तिशाली और पवित्र होते जा रहे हैं।

ॐ हृदयाय नमः ; ॐ शिरसे स्वाहा ; - ॐ शिखाये फट ; - ॐ कवचाय हुम् ; ॐ नेत्र त्रयाय वौषट ; ॐ अस्त्राय फट् --- तीन बार ताली बजाये

जल से अंग स्पर्श करने के मंत्र- ॐ वाङ्म आस्येऽस्तु ॥ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॥ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ॥ *इससे सारे शरीर पर जल का मार्जन करें*

ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा में सह सन्तु ॥

शिखा बंधन - मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा न अश्वेषु रीरिषः। वीरान् मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदामित् त्वा हवामहे॥

चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धि कुरुष्व मे।।

पवित्री धारण - ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।

गठजोड़ - "ॐ यदाबध्नन दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आ बन्धामि शत शारदायायुष्यंजरदष्टियर्थासम् ॥" *जिस प्रकार दक्षायणी (पार्वती) ने हिरण्य (सोने) से बने धागे को शतानीक (विष्णु) के लिए बांधा था, उसी प्रकार मैं भी इस रक्षा सूत्र को सौ शरद ऋतुओं (सौ वर्षों) तक दीर्घायु और वृद्धावस्था तक पहुँचने के लिए बांधता हूँ।"*

यज्ञोपवीत धारण - यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

यज्ञोपवीत उतारने एतावद्दिन पर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया। जीर्णत्वात्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम्।।

कलावा मंत्र - येन बद्धो बलि राजा, दानवेन्द्रो महाबलः, तेन त्वां मनुबध्नामि, रक्षे माचल माचल|| or

स्वस्तिवाचन or

मंत्र का अर्थ: जिस रक्षा सूत्र से दानवेन्द्र बलि को बांधा गया था, उसी से मैं तुम्हें बांधता हूँ। हे रक्षा सूत्र! तुम चलायमान न हो, स्थिर रहो। महिलाओं की बाईं और पुरुषों की दाईं कलाई. वामनावतार ने भी राजा बलि को यह रक्षा सूत्र बाधने के बाद ही पाताल लोक जाने की अनुमति दी थी. - विज्ञान के अनुसार इससे त्रिदोष अर्थात वात, पित्त और कफ का संतुलन बना रहता है। ब्रह्मा, विष्णु व महेश तथा तीनों देवियों- लक्ष्मी, पार्वतीव सरस्वती की कृपा प्राप्त। कलावा बंधवाते समय मुट्ठी बंधी और दूसरा हाथ सिर पर। मौली कहीं पर भी बांधें इसे केवल 3 बार ही लपेटें।

ब्रह्मन् के कलावा बधवाना- ओउम् व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षामाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥ *व्रत से दीक्षा मिलती है, दीक्षा के समय दक्षिणा दी जाती है। दक्षिणा से श्रद्धा बढ़ती है, श्रद्धा से सत्य रूप परमेश्वर की प्राप्ति होती है। व्रत वह शक्ति है,*

यजमान तिलक - "ॐ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः। तिलकान्ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थसिद्धये"

आदित्य, वसु, रुद्र, विश्वेदेवा और मरुद्गणों से प्रार्थना करता है कि वे यजमान को तिलक प्रदान करें और उसे धर्म, काम, और अर्थ की सिद्धि प्रदान करें.

यजमान तिलक " शतमानं भवति शतायुः पुरुषः शतेन्द्रिय आयुष्येवेन्द्रिये प्रतितिष्ठति " *यह मंत्र एक आशीर्वाद मंत्र है, जिसका अर्थ है "आप 100 साल तक जीवित रहें, 100 इंद्रियों के साथ, और आपकी इंद्रियां मजबूत रहें".*

माथे पर तिलक लगाने के बाद **चावल क्यों** *लगाते हैं?* चावल को अक्षत भी कहा जाता है और इसका मतलब है कि यह कभी नष्ट नहीं होता है इसलिए किसी भी कार्य में सफलता के लिए चावल का उपयोग किया जाता है। तिलक

ब्राह्मणों को तिलक - ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिरधातु ॥ *इन्द्र, जो महान कीर्ति वाले हैं, हमारा कल्याण करें। पूषा, जो सब कुछ जानने वाले हैं, हमारा कल्याण करें। गरुड़, जिनका कोई शत्रु नहीं है, हमारा कल्याण करें। बृहस्पति, जो ज्ञान के स्वामी हैं, हमारा कल्याण करें।*

नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मण हिताय च। जगत् हिताय कृष्णाय गोविंदाय नमो नमः॥ *गायों और ब्राह्मणों के साथ सभी प्राणियों के शुभचिंतक, हितैषी भगवान को प्रणाम करता हूं।*

कन्याओं को तिलक लगाने का मंत्र - ॐ अंबे अंबिके अंबालिके नामा नयति कश्चन। सस्सत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पिल वासिनिम् ॥

माताओं को तिलक लगाने का मंत्र - ॐ सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते॥

or ॐ देहि सौभाग्यं आरोग्यं देहि मे परमं सुखम्। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषोजहि॥

or ॐ जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥

स्त्रियों को तिलक - श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या व्हो रात्रे पाश्र्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यातम्। इष्णिनषां मम ईशां सर्व लोकमर्याषां ॥

बच्चों को तिलक -

ॐ यावत् गंगा कुरुक्षेत्रे यावत् तिष्ठति मेदनी। यावत् रामकथा लोके तावत् जीवतु आयुः ॥

मेहमान को तिलक -

ॐ भद्रमस्तु शिवं चास्तु महालक्ष्मिः प्रसीदतु। रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदाः सन्तु सर्वदा ॥

पितरों को तिलक - ॐ पितृगणाय विद्महे जगत धारिणी धीमहि तन्नो पितृो प्रचोदयात्।

सूर्य प्रार्थना-

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं रूपं हि मंडलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि। सामानि यस्य किरणाः प्रभवादिहेतुं ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम् ॥

प्रातर्नमामि तरणिं तनुवाङ्गनोभि- ब्रह्मेन्द्रपूर्वकसुरैर्नुतमर्चितं च । वृष्टिप्रमोचनविनिग्रहहेतुभूतं त्रैलोक्यपालनपरं त्रिगुणात्मकं च ॥

कर्मपात्र पूजनः *यजमान अपने बायीं ओर भूमि पर त्रिकोणात्मक मण्डल बना कर गन्धाक्षत से पूजन कर उस पर कर्म पत्र रख कर पूजन करें ||*

ॐ तत्वा यामि ब्राह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोद्धयुरुश (गुं) स मा न आयुः प्र मोषीः ।।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् आवाहयामि ।। ॐ अपांपतये वरुणाय नमः । इति पञ्चोपचारैर्वरुणं सम्पूज्य । नमस्कार करोमि ।

अंकुश मुद्रा सूर्य को दिखाकर सभी तीर्थों का आहवाहन करें , सूर्य से प्रार्थना करें सभी तीर्थों का जल कर्म पात्र में भेजें | ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।। *ॐ ऐही सूर्यदेव सहस्त्रांशो तेजो राशि जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहणार्घ्य दिवाकरः।।* ॐ सूर्याय नमः, ॐ आदित्याय नमः, ॐ नमो भास्कराय नमः। हाथ कछुआ की तरह करके कर्म पात्र पर रखें ओर 8 बार बोलें " ॐ वं वरुणाय नमः " उसके बाद यजमान थोड़ा जल सभी पूजन सामिग्री पर डालें

दीपक जलाना -

ओं एतन्ते देव सावितर्यज्ञं प्राहुबृस्तये बृहमणे तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव| - Eshwar ke haath saaf

ऊँ यं ब्रहम वेदान्त विदो वदन्ति परम् प्रधानम् पुरुषम् तथान्ये विश्वोदगते कारणमईश्वरम् वा तस्मै नमो विघ्न विनाशनाय | eswar ki namskar

शुभम करोति कल्याणं, आरोग्यं धन संपदाम्, शत्रु बुद्धि विनाशाय, दीपं ज्योति नमोस्तुते।। Deepak jalana

ॐ ज्वलमालिन्यै नमः रत्नेश्वरी नमः | श्री विष्णवै नमः पुराण पुर्षोत्तमाय नमः !

ॐ भूर्भुवः स्वः दीप देवतायै नमः आवाहयामि , सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि |

भो दीप देव स्वरूपस्त्वं कर्मसाक्षी हयविघ्नकृत्। यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

आरतिकर्म;: **हरि: ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत । श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ||** *अर्थ है: विराट पुरुष के मन से चंद्रमा, आँखों से सूर्य, कानों से वायु और प्राण, तथा मुख से अग्नि प्रकट हुई।*

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। ॐ अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ॐ सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। ॐ सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ॐ ज्योतिः सूर्यः सूर्या ज्योतिः स्वाहा।

प्रार्थना- **भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने । त्राहि मां निर्याद्घोराद्दीपज्योतिर्नमोस्तुते ॥**

धूपपात्र - **धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान्धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वाम| देवानामसि वह्नितमं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।**

ॐ गन्धर्वदैवत्याय धूपपात्राय नमः| - *हे अग्नि! तुम धू हो। जो हमें धू करके नष्ट करना चाहते हैं, उनको तुम धू कर दो (धू-धू कर जलाना, ध्वस्त करना)। तुम देवों में सबसे आग्नेय, शुद्ध, प्रिय, साथ जोड़ने वाले, तथा देवों को आहुति पहुंचाते हो।*

शंखपूजन- शंख को चन्दन से लेपकर देवता के वायीं ओर पुष्प पर रखकर शंख मुद्रा करें।

ॐ त्रैलोक्ये यानितीर्थानि वासुदेवस्थ चाज्ञया | शन्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्मात् शन्ख प्रपूजयेत् ||

ॐ भूर्भुवः स्वः दीप देवतायै नमः आवाहयामि , सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि |

प्रार्थना - **त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे। नमितः सर्वदेवैश्च पाञ्जन्य! नमोऽस्तुते।। पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि तन्नः शंखः प्रचोदयात्। ॐ भूर्भवः स्वः शंखस्थदेवतायै नमः**

घण्टा पूजन- **ॐ सर्ववाद्यमयीघण्टायै नमः, आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम्। कुरु घण्टे वरं नादं देवतास्थानसन्निधौ।।**

ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्थाय गरुडाय नमः गरुडमावाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गरुडमुद्रा दिखाकर घण्टा बजाएं। दीपक के दाहिनी ओर स्थापित कर दें।

सूर्य ध्यान - **ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यण्च, हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन। ऊँ घृणि: सूर्यादित्योम.** *यह सूर्य देव का एक प्रसिद्ध मंत्र है। इसका अर्थ है, "जो कृष्ण वर्ण वाले, प्रकाश से युक्त, और अमृतमय तथा मरणशील लोगों को जीवन देने वाले हैं, वे सूर्य देव हैं।"*

सूर्य अर्ध्य or प्रार्थना- **ॐ ऐही सूर्यदेव सहस्रांशो तेजो राशि जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहणाार्घ्यं दिवाकर।।** *हे सूर्य देव, आपके हजार सिर हैं, आप प्रकाश का भंडार हैं और आप इस संसार के स्वामी हैं।" सूर्यदेव स्वर्णिम रथ पर सवार होकर, लोकों को देखते हुए आ रहे हैं।*

आदित्यस्य नमस्कारान् ये कुर्वन्ति दिने दिने । आयु प्रज्ञा बलं वीर्यम् तेजस् तषा च जायते।।

मे कच्चे चावल का प्रयाग करन स सकारात्मक ऊजा मिलता है। इसस हमार ...

भूत शुद्धि : पीली सरसो दाने सभी दश दिशाओ

ओम अपसर्पन्तु ते भूता: ये भूता भूमि 'संस्थिता:। ये भूता: बिघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ||

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा: सर्वतो दिशम। सर्वेषामविरोधेन पूजा कर्म / यज्ञकर्म समारभ्भे॥

बायें पैर को हाथ से ३ बार जमीन पर ठोककर भूतोपसारण करें |

देवाः आयान्तु | यातुधाना अपयान्तु | विष्णोदेव यजनं रक्षस्व

पुनः जल लेकर नेत्रों को प्रोक्षण करें

श्री भैरव नमस्कार: **ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम | भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि || "ॐ भैरवाय नमः"**

बटुक भैरव - **ॐ ह्रीं वां बटुकाये क्षौं क्षौं आपदुद्धाराणाये कुरु कुरु बटुकाये ह्रीं बटुकाये स्वाहा !!** *हे बटुक भैरव, हे आपत्तियों से उद्धार करने वाले, मेरी रक्षा करें, मेरी बाधाओं को दूर करें।* **हस्त प्रक्षालन**

ॐ भूर्भुवः स्वः भैरवाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि , नमस्करोमि |

सूर्यार्ध्यदानम् - **ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥**

ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ||

ॐ भुवन भास्कराय नमः अर्ध्य दत्तं न मम ||

नमस्कारान् - **ॐ आदित्यस्य नमस्कारान् ये कुर्वन्ति दिने दिने। आयुः प्रज्ञा बलं वीर्यं तेजस्तेषां च जायते ||**

पृथ्वी स्पर्श- **समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले । विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्वमे ॥**

पृथ्वी विनियोग - **पृथ्वी ति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः , सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन पवित्र करणे विनियोग ||**

पृथ्वी पूजन - **पृथ्वी त्वया धृता लोका देवी त्वं विष्णुना धृता। त्वम् च धारय मां देवी पवित्रं कुरु चासनम्।।** *"हे देवी पृथ्वी, आप ही से संपूर्ण लोक उत्पन्न हुआ है और आप ही विष्णु द्वारा धारण की जाती हैं।"*

ॐ भूर्भुवः स्वः* पृथ्वी *नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि , नमस्करोमि |

पृथ्वी प्रार्थना - **आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थितासि । अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतदाप्यायते कुत्स्नमलङ्घयवीर्ये || ॐ भू प्रथ्व्ये नमः , ॐ कमलसनाये नमः , ॐ आधार शक्त्ये नमः**

वैदिक ईश्वर स्तुति- प्रार्थना मन्त्र

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥१॥

हिरण्यगर्भ: समवर्त्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेकआसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाविधेम 2॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्यदेवा: । यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्यु: कस्मै देवाय हविषाविधेम ॥३॥

य: प्राणतो निमिषतो महित्वैक इन्द्राजा जगतोबभूव। य ईशे अस्य दविपदश्चतुष्पद: कस्मै देवाय

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च् दृढा येन स्वः स्तभितं येननाकः । यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषाविधेम ॥५॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयोरयीणाम् ॥६॥

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानिविश्वा। यत्र देवा अमृतमानशाना स्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानिविद्वान। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम॥८॥

शांतिकरण

ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीपतये शनयो रविस्र वन्तुनः। ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः, पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः, सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येमशरदः शतं जीवेम शरदः शतं श्रृणुयाम शरदः शतम् । प्रब्रवाम शरद् शतमदीनाः स्याम शरदः शतम् भूयश्यच शरदः शतात् ।।

शिवसंकल्पसूक्त-

यजाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१॥

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२॥

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।।३।।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥४॥

यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ५॥

सुषारथिरश्वानिव यन्यनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ६ ॥

स्वस्तिवाचन Vaidik -

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥1॥

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये॥2॥ - ऋ.म. 1। सू.1। मं. 1,9।

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः। स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना॥3॥

स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः। बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः॥4॥

विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये। देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः॥5॥

स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति। स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि॥6॥

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव। पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि॥7॥ –ऋ. मं. 5। सू. 51।11-15॥

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः। ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥8॥ –ऋ. मं. 7। सू. 35।65॥

येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः। उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये॥9॥

नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद् देवासो अमृतत्वमानशुः। ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये॥10॥

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम्। ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये॥11॥

को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यति ष्ठन। को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये॥12॥

स्वस्तिवाचन - भद्राः सूक्तं

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः । देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे-दिवे |1 देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो नि वर्तताम् । देवानां सख्यमुप सेदिमा वयं देवा न आयुः प्र तिरन्तु जीवसे ।२

तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम् । अर्यमणं वरुणं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ।३

तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत् पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्|4

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।५

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पुषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।६

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः । अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह ।।७

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम

देवहितं यदायुः ।।८

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम । पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ।।९ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः । विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम ।।१० (ऋक.१।८९।१-१०) द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिरेव देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।११

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ।।१२ (शु॰यजु॰)

विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्। सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये॥"

"भगवान गणेश, गुरु, सूर्य, ब्रह्मा, विष्णु, महेश और सरस्वती को प्रणाम करके, सभी कार्यों की सिद्धि के लिए।"

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शन्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। ईशानः सर्वविध्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रम्हाधि पतिर्ब्रम्हणोध पतिर्ब्रम्हा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम।।

श्री मन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचिपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातापितृ चरण कमलभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ सद्गुरु चरण कमलेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूमकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वदशैतानि नामानि यः पठे च्छ्रिणुयादपी।।
विद्यारंभे विवाहे पूजारम्भे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्विघ्नोपशान्तये।।
अभिप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये ! शिवे ! सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बिके ! गौरी नारायणि नमोस्तुते।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्। येषां हृदयस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव, ताराबलं चन्द्रबलं तदेव । विद्याबलं दैवबलं तदेव, लक्ष्मीपते तेन्घ्रियुगं स्मरामि।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूति र्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।
अनन्यास्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।
स्मृतेःसकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते। पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरम्।।
सर्वेष्वारंभ कार्येषु त्रयःस्त्री भुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः।।
विश्वेशम् माधवं दुन्धिं दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे कशी गुहां गंगा भवानीं मणिकर्णिकाम्।।
ॐ तीक्ष्ण दन्ष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम । भैरवाय नमस्तुभ्य मनुज्ञां दातुमर्हसि ।।

वक्रतुण्ड् महाकाय सूर्य कोटि समप्रभ। निर्विघ्नं कुरु में देव सर्वकार्येषु सर्वदा।। ॐ श्री गणेशाम्बिका भ्यां नमः ।

संकल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः । श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्यैतस्य ब्रह्मणोह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचणे भूर्लोके भारतवर्षे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्त्तस्य .... नाम्निनगरे (ग्रामे वा)....... क्षेत्रे .... प्रदेशे .... श्रीगड्गा / यमुना तीरे / मध्ये , श्री वीरविक्रमादित्य.......संवत्सरे तथा ......शाके शलवाहने संवत्सरे, ... अयने सूर्यो ,......... ऋतौ, महांमागल्यप्रद मासोतमे मासे शुभे ....मासे, ... पक्षे, ... तिथौ,......... वासरे,......... नक्षत्रे, ... योगे,......... करणे, ... राशिस्थिते चन्द्रे,......... राशिस्थिते श्रीसूर्ये, एवं .... राशिस्थिते देवगुरौ बृहस्पति एवं ग्रहगुणविशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ .... गोत्रोत्पन्नः .... शर्मणः (वर्मणः, गुप्तः वा) सपरिवारस्य ममात्मनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्त पुण्यफलावाप्त्यर्थं मम ऐश्वर्याभिवृद्धयर्थं अप्राप्तलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं प्राप्त लक्ष्म्याश्चिरकाल संरक्षणार्थं सकलमनः इप्सितकामनासंसिद्ध्यर्थं, समस्तभय व्याधि जरा पीडा मृत्यु परिहारद्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याद्यभिवृद्ध्यर्थं तथा पुत्रपौत्रादि सन्ततेरविच्छिन्न वृद्ध्यर्थं आदित्यादिन्नवग्रहानूकूलतासिद्ध्यर्थं इन्द्रादि-दशदिक्पाल प्रसन्नतासिद्ध्यर्थं आधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिक त्रिविधतापोपशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्षफलावाप्त्यर्थं श्री .... प्रीतये पूजनं (अन्य कर्म) करिष्ये। तदड्गत्वेन गणपत्यादि देवानां पूजनञ्च करिष्ये।

"ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरूषस्य, विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य (रात में : अस्यां रात्र्यां कहे) ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेत वाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे आर्यावर्तैक देशान्तर्गते .... १ संवतसरे महांमागल्यप्रद मासोतमे मासे .... २ मासे .... ३ पक्षे .... ४ तिथौ ....५ वासरे .... ६ गोत्रोत्पन्नः .... ७ शर्माऽहं (वर्माऽहं/गुप्तोऽहं) ममात्मनः श्रुति स्मृति पुराणतन्त्रोक्त फलप्राप्तये ग्रहदोष, दैहिक, दैविक, भौतिक - त्रिविध ताप निवार्णार्थं सर्वारिष्ट निरसन पूर्वक सर्वपाप क्षयार्थं मनसेप्सित फल प्राप्ति पूर्वक, दीर्घायु शरीरारोग्य कामनया धन-धान्य-बल-पुष्टि-कीर्ति-यश लाभार्थं, सकल आधि, व्याधि, दोष परिहार्थं सकल मनोरथ सिध्यर्थं श्री ....प्रीतये पूजन तथा हवन करिष्ये।" तदड्गत्वेन गणपत्यादि देवानां पूजनञ्च करिष्ये।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः । श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्यैतस्य ब्रह्मणोह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचणे भूर्लोके भारतवर्षे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्त्तस्य .... नाम्निनगरे (ग्रामे वा)....... क्षेत्रे .... प्रदेशे .... श्रीगड्गा / यमुना तीरे / मध्ये , श्री वीरविक्रमादित्य.......संवत्सरे तथा ......शाके शलवाहने संवत्सरे, ... अयने सूर्यो ,......... ऋतौ, महांमागल्यप्रद मासोतमे मासे शुभे ....मासे, ... पक्षे, ... तिथौ,......... वासरे,......... नक्षत्रे, ... योगे,......... करणे, ... राशिस्थिते चन्द्रे,......... राशिस्थिते श्रीसूर्ये, एवं .... राशिस्थिते देवगुरौ बृहस्पति एवं ग्रहगुणविशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ .... गोत्रोत्पन्नः .... शर्मणः (वर्मणः, गुप्तः वा) सपरिवारस्य ममात्मनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्त पुण्यफलावाप्त्यर्थं अप्राप्तलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं प्राप्त लक्ष्म्याश्चिरकाल संरक्षणार्थं सकलमनः इप्सितकामनासंसिद्ध्यर्थं, कायिक वाचिक मानसिक सकल दुरतापिसामनार्थं मम ऐश्वर्याभिवृद्धयर्थं सत्प्रवर्ती व्रद्धार्थनाय , दुश्प्रवर्ति उन्मुलाय , आत्मा कल्याणाय उज्वल भविष्य कामना पूर्तये अमुक कामना सिद्धर्थम धनधान्य समृद्धतम पुत्रपुत्रादि प्राप्तयर्थम श्री .... प्रीतये पूजनं (अन्य कर्म) करिष्ये। तदड्गत्वेन गणपत्यादि देवानां पूजनञ्च करिष्ये।

देव पूजन

आगच्छ भगवन्देव स्थाने चात्र स्थिरो भव। यावत्पूजां करिष्यामि तावत्वं सन्निधौ भव |

गणेश ध्यान - ॐ गजाननं भूत गणादि सेवितं, कपित्थ जम्बू फल चारू भक्षणम्। उमासुतं शोक विनाशकारकम्, नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्॥

गणेश आवाहन - ॐ गणानां त्वा गणपति (गूं) हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति (गूं) हवामहे निधिनां त्वा निधिपति (गूं) हवामहे वसो मम आहमजानि गर्भधमा त्वम जासि गर्भधम्।

गौरी ध्यान - नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥

गौरी आवाहन - ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन। ससत्स्यकश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनी॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञँ गुं समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयंतामो३म्प्रतिष्ठ।।

ॐ .... आवाहनार्थे अक्षतान समर्पयामि, प्रतिष्ठापयामि | .....सुप्रतिष्ठते वरदे भवेताम् |

१- *आवाहनम् -* **ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः, सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमि ꣳ सर्वतस्पृत्वा, अत्यतिष्ठदद्शांगुलम्॥**

२- *आसनम्-* **ॐ पुरुषऽ एवेद ꣳ सर्वं, यदभूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो, यदन्नेनातिरोहति॥**

३- *पाद्यम् -* **ॐ एतावानस्य महिमातो, ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि, त्रिपादस्यामृतं दिवि॥**

४- *अर्घ्यम्-* **ॐ त्रिपादूर्ध्व ऽ उदैत्पुरुषः, पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो विष्वङ्व्यक्रामत्, साशनानशने अभि॥**

५- *आचमनम्-* **ॐ ततो विराडजायत, विराजो अधिपूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत, पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥**

6 - *स्नान-* **तस्मादयज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् । पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ।।6।।**

।। गणपति अथर्वशीर्ष पाठ ।। ||श्री सूक्त || से लक्ष्मी - गणेश का अभिषेक करें pool sunghker ker bayen rakhein

श्री गणपति अथर्वशीर्ष मूलपाठ

शांति पाठ ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा। भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवां सस्तनूभिः। व्यशेम देवहितं यदायुः।।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः॥ स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ॐ शांतिः॥ शांतिः॥ शांतिः॥

ॐ नमस्ते गणपतये।। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्ताऽसि। त्वमेव केवलं धर्ताऽसि। त्वमेव केवलं हर्ताऽसि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्माऽसि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि।।

अव त्वं माम् । अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अव चोत्तरात्तात् । अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समंतात् ॥

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानंदमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानंदा द्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि ॥

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते॥ सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति॥ सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति॥ सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति॥ त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः॥ त्वं चत्वारि वाक्पदानि ॥

त्वं गुणत्रयातीतः त्वम कालत्रयातीतः॥ त्वं देहत्रयातीतः ॥ त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्॥ त्वं शक्तित्रयात्मकः॥ त्वां योगिनो ध्यायंति नित्यं॥ त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वं इन्द्रस्त्वं अग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चंद्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवःस्वरोम्॥

गणादिं पूर्वमुच्चार्य गणादिं तदनंतरम्॥ अनुस्वारः परतरः ॥ अर्धेन्दुलसितम् ॥ तारेण रुध्दम्॥ एतत्तव मनुस्वरूपम् ॥ गकारः पूर्वरूपम्॥ अकारो मध्यमरूपम् ॥

अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्॥ बिन्दुरुत्तररूपम् ॥ नादः संधानम्॥ संहितासंधिः ॥ सैषा गणेशविद्या॥ गणकऋषिः ॥ निचृद्गायत्रीछंदः॥ श्री महागणपतिर्देवता ॥ ॐ गं गणपतये नमः॥

एकदंताय विद्महे । वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥ एकदंतं चतुर्हस्तं पाशमंकुशधारिणम्। अभयं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्। रक्तं लंबोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगंधानुलिप्तांगं रक्तपुष्पैः सुपुजितम्। भक्तानुकंपिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्टयादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः॥ नमो व्रातपतये। नमो गणपतये। नमः प्रमथपतये। नमस्तेऽस्तु लंबोदरायैकदंताय। विघ्ननाशिने शिवसुताय। श्री वरदमूर्तये नमो नमः॥

एतदथर्वशिरो योऽधीते स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्नबाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते । स पञ्चमहा पात कोप पात कात् प्रमुच्यते ॥ सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायंप्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति ॥

इदम् अथर्वशीर्षमऽशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति। सहस्रावर्तनाध्यं यं काममधीते। तं तमनेन साधयेत्॥

अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वण वाक्यं। ब्रह्माद्यावरणं विद्यात्। न बिभेति कदाचनेति ॥

यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति। स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति। स सर्वं लभते स सर्वं लभते ॥

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासंनिधौ वा जप्त्वा सिद्धमंत्रो भवति। महाविघ्नात्प्रमुच्यते। महादोषात्प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति स सर्वविद्भवति। य एवं वेद इत्युपनिषत् ॥ ॐ भद्रङ्कर्णेभिरिति शांतिः॥

ॐ सहनाववतु । सहनौभुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥ ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा। भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः॥ स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिः। व्यशेम देवहितं यदायुः॥

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः॥ स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ॐ शांतिः॥ शांतिः॥ शांतिः॥ ॥ इति श्री गणपति अथर्वशीर्ष स्तोत्रम् ॥

शुद्धोदकस्नान-

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्तारौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोकस्नानं समर्पयामि।

दुग्धस्नान- ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः पयस्वतीः। प्रदिशः सन्तु मह्यम्।। कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।

दधिस्नान- ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखाकरत्प्रण आयू ँ षि तारिषत्।। पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्। दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

घृत स्नान- ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।। नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

मधुस्नान- ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः।
मधुद्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँऽ अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।
पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु। तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शर्करास्नान- ॐ अपा ँ रसमुद्वयस Ü सूर्ये सन्त ँ समाहितम्। अपा Ü रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्। मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

पञ्चामृतस्नान- ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सश्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशेऽभवत्सरित्।। पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु। शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धोदकस्नान- ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्तारौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।।

स्नानम्- ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः, सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यान्, आरण्या ग्राम्याश्च ये।

वस्त्र- ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो३ मनसा देवयन्तः।। शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालङ्करणं वस्त्रामतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
वस्त्रम्- ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽ, ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दा œ सि जज्ञिरे तस्माद्, यजुस्तस्मादजायत॥

उपवस्त्र- ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूप ँ सं व्ययस्व विभावसो।। यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चिन्न सिध्यति। उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मापकारकम्।।

यज्ञोपवीत- ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।। यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि। नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर !।

चन्दन- ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।। श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

हरिद्रा चूर्ण- हरिद्रारन्जिते देव सुखसौभाग्य दायिनि | तस्मात् त्वां पूजया म्यत्र सुखं शान्ति प्रयच्छ मे ॥
कुंकुम- कुङ्कुमं कामदं दिव्यं कामिनी काम सम्भवम् | कुकुमेनार्चिता देव कुङ्कुमं प्रतिग्र ह्यताम् ॥

अक्षत- ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।।

सौभाग्य सूत्रं - सौभाग्य सूत्रं वरदे सुवर्णमणि संयुतम् | कण्ठे बद्धनामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा ॥
आभूषण- हार कङ्कन केयूर मेखला कुण्डलाभिः | रत्नाढयं हीरकोपेतं भूषणं प्रतिग्रह्यताम् ॥
आभूषण-ॐ वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम्। पुष्पराग समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्।। आभूषणं सर्मपयामि।
सौभाग्य पेटिका- हरिद्रां कुङ्कुमं चैव सिन्दुरादिस मन्विताम् | सौभाग्य पेतिकामेतां ग्रहान परमेश्वरि |

पुष्पमाला- ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।। माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

तुलसी पत्र- तुलसि श्रीसखि शुभे पापहारिणि पुण्यदे । नमस्ते नारदनुते नारायणमनःप्रिये ॥

दूर्वा- ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनुसहस्रेण शतेन च।।

बिल्वपत्र- त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम् । त्रिजन्मपाप-संहारमेकबिल्वं शिवार्पणम्।। नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्म्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चा हनन्याय च नमो घृष्णवे॥

शमी पत्र- अमंगलानां च शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च। दुःस्वप्रनाशिनीं धन्यां प्रपद्येहं शमीं शुभाम्।।
भांग मंत्र- नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च|
विजया-ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो वाणवाँऽ2 उत। अनेशन्नस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषं गधिः।। विजयां सर्मपयामि।
धतूरा मंत्र- ॐ साम्ब शिवाय नमः धतूरा फल समर्पयामि |
भस्म- ओ3म् त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद् देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्॥ यजुर्वेद 3.62॥

सिन्दूर- ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

अबीर गुलाल आदि नाना परिमल द्रव्य- ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ँ सं परि पातु विश्वतः।। अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्। नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर!।।

सुगन्धिद्रव्य- ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ँ सं परि पातु विश्वतः।। दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्। गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै परिगृह्यताम्।।

धूप- ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्वतं योऽस्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं वयं धूर्व्वामः। देवानामसि वह्नितम ँ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।। or वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

दीप- ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च स्वाहा।।ज्योर्ति सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।। भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने। त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।

भोजन मंत्र -
ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना।।
ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष शीष्णो द्योः समवर्तत । पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन् ।।
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च। आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

करोद्वर्तन- ॐ अ शुना ते अशुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।
चन्दनं मलयोद्भुतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्। करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर।।

ऋतुफल - ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः।।
इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ताम्बूल - ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।
पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

(इलायची, लौंग-सुपारी के साथ ताम्बूल अर्पित करे।)

दक्षिणा- ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

आरती- ॐ इद ँ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ँ सर्वगण ँ स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।।ॐ आ रात्रि पार्थिव ँ रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदा ँ सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः।।कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्। आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

देवा लम्बोदर गिरिजा नन्दना, देवा सिद्ध करो सब कामना, ‖ देवा लम्बोदर गिरजा नन्दना,

हे मनभावन , अतिसुख पावन, गौरी के तुम नन्दना ‖ देवा लम्बोदर गिरजा नन्दना,

हे सुख करता, हे दुःख हरता, विघ्न विनाशन गजानन ‖ देवा लम्बोदर गिरजा नन्दना

रुणंझुन-रुणंझुन पैंजनी बाजत चलत मस्त मुचुकुन्दना ‖ देवा लम्बोदर गिरजा नन्दना

गौरी के तुम पुत्र गजानन , शिवजी के तुम नन्दना ‖ देवा लम्बोदर गिरजा नन्दना

जो प्रभु तुमरी आरती गावे, मिटै विघ्न कटै फन्दना ‖ देवा लम्बोदर गिरजा नन्दना

(कर्पूर की आरती करें, आरती के बाद जल गिरा दें। शंख में जल भगवान पर घुमाकर अपने तथा भक्तो पर डालें)

मन्त्र पुष्पांजलि- ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

*प्रदक्षिणा -*ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषा ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि। यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे।। (प्रदक्षिणा करे।)

विशेष अर्घ्य - रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षकं। भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥ द्वैमातुर कृपासिन्धो! षाण्मातुराग्रज प्रभो। वरद त्वं वर देहि वांछितं वांछितार्थद।। अनेन सफलार्घ्येण फलदांऽस्तु सदामम।।

प्रार्थना।।- विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धितांय।नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।अनया पूजया सिद्धि-बुद्धि-सहितः श्रीमहागणपतिः साङ्गः परिवारः प्रीयताम्।। श्रीविघ्नराज प्रसादात्कर्तव्यामुक कर्मनिर्विघ्न समाप्तिश्चास्तु।

कलश पूजनम्:

इसके बाद कलश रखने वाले स्थान पर सप्तधान बिछाते हुए ' कलश में सप्तधान्य छोड़ दें कलश पूजनम् - स्थापना मंत्र व पूजन विधि सहित / सर्व-प्रथम कलश में रोली से स्वस्तिक चिह्न (सतिया) बनाकर एवं उसके गले मे मौली लपेटकर पूजक को अपनी वायी और अवीर-गुलाल से अष्टदल -कमल बनाकर उस पर सप्तधान्य या चावल अथवा गेहूं रखकर उसके ऊपर कलश को स्थापित कर निम्न विधान से पूजन करना चाहिए।

भूमि का स्पर्शः - ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री । पृथिवीं यच्छ पृथिवीं ठ ह पृथिवीं माहि ठ सीः ॥१॥ ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽइमँ य्यज्ञम्मि मिक्षताम् । पिपृतान्नो भरीमभिः । विश्वाधाराऽसि धरणी सेषनागोपरि स्थिता । उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ।। ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः। *(भूमि का स्पर्श।)*

धान्यप्रक्षेप :-- ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा । यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त गुंग राजन्न्रा रयामसि ।
(पृथ्वी पर सप्तधान्य रखे।)
कलशं स्थापयेत् :-- ॐ आजिघ्र कलशं महय्या त्वा विशन्त्विन्दवः । पुनरूर्ज्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वा रुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्रयिः । *(सप्तधान्य पर कलश का स्थापन कर।)*

कलशे जलपूरणम् :-- ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि वरुणस्य ऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद। *(कलश में जल डाल दें।*
गन्धप्रक्षेप :-- ॐ त्वांगन्धर्वाऽअखनं स्वामिन्द्रस्त्वां वृहस्पतिः । त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मा दमुच्यत
(कलश में चन्दन या रोली छोड़ें।

धान्यप्रक्षेप :-- ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणा यत्त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्त्वा । दीर्घामनु प्रसिति मायुषेधान्देवोवः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृब्भ्णात्त्व च्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्त्वा महीनां पयोऽसि । *(कलश में सप्तधान्य छोड़ दें।)*

सर्वौषधीप्रक्षेपः :-- ॐ या ऽओषधीः पूर्वा जातादेवेभ्य स्त्रियुगम्पुरा । मनैनुबभ्रूणामह गुंग शतंधामानिसप्त च ।।
(कलश में सर्वोपधि डालें।)

दूर्वाप्रक्षेपः :-- ॐ काण्डात्काण्डा त्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि । एवानो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च । *(कलश में दूर्वा छोड़ें।)*

पञ्चपल्लवप्रक्षेपः :-- ॐ अश्वत्थेवो निषदनम्पर्णेवोव्व सतिष्कृता । गोभाजऽइत्किला सथयत्सनवथ पूरुषम् ।।
(कलश में पञ्चपल्लव अथवा आम का पत्ता रखें।)

सप्तमृदाप्रक्षेपः :-- ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः। *(कलश में सप्तमृत्तिका या मिट्टी छोड़ें।)*

फलप्रक्षेप :-- ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः । वृहस्पति प्रसूतास्ता नोमुञ्चन्त्व गुंग हसः ॥
(कलश में सुपारी छोड़ें।)

पञ्चरत्नप्रक्षेप :-- ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्त्य क्रमीत् । दध द्रत्ना निदाशुषे । *(कलश में पञ्चरत्न डालें।)*

हिरण्यप्रक्षेप :-- ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेक ऽआसीत् । सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा विधेम ।। हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्त पुण्यफलदं कलशे प्रक्षि पाम्यहम् ॥
(कलश में दक्षिणा छोड़ें।)

रक्तसूत्रेण वस्त्रेण वा कलशं वेष्टयेत् :- ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्मव्वरूथ मासदत्तस्वः । व्वासोऽ अग्नेविश्वरूप गुंग संव्ययस्व विभावसो । *(कलश में लालवस्त्र अथवा मौली लपेट दें।)*

कलशस्योपरि पूर्णपात्रं न्यसेत् :-- ॐ पूर्णादवि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्क्रीणा वहाऽइषमूर्ज गुंग शतक्क्रतो ।। *(कलश पर पूर्णपात्र रखें।)*

पूर्णपात्रोपरि श्रीफलं नारिकेलं वा न्यसेत् :-- ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्न् निषाणां मुन्मइषाण सर्वलोकं म इषाण । *(पूर्णपात्र पर नारियल रखें।)*

वरुणमावाहयेत् :-- ॐ तत्त्वा यामि व्रह्मणा वन्दमान स्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश गुंग स मा नऽ आयुः प्रमोषीः ।। अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्ति कमावाह यामि स्थापयामि । ॐ अपांपतये वरुणाय नमः । इति पञ्चोपचारैर्वरुणं सम्पूज्य ।

कलशस्थितदेवानां नदीनाम् तीर्थनाम् च आवाहनम् :--

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः । मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा । ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो थर्वणः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु॥ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥

अक्षतान् गृहीत्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् :-- ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं य्यज्ञ गुंग समिमं दधातु । विश्वेदेवा सऽइहमादयन्तामो ॐ प्रतिष्ठ ।। कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु । ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । विष्णुवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । *(कलश पर चावल छोड़कर स्पर्श करें।)*

कलशस्य चतुर्दिक्षु चतुर्वेदान्पूजयेत् :-- पूर्वे -- ऋग्वेदाय नमः । दक्षिणे -- यजुर्वेदाय नमः । पश्चिमे -- सामवेदाय नमः । उत्तरे -- अथर्ववेदाय नमः । कलशमध्ये अपाम्पतये वरुणाय नमः । *(कलश के चारों तरफ तथा मध्य में चावल छोड़ें।)*

षोडशोपचारैः पूजनम् कुर्यात् : ---आसनार्थेऽक्षतान समर्पयामि । पादयोः पाद्यं समर्पयामि । हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि । आचमनं समर्पयामि । पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । स्नानाङ्गाचमनं समर्पयामि । वस्त्रम् समर्पयामि | यज्ञोपवीतं समर्पयामि । उपवस्त्रं समर्पयामि । गन्धं समर्पयामि । अक्षतान समर्पयामि | पुष्पमालां समर्पयामि । नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि । धूपमाध्रापयामि । दीपं दर्शयामि । हस्तप्रक्षालनम् । नैवेद्यं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि । मध्ये पानीयम् उत्तरापोशनं च समर्पयामि । ताम्बूलं समर्पयामि । पूगीफलं समर्पयामि । कृतायाः पूजायाः पाड्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि । मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि । अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम ।

कलश-प्रार्थना :- नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय । सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ।।५।।

Navgrah Puja

*१- सूर्य (मध्यमें गोलाकार, लाल) सूर्यका आवाहन (लाल अक्षत-पुष्प लेकर) – **ईशान कोण में नवग्रह कलश रखकर सूर्य आदि तथा अधि - प्रत्यधि देव पूजा***

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतंमर्त्यंच । हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भूवनानि पश्यन् ॥
ॐ जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाधुतिम् । तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूभुर्वः स्वः कलिंग देशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्णाभ सूर्य । इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ सूर्याय नमः, श्री सूर्यमावाहयामि स्थापयामि ॥

२- चन्द्र (अग्निकोणमें, अर्धचन्द्र, श्वेत) चन्द्रका आवाहन (श्वेत अक्षत-पुष्पसे) –

ॐ इमं देवा असपत्न सुवध्वं महते क्षत्राय | महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ।|
इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी | राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना राजा ।|

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् । ज्योत्सनापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम । इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोममवाहयामि, स्थापयामि ।

३- मंगल (दक्षिणमें, त्रिकोण, लाल) मङ्गलका आवाहन (लाल फूल और अक्षत लेकर) –

ॐ अग्निमूर्धा दिवःककुत्पतिः अयम् । अपा रेता असि जिन्वति ॥
धरणीगर्भ संभूतं विद्युत्कांति समप्रभम् । कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम । इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ भौमाय नमः, भौममावाहयामि, स्थापयामि ।

४- बुध (ईशानकोणमें, हरा, धनुष) बुधका आवाहन (पीले, हरे अक्षत-पुष्प लेकर) –

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स सृजेथामयं च । अमिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥

प्रियंगुकलिका भासं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र पीतवर्ण भो बुध । इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ बुधाय नमः, बुधमवाहयामि, स्थापयामि ।

५- बृहस्पति (उत्तरमें पीला, अष्टदल) बृहस्पतिका आवाहन (पीले अक्षत-पुष्पसे) –

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अहार्दधुमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यदीदयच्छवसऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥
उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा ॥

देवानां च मुनीनां च गुरुं कांचनसन्निभम् । वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्व सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो गुरो । इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि, स्थापयामि ।

६- शुक्र (पूर्वमें श्वेत, चतुष्कोण) शुक्रका आवाहन (श्वेत अक्षत-पुष्पसे) –

ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यबक्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥

ॐ हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् । सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं आवाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्रः । इहागच्छ, इहतिष्ठ ॐ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि, स्थापयामि ।

७- शनि (पश्चिममें, काला मनुष्य) शनिका आवाहन (काले अक्षत-पुष्पसे) –

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्त्रवन्तु नः ॥
नीलांबुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् । छाया मार्तण्ड सम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर । इहगच्छ, इह तिष्ठ ॐ शनैश्चराय नमः, शनैश्चरमावाहयामि, स्थापयामि ।

८ – राहु (नैऋत्यकोणमें, काला मकर) राहुका आवाहन (काले अक्षत-पुष्पसे)-

ॐ काया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः । सखा कया सचिष्ठया वृता ॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् । सिंहिकागर्भ संभूतं राहुं आवाहयाम्यहम् ।
ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनपुरोद्भव पैठीनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो । इहागच्छ, इह तिथ्ठ ॐ राहवे नमः, राहुमावाहयामि, स्थापयामि ।

९ – केतु (वायव्यकोणमें, कृष्ण खड्ग) केतुका आवाहन (धूमिल अक्षत-पुष्प लेकर) –

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् । रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुं आवाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्र धूम्रवर्ण भो केतो । इहागच्छ, इहतिष्ठ, ॐ केतवे नमः, केतुमावाहयामि, स्थापयामि ।

नवग्रह-मण्डलकी प्रतिष्ठा – आवाहन और स्थापनके बाद हाथमें अक्षत लेकर

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामांज्जस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुंग समिमं दधातु । विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ प्रतिष्ठ । अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥ *इस मन्त्रसे नवग्रहमण्डलमें अक्षत छोड़े ।* अस्मिन् नवग्रहमण्डले आवाहिताः सूर्यादिनवग्रहा देवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ।

नवग्रह- पूजन नवग्रहोंका आवाहन कर इनकी पूजा करे । **ॐ आवाहितसूर्यादिनवग्रहेभ्यो देवेभ्यो नमः ।**

इस नाम मन्त्रसे पूजन करनेके बाद हाथ जोड़कर निम्नलिखित प्रार्थना करे- **ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च । गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥**

अधिदेवता प्रत्यधि देवता - नवग्रह मण्डल के परिधि में ही अधिदेवता व प्रत्यधि देवता का स्थापन किया जाता है। अधिदेवताओं की स्थापना हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर निम्न मन्त्रों को पढ़ते हुए चित्रानुसार नियत स्थानों पर अधिदेवताओं के आवाहन-स्थापन पूर्वक अक्षत-पुष्पों को छोड़ता जाय ।)

अधिदेवता प्रत्यधि देवता

1 ईश्वर (सूर्य के दायें भाग में) आवाहन-स्थापन-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मूक्षीय मामृतात् ॥ एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूलकपालखट्वाङ्गधरेण सार्धम् । लोकेश यक्षेश्वर यज्ञसिद्धयै गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वराय नमः ईश्वर मावाहयामि स्थापयामि ।

२-उमा (चन्द्रमा के दायें भाग में) आवाहन स्थापन-

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण । हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् । लम्बोदरस्य जननीमुमामावाहयाम्याहम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः उमायै नमः उमामावाहयामि स्थापयामि।

३- स्कन्द (मङ्गल के दायें भाग में) आवाहन-स्थापन-

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन् ॥ रुद्रतेजःसमुत्पन्नं देवसेनाग्रगं विभुम् । षण्मुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि ।

४- विष्णु (बुध के दायें भाग में) आवाहन - स्थापन- ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम् । चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि ।

५- ब्रह्मा (बृहस्पति के दायें भाग में) आवाहन- स्थापन-

ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥
कृष्णाजिनाम्बरधरं पद्मसंस्थं चतुर्मुखम् । वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ।

६- इन्द्र (शुक्र के दायें भाग में) आवाहन -स्थापन-

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् । जहि शत्रूँरप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः । देवराजं गजारूढं शुनासीरं शतक्रतुम् । वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ।

७-यम (शनि के दायें भाग में) आवाहन- स्थापन-

ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ धर्मराजं महावीरं दक्षिणादिक्पतिं प्रभुम् । रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि ।

८-काल (राहु के दायें भाग में) आवाहन स्थापन-

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि । समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिने दिने । कलाकाष्ठादिरूपेण कालमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कालाय नमः कालमावाहयामि स्थापयामि ।

९-चित्रगुप्त (केतु के दायें भाग में) आवाहन-स्थापन-

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय । धर्मराजसभासंस्थं कृताकृतविवेकिनम् । आवाहये चित्रगुप्तं लेखनीपत्रहस्तकम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि ।

प्रत्यधि देवताओं का स्थापन

बायें हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से नवग्रहों के बायें भाग में मन्त्र को उच्चारण करते हुए नियत स्थानों पर अक्षत छोड़ते हुए एक-एक प्रत्यधिदेवता का आवाहन-स्थापन करे-

१- अग्नि (सूर्य के बायें भाग में) आवाहन-स्थापन - ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे । देवाँ २ आ सादयादिह ॥
रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम् । वरदाभयदं देवमग्निमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि ।

२- अप (जल) (चन्द्रमा के बायें भाग में) आवाहन - स्थापन- ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥ आदिदेवसमुद्भूतजगच्छुद्धिकराः शुभाः । ओषध्याप्यायनकरा अप आवाहयाम्यहम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः अप आवाहयामि स्थापयामि ।

३- पृथ्वी (मंगल के बायें भाग में) आवाहन - स्थापन - ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥ शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम् । सर्वशस्याश्रयां देवीं धरामावाहयाम्यहम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि ।

४- विष्णु (बुध के बाये भाग में) आवाहन - स्थापन- ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा ॥
शङ्खचक्रगदापद्महस्तं गरुडवाहनम् । किरीटकुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि ।

५- इन्द्र (बृहस्पति के बायें भाग में) आवाहन स्थापन- ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर

एतु सोमः । देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥ ऐरावतगजारूढं सहस्त्राक्षं शचीपतिम् । वज्रहस्तं सुराधीशमिन्द्रमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ।

६- *इन्द्राणी (शुक्र के बायें भाग में) आवाहन स्थापन-* ॐ अदित्यै रास्नाऽसीन्द्राण्या उष्णीषः । पूषाऽसि घर्माय दीष्व ॥ प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम् । नानालङ्कारसंयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम् । । ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राण्यै नमः इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि ।

७- *प्रजापति (शनिके बायें भागमें) आवाहन - स्थापन-* ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव ।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय ँ स्याम पतयो रयीणाम् ॥ आवाहयाम्यहं देवदेवेशं च प्रजापतिम् । अनेकव्रतकर्तारं सर्वेषां च पितामहम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि ।

८- *सर्प (राहु के बायें भाग में) आवाहन- स्थापन-* ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ अनन्ताद्यान् महाकायान् नानामणिविराजितान् । आवाहयाम्यहं सर्पान् फणासप्तकमण्डितान् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः सर्पानामावाहयामि स्थापयामि ।

९- *ब्रह्मा (केतु के बायें भाग में) आवाहन- स्थापन-* ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः । स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणपूजितम् । आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ।

===

पञ्चलोकपाल आवाहन-पूजनः- *पञ्चलोकपाल पूजा - नवग्रह मण्डल में ही क्रमशः केतु के पास गणेशजी और दुर्गाजी का तथा बृहस्पति के पास वायु आकाश और अश्विनीकुमारों का आवाहन और स्थापन कर पूजन करें ।*

गणेशजी - ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिँ हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् ॥ लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् । आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते ! इहागच्छ, इहतिष्ठ गणपतये नमः , गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥

दुर्गाजी - ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥
पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे । नाना जाती कुलेशानीं दुर्गमवाहयाम्याहम् ॥
ॐ भूभुर्वः स्वः दुर्गे ! इहागच्छ इहतिष्ठ दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि ॥

वायु - ॐआ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् । वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणम् । सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वायो ! इहागच्छ इहतिष्ठ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि ॥

आकाश - ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा । दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥ अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यन्तरस्थितम् । आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश ! इहागच्छ इहतिष्ठ आकाशाय नमः आकाशमावाहयामि स्थापयामि ॥

अश्विनीकुमारों - ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सुनृतावती । तया यज्ञं मिमिक्षतम् । उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा ॥ देवतानां च भैषज्ये सुकुमारो भिषग्वरौ । आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्द्धनौ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनौ ! इहागच्छ इहतिष्ठ अश्विभ्यां नमः अश्विनावाहयामि स्थापयामि ॥

ॐ मनो० *इस मन्त्र से अक्षत छोड़ते हुए पञ्चलोकपाल की प्रतिष्ठा करे। इसके बाद*
पञ्चलोकपालेभ्यो नमः *इस नाम-मन्त्र से यथालब्धोपचार पूजन कर*
अनया पूजया पञ्चलोकपालाः प्रीयन्ताम् न मम | *ऐसा उच्चारण कर अक्षत छोड़ दे ।*

दशदिक्पाल आवाहन-पूजनः- *कहीं-कहीं आचार्यगण अधिक अलंकारिक स्वरुप देते हुए, वड़े यज्ञों, गृहप्रवेशादि कर्म में यज्ञ-मंडप/भवन के विलकुल बाहर पूर्वादि क्रम से दसों दिशाओं में स्थापित कर पूजित करते हैं । नवग्रह मण्डल में वेदी के अंदर पञ्चलोकपाल वासतोष्पति व क्षेत्रपाल का आवाहन-स्थापन कर पूजन किया जाता है । दसों दिशाओं में दिशाओं के अधिपति देवता जिन्हे कि दश दिक्पाल कहा जाता है अक्षत छोड़ते हुए आवाहन एवं स्थापन व पूजन किया जाता है-*

(पूर्व में) इन्द्र का आवाहन और स्थापन- ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥
इन्द्रं सुरपतिश्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम् । आवाहये यज्ञसिद्ध्यै शतयज्ञाधिपं प्रभुम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र ! इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि ।

(आग्नेयकोण में) अग्नि का आवाहन और स्थापन - ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे । देवॉ२ आ सादयादिह ॥
त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्धानं द्विनासिकम् । षण्नेत्रं च चतुःश्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने ! इहागच्छ इह तिष्ठ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि ।

(दक्षिण में) यम का आवाहन और स्थापन - ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥
महामहिषमारूढं दण्डहस्ते महाबलम् । यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः यम ! इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि ।

(नैर्ऋत्यकोण में) निर्ऋति का आवाहन और स्थापन- ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम् । आवाहये यज्ञसिद्ध्यै नरारूढं वरप्रदम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते ! इहागच्छ इह तिष्ठ निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि, स्थापयामि ।

(पश्चिम में) वरुण का आवाहन और स्थापन- ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ स मा न आयुः प्रमोषीः ॥

शुद्धस्फटिकसंकाशं जलेशं यादसां पतिम् । आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण ! इहागच्छ इह तिष्ठ वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि ।

(वायव्यकोण में) वायु का आवाहन और स्थापन- ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ
सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् ।
वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम् । यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः वायो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि ।

(उत्तर में) कुबेर का आवाहन और स्थापन-
ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय । इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति ॥
उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्ण । एष ते योनिस्तेजसे त्वा वीर्याय त्वा बलाय त्वा ॥
आवहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम् । महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतिं विभुम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः कुबेर ! इहागच्छ इह तिष्ठ कुबेराय नमः कुबेरमावाहयामि स्थापयामि ।

(ईशानकोण में) ईशान का आवाहन और स्थापन -
ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥
सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम् । आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः ईशान ! इहागच्छ इह तिष्ठ ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

(ईशान-पूर्व के मध्य में) ब्रह्मा का आवाहन और स्थापन-
ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः । स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः ॥
पद्मयोनिं चतुर्मूर्तिं वेदगर्भं पितामहम् । आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञसंसिद्धिहेतवे ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् ! इहागच्छ , इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः , ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि ।

(नैर्ऋत्य-पश्चिम के मध्य में) अनन्त का आवाहन और स्थापन-
ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः । अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम् । जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्त ! इहागच्छ इह तिष्ठ अनन्ताय नमः अनन्तमावाहयामि स्थापयामि ।

प्रतिष्ठा - *इस प्रकार आवाहन स्थापन कर* ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञँ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयंतामो३म्प्रतिष्ठ।। *हे मन की गति के समान यज्ञ को ग्रहण करने वाले, हे बृहस्पति! इस यज्ञ को विस्तारित करें और इसे निर्विघ्न रूप से स्थापित करें। हे विश्वेदेवा आप सब यहाँ प्रसन्न हों, इस मन्त्र से अक्षत छोड़ते हुए दश दिक्पाल का प्रतिष्ठा करे उसके बाद निम्न मन्त्र से यथालब्धोपचार पूजन करे-*
ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो नमः । पुन: इसके बाद **अनया पूजया इन्द्रादिदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम्** ऐसा उच्चारण कर अक्षत दश दिक्पाल मण्डल पर छोड़ दे ।

वास्तोष्पतिम् – (गुरुलरे) वासतोष्पति का आवाहन और स्थापन -
नैर्ऋत्य कोण में १ कलश की स्थापना
६४ खाना बनाकर वास्तु पूजा (गृह) प्रवेश में ८१ खाने बनाकर वास्तुपीठ पूजा
ॐ वासतोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः । यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ऋ० ७.५४.१
नागपृष्ठं समारूढं, शूलहस्तं महाबलम् । पातालनायकम् देवं, वास्तुदेवं नमाम्यहम्॥
ॐ भूभुर्वः स्वः वासतोष्पते ! इहागच्छ इहतिष्ठ वासतोष्पतये नमः वासतोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि ॥

क्षेत्राधिपतिम् – (गुरोरुत्तरे) *क्षेत्रपालका आवाहन-स्थापन*
वायव्य कोण में 51 खाना बनाकर क्षेत्रपाल पूजा
- ॐ क्षेत्रपालादिभ्यो नमः
ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः । एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः॥
भूतप्रेतपिशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम् । आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः ॥
क्षेत्रपालात्रमस्यामि सर्वारिष्टनिवारकान्। अस्य यागस्य सिद्ध्यर्थं पूजयाराधितान् मया॥
ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपते । इहागच्छ इह तिष्ठ क्षेत्राधिपतये नमः क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि ।
आवाहन-स्थापन उपरांत ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञँ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयंतामो३म्प्रतिष्ठ।। - इस मन्त्र से प्रतिष्ठाकर

षोडषमातृका पूजन - *षोडषमातृका-पूजनम् - पूजक के दाहिने हाथ की ओर लाल वस्त्र पर उपरोक्त चित्र के अनुसार १६ (सोलह) कोष्ठों में गेहूँ अथवा चावल रखकर क्रम से बनाये गये मातृका मण्डल पर पश्चिम से पूर्व की ओर मातृकाओं का आवाहन नीचे लिखे नाम मन्त्रों से कर उन्हें विराजमान करें । अग्नि कोण में (पूर्व - दक्षिण कोना) षोडश मातृका ; सप्त मातृका , घृत - मातृका तथा १ कलश की स्थापना*

गणेशम् - ॐ गणानां त्वा गणपति गुंग हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति गुंग हवामहे निधीनां त्वा निधिपति गुंग हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् । *ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि । (प्रथम अक्षत-पुञ्ज पर गणेश के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें ।)*

गौरीम -- ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्स्वः । हेमाद्रितनयां देवी वरदां शङ्करप्रियाम् । लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ।। ॐ भूर्भुव: स्व: गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि ।
(द्वितीय अक्षत-पुञ्ज पर गौरी के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें ।)

पद्मामृ -- ॐ हिरण्यरूपा ऽउपसो विरोक ऽउभाविन्दा ऽउदिधः सूर्यश्च । आरोहतं व्वरुण मित्र गर्त ततश्चक्षाथामदितिं दितिञ्च मित्रोऽसिव्वरुणोऽसि । पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरुसंस्थिताम् । जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाह्याम्यहम् ।।
ॐ पद्मायै नमः, पद्मामावाहयामि स्थापयामि । *(तृतीय कोष्ठक में पद्मा के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें।)*

शचीम् -- ॐ निवेशनः सङ्गमनो व्वसूनां विश्वा रूपाभिचष्टे शचीभिः । देवऽइव सविता सत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम् ।।
दिव्यरूपां विशालाक्षीं शुचि-कुण्डल-धारिणीम् । रक्तामुक्ताद्यलङ्कारां शचीमावाहयाम्यहम् ।। ॐ शच्यै नमः, शचीमावाहयामि स्थापयामि । *(चतुर्थ कोष्ठक में शची के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें ।)*

मेधाम् -- मेधां मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः । मेधामिन्द्रश्च व्वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा । विश्वेऽस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम् । बुद्धिप्रबोधिनी सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम् ।। ॐ मेधायै नमः, मेघामावाहयामि स्थापयामि । *(पाँचवें अक्षत-पुञ्ज पर मेधा के लिए पुष्पाक्षत छाड़े ।)*

सावित्रीम् -- ॐ सविता त्त्वा सवाना गुंग सुवतामाद्यग् हपतीना गुंग सोमो वनस्पतीनाम् । वृहस्पतिर्व्वाच ऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्यायरूद्द्रः पशुब्भ्यो मित्र - सत्त्यो व्वरुणो धर्मपतीनाम् । जगत्सृष्टिकरी धात्री देवी प्रणवमातृकाम् । वेदगर्भा यज्ञमयीं सावित्री स्थापयाम्यहम् ।। ॐ सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि *।(छठे अछत-पुञ्ज पर सावित्री के लिए पुष्पाक्षत छोड़े ।।*

विजयाम् -- ॐ विज्यन्धनुः कपर्दिनो व्विशल्यो वाणावाँ२ || उत |अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः । सर्वास्त्रधारिणीं देवीं सर्वाभरणभूषिताम् । सर्वदेवस्तुतां वन्द्यां विजयां स्थापयाम्यहम् ।। जयायै नमः, विजयामावाहयामि स्थापयामि । *(सातवें अक्षत-पुञ्ज पर विजया के लिए पुप्पाक्षत छोड़ें ।)*

जयाम्:- ॐ वह्नीनां पिता वहुरस्य पुत्रश्शिचश्श्चाकृणोति समनावगत्य । इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनिद्धो जयति प्रसूतः । सुरारिमथिनी देवी देवानामभयप्रदाम् । त्रैलोक्यवन्दितां शुभ्रां जयामावाहयाम्यहम् ।। ॐ जयायै नमः, जयामावाहयामि स्थापयामि । *(आठवें पुञ्ज पर जया के स्थापनार्थ अक्षत छोड़ें ।)*

देवसेनाम् - ॐ इन्द्र ऽआसां नेता वृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः । देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् । मयूरवाहनां देवी खड्ग-शक्ति-धनुर्धराम् । आवाहयेद् देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम् ।। ॐ देवसेनायै नमः, देवसेनामावाहयामि स्थापयामि । *(नवें अक्षत-पुञ्ज पर देवसेना के लिए अक्षत छोड़ें ।)*

स्वधाम् -- ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वायिब्भ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन्नितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः, पितर शुन्धद्ध्वम् । अग्रजा सर्वदेवानां कव्यार्थ या प्रतिष्ठिता । पितृणां तृप्तिदां देवी स्वधामावाहयाम्यहम् ।।
स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि । *(दसवें पुञ्ज पर स्वधा के निमित्त पुष्पाक्षत छोड़े)*

स्वाहाम्:- ॐ स्वाहा प्राणेब्भ्यः साधिपतिकेब्भ्यः । पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा ब्बायवे स्वाहा । दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा । हविर्गृवा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति । तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम् ।।
ॐ स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि स्थापयामि । *(ग्यारहवें पुञ्ज पर स्वाहा के निमित्त पुष्पाक्षत छोड़ें।*

मातृ:-- ॐ आपोऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन तो घृतप्प्वः पुनन्तु । व्विश्श्व गुंग हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाब्भ्यः शुचिरा पूतऽएमि । दीक्षातपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवा गुंग शम्मां परिदधे भद्रं व्वर्ण पुष्प्यन् । आवाहयाम्यहं मातृः सकलाः लोकपूजिताः । सर्वकल्याण रूपिण्यो वरदा दिव्यभूषणाः ।
ॐ मातृभ्यो नमः, मातृः आवाहयामि स्थापयामि । *(बारहवें अक्षत-पुञ्ज पर मातृ के निमित्त पुष्पाक्षत छोड़ें।)*

लोकमातृ:-- ॐ रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे विभु च मे प्रभु च मे पूर्ण्णं च मे पूर्णतरं च मे कुयवं च मऽक्षितं च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् । आवाहयेल्लोकमातृ, जयन्तीप्रमुखाः शुभाः । नानाऽभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोकहितावहाः ।। ॐ लोकमातृभ्यो नमः, लोकमातृ, आवाहयामि स्थापयामि । *(तेरहवें अक्षत-पुञ्ज पर लोक मातृ के लिए अक्षत छोड़ें ।)*

धृतिम् -- ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च्व यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु । यस्मान्नऋते किञ्च न कर्म क्रियतं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु । सर्वहर्षकरी देवी भक्तानामभयाप्रदाम् । हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्यहम् ।। ॐ धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि स्थापयामि ।*(चौदहवें अक्षत-पुञ्ज पर धृति के लिए पुष्पाक्षत छोडे)*

पुष्टिम् - ॐ अङ्गान्यात्मन्भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः समधात्सरस्वती । इन्द्रस्य रूप गुंग शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्योतिरमृतं दधानाः । पोषयन्तीं जगत्सर्वं स्वदेहप्रभवैर्नवैः । शाकैः फलैर्जलैरत्नैः पुष्टिमावाहयाम्यहम् ।। ॐ पुष्ट्यै नमः, पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि ।*(पन्द्रहवें अक्षत-पुञ्ज पर पुष्टि देवी के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें ।)*

तुष्टिम् – ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः । सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धु दुरितात्यग्निः । देवैराराधितां देवीं सदा सन्तोषकारिणीम् । प्रसादसुमुखीं देवीं . तुष्टिमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ तुष्ट्यै नमः, तुष्टिमावाहयामि, स्थापयामि । *(सोलहवें पुञ्ज पर तुष्टि के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें ।)*

आत्मनः कुलदेवताम् -- ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा । चक्षुषे स्वाहा क्षोत्राय स्वाहा व्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा । पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे । नानाजातिकुलेशानी दुर्गामावाहयाम्यहम् ॥ ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः, आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि, स्थापयामि। *(सतरहवें अक्षत-समूह पर अपनी कुलदेवी के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें।)*

प्राणप्रतिष्ठा -- ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुंग समिमं दधातु । विश्वे देवास ऽइह मादयन्तामों ३। प्रतिष्ठठ । ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतिसहिताः श्रीगौर्यादिषोडशमातरः वरदा भवत ।

<u>नारिकेलादिफलं समर्पयेत</u> - <u>श्रीसूक्तेन षोडशोपचारैः सम्पूज्य, प्रार्थयेत्</u> -- आयुरारोग्यमैश्वर्यं दधध्वं मातरो मम । निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः ।।

पुष्पाञ्जलिः - **गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ।।**
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः । गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश ।।
ॐ षोडशमातृकाभ्यो नमः।
अनया पूजया गणेशसहित-गौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्तां न मम ।

सप्त घृत मातृकाः-

अग्नि कोण मैं (पूर्व - दक्षिण कोना) षोडश मातृका ; सप्त मातृका , घृत - मातृका तथा १ कलश की स्थापना

श्रीलक्ष्माधृतिमेधा स्वाहा प्रजा सरस्वती माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः॥

1- श्री , 2- लक्ष्मी , 3- धृति, 4- मेधा, 5- स्वाहा, 6- प्रज्ञा , 7- सरस्वती

<u>सप्त घृत मातृका स्तुतिः-</u>
सौभाग्यदात्री कमलासनस्था तथा जगद्धात्री सदैव मेधा। पुष्टिश्च श्रदाखिल लोकपूज्या सरस्वती मे वितनोतु लक्ष्मी।
ॐ भूर्भुव स्व ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामिः श्रीयादि सप्तघृतमातृकाभ्यो नमः

<u>सप्त घृत मातृका आवाहन मंत्र सहित</u>
श्रिय- ॐ मनसः काममाकूतिं वाचं सत्यमशीमहि पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः। ॐ श्रियै नमः श्रियमावाहयामि स्थापयामि। <u>(प्रथम विन्दु पर पुष्प अक्षत छोड़कर श्री देवी का आवाहन करें।)</u>

लक्ष्मी- ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावोरात्रे पार्श्ववे नक्षत्राणि रूपमश्विनी व्यानम्। इष्णन्निषाणामुं मषाण सर्व्वलोकं मऽइषाण। ॐ लक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि । <u>(दूसरी विन्दु पर अक्षत छोड़कर लक्ष्मी का आवाहन करें)</u>

धृति- ॐ भद्रं कण्णेभिः शृणुयाम देवा भद्र पश्येमाक्ष भिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ठं सस्तनूभिर्व्य शेमहि देवहितं यदायुः। धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि। (तीसरी विन्दु पर अक्षत छोड़कर धृति का आवाहन करें ।)

मेधाम- ॐ मेधां मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च्च व्वायुरश्च मेधा धाता दधातु मे स्वाहा। ॐ मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि। (चौथी रेखा पर चावल छोड़कर मेधा का आवाहन करें ।)

स्वाहा- ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा । ॐ स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि। (पाँचवी विन्दु रेखा पर चावल छोड़कर स्वाहा का आवाहन करें ।)

प्रज्ञा- ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुर पितरं न प्रयन्स्वः। ॐ प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि । (छठी विन्दु रेखा पर अक्षत छोड़कर प्रज्ञा का आवाहन करें ।)

सरस्वती- ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवति। यज्ञं व्यष्टुधियावसुः । ॐ सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि । (सातवीं विन्दु रेखा पर अक्षत छोड़कर सरस्वती का आवाहन करें ।)

प्राण-प्रतिष्ठा निम्नलिखित मंत्र द्वारा :- ऊँ एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव।
ऊँ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिं यज्ञमिमं तन्नोत्वरिष्टं यज्ञ ठं समिमं दधातु।। विश्वेदेवा स इह मादयंतामो २ प्रतिष्ठ।

प्राण स्थिर मंत्र- ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥ श्रीयादि सप्तघृत मातृके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम् ।

सप्तघृत मातृका मंत्र (सभी वस्तुओ से पूजन करें पूजन मंत्र) - ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियादि सप्तघृतमातृभ्यो नमः ।

हाथ मैं अक्षत लेकर प्रार्थना करें प्रार्थना – ॐ यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः। कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्॥ *अनया पूजया वर्सो धारा देवता प्रीयन्ताम न मम।* ऐसा उच्चारण कर मण्डलपर अक्षत छोड़ दे ।

घृत धारी मंत्र--वसोर्धारा मंत्र :--

ॐ वसोः पवित्र शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्र धारण्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाः काम धुक्ष्वः॥ विभक्त धाराओं के मध्य में गुड़ द्वारा (फलादि से ग्रहण करके) एकीकरण - ॐ कामधुक्षः ॥

पूजक अंजलि में पुष्प ग्रहण करे तथा ब्राहमण आयुष मंत्र पढ़ें

आयुष्य मन्त्र पाठ- ॐ आयुष्यं व्वर्चस्य ७ रायस्पोषमौद्भिदम् । इद ७ हिरण्य व्वर्चस्व जैत्रायाविशता द्रुमाम् ॥ ॐ न तद्रक्षा ७ सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज ७ ह्येतत् । यो विभर्त्ति दाक्षायणः हिरण्य स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः॥

ॐ यदा बध्नन् दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानाः तन्मऽआबध्नामि शत शारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥

ॐ यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु । ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम् ॥ दीर्घा नागा नगा नद्योऽनन्ताः सप्तार्णवा दिशः । अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम् ॥ सत्यानि पञ्चभूतानि विनाशरहितानि च । अविनाश्ययुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम् ॥

सप्त घृत मातृका ध्यान :-

सप्तहुं विन्दु पे सप्तहुं मातर श्री लक्ष्मी धृति मेधा माँ आओ। स्वाहा सुप्रभा सरस्वती मातु हमें भव सिंधु से पार लगाओ।।
हे वसुधारा सदा वसुधा तल पे करुणामयि धार बहाओ । पूजा में आय सनाथ करो माँ भक्त के माथे माँ हाथ लगाओ ।।

नान्दीश्राद्ध: ker sakte hain

चतुःषष्टियोगिनी आवाहन पूजनः- *इनका स्थान सुविधानुसार प्रधान कलश के पास अथवा मातृकावेदी के समीप रखा जा सकता है । अन्य देवावाहन की तरह ही इनके लिए भी वायें हाथ में पुष्पाक्षत लेकर, दायें हाथ से मन्त्रोच्चारण करते हुए छोड़ते जायें -*
१. ॐ दिव्ययोगायै नमः । २. ॐ महायोगायै नमः । ३. ॐ सिद्धयोगायै नमः । ४. ॐ महेश्वर्यै नमः । ५. ॐ पिशाचिन्यै नमः । ६. ॐ डाकिन्यै नमः । ७. ॐ कालरात्र्यै नमः । ८. ॐ निशाचर्यै नमः । ९. ॐ कंकाल्यै नमः । १०. ॐ रौद्रवेताल्यै नमः । ११. ॐ हुँकार्यै नमः । १२. ॐ ऊर्ध्वकेश्यै नमः । १३. ॐ विरुपाक्ष्यै नमः । १४. ॐ शुष्काङ्ग्यै नमः । १५. ॐ नरभोजिन्यै नमः । १६. ॐ फटकार्यै नमः। १७. ॐ वीरभद्रायै नमः । १८. ॐ धूम्राक्षस्यै नमः । १९. ॐ कलहप्रियायै नमः । २०. ॐ रक्तक्ष्यै नमः । २१. ॐ राक्षस्यै नमः । २२. ॐ घोरायै नमः । २३. ॐ विश्वरुपायै नमः । २४. ॐ भयङ्कर्यै नमः । २५. ॐ कामाक्ष्यै नमः । २६. ॐ उग्रचामुण्डायै नमः । २७. ॐ भीषणायै नमः । २८. ॐ त्रिपुरान्तकायै नमः । २९. ॐ वीरकौमारिकायै नमः । ३०. ॐ चण्ड्यै नमः । ३१. ॐ वाराह्यै नमः । ३२. ॐ मुण्डधारिण्यै नमः । ३३. ॐ भैरव्यै नमः । ३४. ॐ हस्तिन्यै नमः । ३५. ॐ क्रोधदुर्मुकख्यै नमः । ३६. ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः। ३७. ॐ खट्वाङ्गदीर्घलम्बोष्ठ्यै नमः । ३८. ॐ मालत्यै नमः । ३९. ॐ मन्त्रयौगिन्यै नमः । ४०. ॐ अस्थिन्यै नमः । ४१. ॐ चक्रिण्यै नमः । ४२. ॐ ग्राहायै नमः । ४३. ॐ भुवनेश्वर्यै नमः । ४४. ॐ कण्टक्यै नमः । ४५. ॐ कारक्यै नमः । ४६. ॐ शुभ्रायै नमः । ४७. ॐ क्रियायै नमः । ४८. ॐ दूत्यै नमः । ४९. ॐ करालिन्यै नमः । ५०. ॐ शङ्खिन्यै नमः । ५१. ॐ पद्मिन्यै नमः । ५२. ॐ क्षीरायै नमः । ५३. ॐ असन्धायै नमः । ५४. ॐ प्रहारिण्यै नमः । ५५. ॐ ॐ लक्ष्म्यै नमः । ५६. ॐ कामुक्यै नमः । ५७. न ॐ लोलायै नमः । ५८. ॐ काकदृष्ट्यै नमः । ५९. ॐ अधोमुख्यै नमः । ६०. ॐ धूर्जट्यै नमः । ६१. ॐ मालिन्यै नमः । ६२. ॐ घोरायै नमः । ६३. ॐ कपाल्यै नमः । ६४. ॐ विषभोजिन्यै नमः ।

उक्त चौंसठ योगिनियों के नाममन्त्रों से आवाहन करने के बाद पुनःपुष्पाक्षत लेकर—
आवाहयाम्यहं देवीर्योगिनीः परमेश्वरीः । योगाभ्यासेन संतुष्टाः परं ध्यानसमन्विताः ।।
दिव्यकुण्डलसंकाशादिव्यज्वालास्त्रिलोचनाः । मूर्तिमतीर्ह्यमूर्त्ताश्च उग्राश्चैवोग्ररुपिणीः ।।
अनेकभावसंयुक्ताः संसारार्णवतारिणीः। यज्ञे कुर्वन्तु निर्विघ्नं श्रेयो यच्छन्तु मातरः ।।
ॐ चतुःषष्टियोगिनीभ्यो नमः, युष्मान् अहम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च— *बोलते हुए छोड़ दे और पंचोपचार/षोडशोपचार पूजन करे—*

ॐ चतुःषष्टियोगिनीभ्यो नमः *कहते हुए।*

पूजन के बाद हाथ जोड़कर प्रार्थना करे – यज्ञे कुर्वन्तु विर्विघ्नं श्रेयो यच्छन्तु मातरः ।

पुनः अक्षत लेकर– **अनया पूजया ॐ चतुःषष्टियोगिन्यः प्रीयन्ताम् न मम** - कहकर छोड़दे ।

सर्वोतोभद्र मंडल

बीच मैं सर्वोतोभद्र मंडल बनाकर प्रधान देवता की पूजा
रुद्र कलश यज्ञ मैं स्थापित ईशान कोण नवग्रह और प्रधान पीठ के बीच पीसी हल्दी या रोली से अष्टदल कमल बनाकर एक कलश स्थापित करें
शंकर जी की पूजा मैं लिंगतोभद्र बनता है

SERV DEV AAVAHAN

माँ गायत्री मंत्र - **ॐ आयातु वरदे देवि, त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनी। गायत्रिच्छन्दसां मातः, ब्रह्मयोने नमोऽस्तुते।। ॐ श्री गायत्र्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि, ततो नमस्कारं करोमि।**
ॐ स्तुता मया वरदा वेदमाता, प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्। -अथर्व० १९.७१.१

गणेश - **अभीप्सितार्थ - सिद्धार्थ पूजितो यः सुराऽसुरैः । सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।।**
गौरी - **सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ! । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि ! नमोऽस्तु ते ।।**
हरि - **शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ।।**
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् । येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः ।।
सीताराम - **रामाय रामभद्राय रामचंद्राय वेधसे। रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥**
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम। पाणौ महासायकचारूचापं, नमामि रामं रघुवंशनाथम॥

हनुमान स्तुति - **मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्। वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥**
अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं , दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्। सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं , रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि॥
आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीय विग्रहम्। पारिजाततरूमूल वासिनं भावयामि पवमाननंदनम्।
यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृत मस्तकाञ्जिलम। वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं राक्षसान्तकाम्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ॐ नमो भगवते महाबल पराक्रमाय भूत-प्रेत-पिशाच ब्रह्म राक्षस शाकिनी डाकिनी यक्षिणी पूतना मारीमहामारी राक्षस भैरव बेताल ग्रह राक्षसादिकान् क्षणेन हन हन,भंजय भंजय मारय मारय फट् स्वाहा।

ॐ दक्षिणमुखाय पञ्चमुख हनुमते करालवदनाय नरसिंहाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः सकलभूतप्रेतदमनाय स्वाहा।

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय सर्वशत्रुसंहारणाय सर्वरोग हराय सर्ववशीकरणाय रामदूताय स्वाहा।
ॐ हनुमते नमः ॐ राम दूताय नमः। ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय स्वाहा। ॐ ऐ ह्रीं हनुमते श्री राम दूताय स्वाहा।

श्रीकृष्ण - **वसुदेवसुतं देवं, कंसचाणूरमर्दनम्। देवकी परमानन्दं, कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम।**
कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने । प्रणतः क्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः ॥

श्री श्याम मंत्र - **ॐ श्याम देवाय बर्बरीकाय हरये परमात्मने । प्रणतः क्लेशनाशाय सुहृदयाय नमो नमः।।**
ॐ मोर्वी नन्दनाय विद् महे श्याम देवाय धीमहि तन्नो बर्बरीक प्रचोदयात्।

सप्तदेव - **विनायकं गुरुं भानुं, ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्। सरस्वतीं प्रणौम्यादौ, शान्तिकार्यार्थसिद्धये॥**
पुण्डरीकाक्ष- **मङ्गलं भगवान् विष्णुः, मङ्गलं गरुडध्वजः। मङ्गलं पुण्डरीकाक्षो, मङ्गलायतनो हरिः॥**
ब्रह्मा - **त्वं वै चतुर्मुखो ब्रह्मा, सत्यलोकपितामहः। आगच्छ मण्डले चास्मिन्, मम सर्वार्थसिद्धये॥**
ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्तादवि सीमतः सुरुचो वेन आवः । स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्चः योनिमसतश्च विवः ॥ हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणपूजितम् । आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम् ॥
श्री ब्रम्हाजी - **ॐ नमस्ते परमं ब्रह्मा, नमस्ते परमात्ने । निर्गुणाय नमस्तुभ्यं, सदुयाय नमो नमः।।**

विष्णु- **शान्ताकारं भुजगशयनं, पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं, मेघवर्णं शुभाङ्गम्।**
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं, योगिभिर्ध्यानगम्यं, वन्दे विष्णुं भवभयहरं, सर्वलोकैकनाथम्॥
कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं। नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणं॥
सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली। गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः॥
ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः, श्नप्त्रे स्थो विष्णोः, स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि, वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

शिव- **वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं, वन्दे जगत्कारणम्, वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं, वन्दे पशूनाम्पतिम्।**
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं, वन्दे मुकुन्दप्रियम् , वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं, वन्दे शिवं शङ्करम्॥

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥
पूजन - **ॐ त्र्यक्षरं त्रिगुणाधारं सर्वाक्षरमयं शुभम् त्र्यणवं प्रणवं हंसं स्रष्टारं परमेश्वरम्**
अनादिनिधनं देवमप्रमेयं सनातनम् परं परतरं बीजं निर्मल निष्कलं शुभम्

महामृत्युंजय मंत्र- **ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥**
श्री कार्तिकेय - **ॐ शारवाना-भावाया नमः, ज्ञानशक्तिधरा स्कंदा , वल्लीईकल्याणा सुंदरा। देवसेना मनः कांता, कार्तिकेया नामोस्तुते।**

अशोक सुंदरी - **ॐ जयन्ती मङ्गलमय्या अशोक सुन्दरी देवी । त्रिपुराम्बिका रूपिणी त्रिलोकी जननी ।।**

ॐकार - **ॐकार बिंदु संयुक्तं नित्यं ध्यायंति योगिनः कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः॥**

पंचॐकार - **ॐ ब्रह्मदेवि च गायत्री तथा गोवर्धनेश्वेरः | प्रथ्वी यज्ञ पतिश्चैतान् पन्चोन्कार नमाम्यहं ||**

दुर्गा- **दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।**

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥

ॐ जयंती मंगला काली, भद्रकाली कपालिनी । दुर्गा क्षमा शिवा धात्री, स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।।

सरस्वती- **शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमां, आद्यां जगद्व्यापिनीं, वीणापुस्तकधारिणीमभयदां, जाड्यान्धकारापहाम्।**

हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं, पद्मासने संस्थिताम्, वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं, बुद्धिप्रदां शारदाम्॥

ॐ सरस्वति नमस्तुभ्यं, वरदे कामरूपिणि। विद्यारम्भं करिष्यामि, सिद्धिर्भवतु मे सदा ।।

लक्ष्मी- **आर्द्रां यः करिर्णीं यष्टिं, सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो मऽआवह॥**
ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौभ्यात्तम् | इष्णं निखाणा मुम्मऽइखाण सर्भलोकं मऽइखाण || (-यजुर्वेद 22.22)
ॐ सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो, धन धान्यः सुतान्वितः । मनुष्यो मत्प्रसादेन, भविष्यति न संशयःॐ ।

अष्टलक्ष्मी कुबेर मंत्र - **ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं कुबेराय अष्ट-लक्ष्मी मम गृहे धनं पुरय पुरय नमः॥**

कालभैरव जी - **ॐ ह्रीं वां बटुकाये, क्षौं क्षौं आपदुद्धाराणाये, कुरु कुरु बटुकाये, ह्रीं बटुकाये स्वाहा।**

काली- **कालिकां तु कलातीतां, कल्याणहृदयां शिवाम्। कल्याणजननीं नित्यं, कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥**

काली महाकाली कालिके परमेश्वरी सर्वानन्दकरी देवी नारायणि नमोऽस्तुते ॐ क्रीं काल्यै नमः |

गङ्गा- **विष्णुपादाब्जसम्भूते, गङ्गे त्रिपथगामिनि। धर्मद्रवेति विख्याते, पापं मे हर जाहनवि॥**

तीर्थ- **पुष्करादीनि तीर्थानि, गङ्गाद्याः सरितस्तथा। आगच्छन्तु पवित्राणि, पूजाकाले सदा मम॥**

नवग्रह- **ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशीभूमिसुतो बुधश्च । गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः,सर्वेग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥**

षोडशमातृका- **गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोकमातरः ॥**

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः, आत्मनः कुलदेवता। गणेशेनाधिका हयेता, वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ॥

सप्तमातृका- **कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा, सिद्धिः प्रज्ञा सरस्वती। माङ्गल्येषु प्रपूज्याश्च, सप्तैता दिव्यमातरः॥**

पंचकन्या मंत्रः **अहल्या द्रौपदी कुंती तारा मंदोदरी तथा। पंचकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातकनाशिनीः ॥**

वास्तुदेव- **नागपृष्ठसमारुढं, शूलहस्तं महाबलम्। पातालनायकं देवं, वास्तुदेवं नमाम्यहम्॥**
ॐ वासतोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः । यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ऋ० ७.५४.१

क्षेत्रपाल- **ॐ नहि स्पर्शमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः । एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षेत्रजित्याय देवाः॥**

भूतप्रेतपिशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम् । आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः ॥

क्षेत्रपालान्नमस्यामि सर्वारिष्टनिवारकान्। अस्य यागस्य सिद्धयर्थं पूजयाराधितान् मया॥

सर्पे - **ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च प्रथिवी मनु । ये अंतिरिक्षे ये दिवि तेभ्यो: सर्पेभ्यो नमः ।।**

पितृ मंत्र - **ॐ पितृभ्यःस्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृप्यन्त पितरः पितरःशुन्धध्वम् ॥**
ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।।
ॐ पितृ गणाय विद्महे जगतधारिणे धीमहि तन्नो पित्रो प्रचोदयात्।

नरसिंह उपासना मंत्रः
ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम्॥
ॐ नमो भगवते तुभ्यं पुरुषाय महात्मने हरिंऽद्भुत सिंहाय ब्रह्मणे परमात्मने।
ॐ नृसिंहाय विद्महे, वज्रनखाय धीमहि। तन्नो सिंह प्रचोदयात्॥
ॐ क्षौं नरसिंहाय नमः

आवाहन-स्थापन उपरांत - **ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञँ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयंतामोऽम्प्रतिष्ठ।।** - इस मन्त्र से प्रतिष्ठाकर

सर्वदेव नमस्कार - **नमो स्तवन अनंताय सहस्त्र मूर्तये, सहस्त्रपादाक्षि शिरोरु बाहवे। सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटि युग धारिणे नमः।।**

भागवत पूजन

गुरु पूजन
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः । गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥१॥ अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् । तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥२॥

ध्यानमूलं गुरुर्मूर्तिः पूजामूलं गुरुर्पदम् । मन्त्रमूलं गुरुर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरूर्कृपा ॥

सरस्वती पूजन

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता। या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना॥ या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता। सा माम् पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥ शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमाम् आद्यां जगद्व्यापिनीम्। वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्॥ हस्ते स्फटिकमालिकाम् विदधतीम् पद्मासने संस्थिताम्। वन्दे ताम् परमेश्वरीम् भगवतीम् बुद्धिप्रदाम् शारदाम्॥

व्यास पूजन

व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे | नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः ||Vyash

सप्त चिरंजीवी मंत्र:

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः। कृपः परशुरामश्चैव सप्तैते चिरंजीविनः॥
सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्। जीवेद् वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः॥

ॐ नर नारायणाभ्यां नमः

ॐ यो मायया विरचितं निजमात्मनीदम् | खे रूपभेदमिव तत् प्रतिचक्षणाय ||
ॐ नर नारायणः विद्महे वासुदेवाय धीमहि, तन्नो नर नारायणः प्रचोदयात ||

वायु देवता पूजन

ॐ अन्तः प्रविश्य भूतानि यो विभर्त्यात्म केतुभिः | अन्तर्यामीश्वरः साक्षात् पातु नो यद्वशे स्फुटम् ||

शेष सनत कुमार पूजन - ॐ शेषः सनत्कुमारश्च सान्ख्यायन पराशरौ | ब्रहस्पतिश्च मैत्रैय उद्धवश्चात्र कर्मणि ||

प्रत्युह व्रन्दं सततं हरन्तां पूजिता मया | अनया पूजया इमे देवाः प्रीयन्तां न मम ||

पौराणिक पूजन - ॐ त्र्य्यारुणिः कश्यपश्च राम शिष्यो अ क्रत व्रणः | वैशम्पायन हारीत षड्वै पौराणिका इमे ||

एतया पूजया षट् पौराणिकाः प्रीयन्ताम न मम ||

सूर्य पूजन-

ॐ ऐहि सूर्य सहस्त्रांशों तेजो राशे जगत्पते, अनुकंपयेमां भक्त्या, गृहाणार्घय दिवाकरः। ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्यः क्लीं ॐ

ॐ सूर्याय नमः | सूर्यमावाहयामि - स्थापयामि - पूजयामि |

दशावतार पूजन - ॐ मत्स्यं कुर्म वराहं च नरसिहं त्रिविक्रमम् | रामं परसु रामं च क्रष्णं च बौद्धं चैव सकल्किनम् ||

गतो अ स्मि शरणं देवं हरि नारायणं शुभम् | प्रणतो अ स्मि जगन्नाथं समे विष्णुः प्रसीदतु ||

लोक पूजन -

ॐ अतलं वितलं चैव नितलं सुतलं तथा | तलातलं रशातलं पातालं पूजयाम्यहम् ||
ॐ जन्लोकस्त पोलोकः सत्यलोको विराजते | भूर्भुवः स्वर्लोको महर्लोक इति स्मृत ||
चतुर्दशलोकान् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ||

नारद पीठः पूजन - ॐ नमस्तुभ्यं भगवते ज्ञान वैराग्य शालिने | नारदाय सर्वलोकाय पुजिताय सुरर्षये ||

धुन्धकारि पूजन - सात 7 पोर गाठ वाले बाश - लाल डोरा बन्ध कर पूजा करे -

धुन्धकारि यथा वन्शे सप्तग्रन्थि समायुते | उषित्वा क्षिप्रमुक्तो अ भूत्पीत्वा भागवतामतम् ||
तथाअहं देव मुत्तः स्यां सप्ताहः श्रवणेन वै | अनुकम्पय मां नाथ प्रसीद परमेश्वर ||

भागवत पर नारियल पुष्प द्रव्य रखे -

ॐ श्री मदभगवताख्योअयं प्रत्यक्षः कृष्ण एव हि | स्वीक्रतोअसि मयानाथ मुक्त्यर्थम् भवसागरे | |

श्री शुकदेव पूजन -

यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेत कृत्यं द्वैपायनो विरह कातर आजुहाव। पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदुः तं सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोस्मि॥ श्री शुकदेवाय आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ||

भागवतं पुस्तक पीठः पूजन - श्री मद् भागवतं शास्त्रं विष्णु रूपं यदुच्यते | तदहं सप्रवक्ष्यामि विशेषेण सुरानद्य ||

धन्यं भागवतं शास्त्रं यस्मिन्भाति जनार्दन | धन्यास्ते वैष्णवा लोके ये शृण्वन्ति कथा मिमाम् ||

तुलसी पूजन -

तुलसि श्रीसखि शुभे पापहारिणि पुण्यदे । नमस्ते नारदनुते नारायणमनःप्रिये ॥ १॥
मनः प्रसादजननि सुखसौभाग्यदायिनि । आधि व्याधि हरे देवि तुलसि त्वां नमाम्यहम् ॥ २॥
सौभाग्यं सन्ततिं देवि धनं धान्यं च सर्वदा । आरोग्यं शोकशमनं कुरु मे माधवप्रिये ॥ ६॥
देवी त्वं निर्मिता पूर्वमर्चितासि मुनीश्वरैः| नमो नमस्ते तुलसी पापं हर हरिप्रिये।।
तुलसी श्रीर्महालक्ष्मीर्विद्याविद्या यशस्विनी। धर्म्या धर्मानना देवी देवीदेवमनः प्रिया।।
लभते सुतरां भक्तिमन्ते विष्णुपदं लभेत्। तुलसी भूर्महालक्ष्मीः पद्मिनी श्रीर्हरप्रिया।।

कृष्ण जी - लडडू गोपाल पूजन -

सच्चिदानंद रूपाय विश्वोत्पत्यादिहेतवे! तापत्रय विनाशाय श्री कृष्णाय वयं नुमः।।
कृष्णाय वासुदेवाय देवकी नन्दनाय च । नंदगोपकुमाराय गोविंदाय नमो नमः ॥
शान्ताकारं भुजगशयनं, पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं, मेघवर्ण शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं, योगिभिर्ध्यानगम्यं, वन्दे विष्णुं भवभयहरं, सर्वलोकैकनाथम्॥

स्वः इद वः पादय पादावनेजन पाद प्रक्षालनम् वृद्धः॥

नमो विश्वस्य रूपाय विश्व स्थित्यन्त हेतवे | विश्वेश्वराय विश्वाय गोविन्दाय नमो नमः ||

नमो कमल नेत्राय नमः कमल मालिने | नमः कमल नाभाय कमला पतये नमो नमः ||

प्रसीद परमानन्द प्रसीद परमेश्वर | आधि व्याधि भुजंगेन दष्टं मामुद्धर प्रभो ||

सर्वदेव नमस्कार - **नमो स्त्वन अनंताय सहस्त्र मूर्तये, सहस्त्रपादाक्षि शिरोरु बाहवे। सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटि युग धारिणे नमः।।**

नान्दीश्राद्ध:

संस्कृत व्याकरण के अनुसार नांदी शब्द नंद धातु में घय प्रत्यय लगकर बनता है। नंद धातु भवादीगण की परस्मैपदी धातु है, जिसका अर्थ होता है प्रसन्न होना, हर्षित होना, संतुष्ट होना। इसमें इस कार्य को करने से पितर प्रसन्न होते हैं और विश्वदेव भी प्रसन्न होते हैं इसीलिए विष्णु पुराण में नांदी श्राद्ध का उल्लेख करते हुए यह व्याख्या बताई गई है कि " नंदन्ति देवा: यत्र सा नांदी" अर्थात हमें किसी भी शुभ कर्म में अपने पितरों को तथा देवताओं को प्रसन्न करने के लिए शुभ कर्म से पूर्व नांदी श्राद्ध अवश्य करना चाहिए। नांदी श्राद्ध को ही अभ्युदय श्राद्ध भी कहते हैं। नांदिमुख श्राद्ध हो जाने पर कर्ता को जन्म या मृत्यु का सूतक दोष भी नहीं लगता । यह बहुत आवश्यक हैतथापि कर्ता कोई भी शुभ कर्म, अनुष्ठान, यज्ञ आदि भी निःसंकोच कर सकता है क्योंकि नांदिमुख शुभ कर्मों से पूर्व करने का विधान है। यदि आप यज्ञ करते हो तो उसके २१ दिन पहले, विवाह के १० दिन पहले, चुराकरण के ३ दिन पहले और यज्ञोपवीत में ६ दिन पहले नांदी श्राद्ध करने का निर्देश हमारे शास्त्रों में मिलता है। हमें यह जानना चाहिए कि नांदी श्राद्ध करने से किसी भी तरह की दैविक आपदा भी हमारे अनुष्ठान या शुभ कर्मों में नहीं आती। भूकंप आदि का दोष भी नांदी श्राद्ध करने पर नहीं होता है। अनुष्ठान यदि आप कोई कर रहे हो या यज्ञ कर रहे हो तो नांदी साथ पूर्व में न कर पाएं तो यथा समय भी किया जा सकता है। यदि यजमान के पिता, माता, दादा, दादी आदि जीवित हों तो उनका नांदिमुख श्राद्ध नहीं होगा अपितु उनसे पूर्व की दो पीढ़ियों का होगा। इसका अर्थ यह है कि पिता जीवित है तो दादा तथा पूर्व पितामह का नांदिमुख साथ होगा। तब नांदिमुख श्राद्ध करते समय उनके पत्तल पर तीन कुश न रखकर मात्र दो कुश ही रखे जाएंगे। उसी प्रकार यदि माता जीवित हैं तो माता का नांदिमुख श्राद्ध नहीं होगा तथा उस पत्तल पर दादी और परदादी के कुश रखकर उनका ही केवल नान्दीमुख श्राद्ध होगा। लोग जीवित हैं उनका कुश उस पत्तल पर नहीं रखना होगा। नांदिमुख श्राद्ध में कुश सीधे रखे जाते हैं । इसको करने का सबसे अच्छा समय प्रातः काल ही माना जाता है। पत्तलों पर कुश को सीधा रखना चाहिए। इसे दोहरा मोड़कर नहीं रखना चाहिए। इस प्रक्रिया में जनेऊ हमेशा बाएं कंधे पर ही होता है। इसमें बाएं दाहिने करने की कोई जरूरत नहीं पड़ती। इस पूजा में स्वधा शब्द का कोई प्रयोग नहीं होता और न ही तिलों का प्रयोग होता है। गृह प्रवेश एवं वास्तु शांति के अवसर पर नांदिमुख श्राद्ध अवश्य करना चाहिए।

नांदी मुख श्राद्ध **षोडश मातृका** के सामने होता है पूर्वाभिमुख होकर साध्य होकर देव पूजा की तरह पितरो की अर्चना होती है

पूर्व दिशा में सत्य वसु देवता के लिए दो आसन दें जिन पर कुशा के शिरों भाग पर गाँठ लगाकर उत्तराग्र रखें ।

बाकी अन्य आसन उत्तर दिशा से लेकर दक्षिण दिशा की तरफ रखें । इस सब आसन ११ होते हैं ।

सांङ्कल्पिक विधिना 'नान्दीश्राद्धं कुर्यात्। तद्यथा- पत्रावलिमध्ये प्रदक्षिण्येन चतुर्षु स्थानेषु ऋजून् कुशानास्तीर्य तदुपरि सङ्कल्पपूर्वकं पूजनं कुर्यात्। इदं श्राद्धं सव्येन एव कुर्यात्।

अर्थात सांकल्पिक विधि से नान्दीश्राद्ध करें, जो कि इस प्रकार है पूर्व दिशा की ओर विश्वेदेव के आसन स्थान पर उत्तराग्र कुश रखें और तीन आसन दक्षिण से पूर्वाग्र क्रम से मातृ पितामही और प्रपितामही के निमित प्रथम आसन तथा पितृ, पितामह एवं प्रपितामह के लिए द्वितीय आसन और सपत्नीक मातामह, प्रमातामह और वृद्ध-प्रमातामह के लिए तीसरा आसन रखने का विधान है। ये आसन कुछ दूरी पर हों, अर्थात् एक में सटे न हों। उन रखे आसनों पर विश्वेदेव के सहित अपने पूर्वज पितरों की पूजा करे जिसका क्रम इस प्रकार है, पत्तल पर पूर्व से दक्षिण क्रम से सीधे चार कुशाओं को रखकर उस पर संकल्पपूर्वक पूजन करे तथा यह श्राद्ध सव्य होकर ही करें।

ॐ व्रत यज्ञ विवाहेषु श्राद्धे होमेऽर्चने जपे।
प्रारब्धे सूतके न स्यादनारब्धे तु सूतकम्॥

संकल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचणे भूर्लोके भारतवर्षे जम्बूद्विपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तस्य मध्यदेशे पुण्यप्रदेशे गंगायमुनयोः पश्चिमदिग्भागे क्षिप्रायाः दक्षिण ते नर्मदाया उत्तरेतीरे मालवक्षेत्रे ओंकारमहाकालयोः मध्ये इन्दौर महानगरे .... क्षेत्रे देवद्विजगवां चरण सन्निधावास्मिन् श्रीमन्नृपतिवीरविक्रमादित्य समयतो .... संख्या परिमिते प्रवर्त्तमानसंवत्सरे प्रभवादिषष्ठि -संवत्सराणां मध्ये .... नामसंवत्सरे, श्री सूर्य .... यायने, ... ऋतौ, महामांङ्गल्यप्रदे मासानाम् उत्तमे .... मासे, ... पक्षे, ... तिथौ, ... वासरे, ... नक्षत्रे, ... योगे, ... करणे, ... राशिस्थिते चन्द्रे, ... राशिस्थितेश्रीसूर्ये, ... राशिस्थिते देवगुरौ शेषेशु ग्रहेषु यथायथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ .... प्रातःकाले गोत्रोत्पन्नस्य .... शर्मणः (वर्मणः, गुप्तस्य वा) अहं साङ्कल्पिक विधिना नान्दीश्राद्धं करिष्ये।

ॐ पितृभ्य:स्वधायिभ्य:स्वधा नम:। पितामहेभ्य:स्वधायिभ्य:स्वधा नम:। प्रपितामहेभ्य:स्वधायिभ्य:स्वधा नम:। प्रपितामहेभ्य:स्वधायिभ्य:स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृप्यन्त पितर: पितर:शुन्धध्वम् ॥

पितृ गायत्री मंत्र - ॐ देवताभ्यः पितृभ्य च महायोगिभ्य एव च, नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव च नमो नमः।।

ॐ पितृभ्य: आवाहयामि, पूजयामि ।

पाद प्रक्षालनम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनम् वृद्धि॥

ॐ मातृ-पितामही (दादी)-प्रपितामह्यः(परदादी) नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनम् वृद्धिः॥

ॐ पितृ-पितामह (दादा)-प्रपितामहाः (परदादा) नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनम् वृद्धिः॥

ॐ मातामह (नाना)-प्रमातामह (परनाना) - वृद्धप्रमातामहाः (वृद्धपरनाना) सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनम् वृद्धिः॥

आसनदानम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः॥

ॐ मातृ-पितामही (दादी)-प्रपितामह्यः(परदादी) नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः॥

ॐ पितृ-पितामह (दादा)-प्रपितामहाः (परदादा) नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः॥

ॐ मातामह (नाना)-प्रमातामह (परनाना) - वृद्धप्रमातामहाः (वृद्धपरनाना) सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः॥

गन्धादिदानम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः॥

ॐ मातृ-पितामही (दादी)-प्रपितामह्यः(परदादी नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः॥

ॐ पितृ-पितामह (दादा)-प्रपितामहाः (परदादा) नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः॥

ॐ मातामह (नाना)-प्रमातामह (परनाना) - वृद्धप्रमातामहाः (वृद्धपरनाना) सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः॥

भोजन निष्क्रयद्रव्य दानम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण भोजनपर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रय भूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः॥

ॐ मातृ-पितामही (दादी)-प्रपितामह्यः(परदादी) नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण भोजनपर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रय भूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः॥

ॐ पितृ-पितामह (दादा)-प्रपितामहाः (परदादा) नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण भोजनपर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रय भूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः॥

ॐ मातामह (नाना)-प्रमातामह (परनाना) - वृद्धप्रमातामहाः (वृद्धपरनाना) नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण भोजनपर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रय भूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः॥

सक्षीर यवमुदकदानम् - (दुग्ध जौ जल मिश्रित कर अर्पित करें)

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्॥

ॐ मातृ-पितामही (दादी)-प्रपितामह्यः(परदादी) नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्॥

ॐ पितृ-पितामह (दादा)-प्रपितामहाः (परदादा) नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्॥

ॐ मातामह (नाना)-प्रमातामह (परनाना) - वृद्धप्रमातामहाः (वृद्धपरनाना) सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्॥

जलाऽक्षतपुष्पप्रदानम्

चतुर्थस्थानेषु

ॐ शिवा आपः सन्तु इति जलम्।

सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम्। अक्षतं चाऽरिष्टं चास्तु इत्यक्षतान्।

आशीर्ग्रहणम्

ततो यजमानः कृताञ्जलि प्रार्थयेत् - ॐ गोत्रं नो वर्धताम्। वर्धतां वो गोत्रम्। दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। अभिवर्द्धन्तां वो दातारः। वेदाश्च नोऽभिवर्द्धन्ताम। अभिवर्द्धन्तां वो वेदाः। सन्ततिर्नोऽभिवर्द्धताम्। अभिवर्द्धन्तां वः सन्ततिः। श्रद्धा च मा व्यगमत्। माव्यगमद्वःश्रद्धा। बहुदेयं च नोऽस्तु। अस्तु वो बहुदेयम्। अन्न च नो बहु भवेत्। भवतु वो बह्वन्नम्। अतिथींश्च लभेमहि। अतिथींश्च लभध्वम्। याचितारश्च नः सन्तु। सन्तु वो याचितारः। मा च याचिष्म कश्चन । एषा सत्याः आशिषः सन्तु।

ब्राह्मण - सन्त्वेताः सत्याः आशिषः इति।

दक्षिणादानम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक-यवमूल निष्क्रयणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे॥

ॐ मातृ-पितामही (दादी)-प्रपितामह्यः(परदादी) नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक-यवमूल निष्क्रयणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे॥

ॐ पितृ-पितामह (दादा)-प्रपितामहाः (परदादा) नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक-यवमूल निष्क्रयणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे॥

ॐ मातामह (नाना)-प्रमातामह (परनाना) - वृद्धप्रमातामहाः (वृद्धपरनाना) सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक-यवमूल निष्क्रयणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे॥

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे अभिदेवाँ२इयक्षते।

ॐ इळामग्ने पुरुद ७ स ७ सनि गोः शश्वतम ७ हव मानाय साध।

स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे।

नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्। इति यजमानः।

ब्राह्मण - सुसम्पन्नम्।

श्री कर्माङ्गदेवताः प्रीयन्तां वृद्धिः। ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।

विसर्जनम्

ॐ वाजेवाजे वत वाजिनो नो धनेषु विप्राऽअमृताऽऋतज्ञाः।

अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः॥

ॐ आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमेद्यावा पृथिवी विश्वरूपे।

आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमोऽअमृतत्वेन गम्यात्॥

इति मन्त्रेण विसृज्य॥

समर्पणम्

विश्वेदेवाः प्रीयन्तामिती विसृज्य

यजमान हस्ते जलमादय

मयाऽऽचरितेऽऽस्मिन्साङ्कल्पिक विधिना नान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीनान्दीमुख प्रसादाच्च सर्वःपरिपूर्णोऽस्तु।

ब्राह्मण - अस्तु परिपूर्णः।
अनेन साङ्कल्पिक विधिना नान्दीश्रादधेन नान्दीमुखाः पितरः प्रीयन्ताम्।

॥ इति साङ्कल्पिक विधिना नान्दीश्रादध प्रकरणम् ॥

देव ब्राह्मण वन्दनात् गुरुवचः संपादनात् प्रत्यहं। साधूनामपि भाषणात् श्रुतिशिरः श्रेयः कथाकर्णनात्॥
होमात् अध्वर दर्शनात् शुचिमनो भावात् जपात् दानतः। नो कुर्वन्ति कदाचिदेव पुरुषस्यैव ग्रहाः पीडनम्॥
०~~~~~~प्र~~~~~~०

अग्निहोत्र (देवयज्ञ)

यज्ञ वेदि निर्मान – {{}} हवन विधि पूर्वाङ्ग

हवन का आरम्भ पूर्वाङ्ग पञ्चभू संस्कार से होता है। पञ्चभूसंस्कार में जहां हवन करना हो उस भूमि के पांच आवश्यक संस्कार किया जाता है।

पन्च भू संस्कर – दहिने हाथ मै कुशाये लेकेर तीन बार पच्चिम से पूर्व या दक्षिण से उत्तर बुहारे मंत्र बोले| कुशाओं को पूर्व दिशा में फेंक दे | - **ॐ दर्भैः परिसमूह्य, परिसमूह्य, परिसमूह्य |**

गाय के गोबर से पच्चिम से पूरब या दक्षिण से उत्तर की ओर लेपन करें - **ॐ गोमेयेन उपलिप्य, उपलिप्य, उपलिप्य |**

सुरवा के मूल से तीन रेखाएं खीचें पच्चिम से पूर्व या दक्षिण से उत्तर की ओर - **ॐ स्रुवमूलेन उल्लिख्य, उल्लिख्य, उल्लिख्य |**

रेखांकित किये गए स्थल के ऊपर की मिटटी अनामिका और अंगुष्ठ के सहकार से पूर्व या ईशान मैं फेंक दें - **ॐ अनामिकङ्गुस्ठेन उद्धृत्य, उद्धृत्य, उद्धृत्य |**

उस स्थान पर जल छिड़के **ॐ उदकेन अभ्युक्ष्य, अभ्युक्ष्य, अभ्युक्ष्य |**

» जल से आचमन करने के 3 मंत्र

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१॥

ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥२॥

ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥३॥

» जल से अंग स्पर्श करने के मंत्र

ॐ वाङ्म आस्येऽस्तु ॥ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॥ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ॥

इससे सारे शरीर पर जल का मार्जन करें--**ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा में सह सन्तु ॥**

------ **प्राणायाम** --- ---- **संकल्प** ---- - -- ke baad

ईश्वर की स्तुति - प्रार्थना - उपासना के मंत्र

ॐ विश्वानी देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद भद्रं तन्न आ सुव ॥१॥

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः । यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इन्द्राजा जगतो बभूव । य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च द्रढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः । यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥५॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तनो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा । यत्र देवा अमृतमानशाना स्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥

अग्ने नय सुपथा राय अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥८॥

ब्रह्मन वरन **अद्य विशेषन विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ अमुक गौत्र अमुक नमाहम् अस्मिन् कर्मणि शुभता सिध्यर्थम् यथानाम गोत्रान यथानाम् ब्राह्मणान व्रणे -- ॐ स्वस्ति** - संकल्प

रक्षा-विधान

बायें हाथ में अक्षत पीली सरसों द्रव्य और तीन तारकी मौली लेकर दाहिने हाथ से ढककर नीचे लिखे मन्त्र से अभिमन्त्रित करें

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम्। विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ।
स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम्। धरणी गर्भ सम्भूतं शशि पुत्रं बृहस्पतिम् ।।
दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम् । राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ।।
शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनींश् चैव तपोधनान् । गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनि सत्तमम् ।।
वसिष्ठं मुनि शार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलम् । व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्र विशारदम् ।।
विद्याधिका ये मुनय आचार्यांश्च तपोधनाः । तान् सर्वान् प्रणमाम् येवं यज्ञरक्षा करान् सदा ।।

अब निम्नलिखित मन्त्रों से दसों दिशाओं में अक्षत तथा पीली सरसों छोड़े ।

पूर्वे रक्षतु वाराह आग्येय्यां गरुड ध्वजः । दक्षिणे पद्मना भस्तु नैर्ऋत्यां मधु सूदनः ।।
पश्चिमे पातु गोविन्दो वायव्यां तु जनार्दनः । उत्तरे श्रीपती रक्षे दैशान्यां तु महेश्वरः ।।
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेद् हयधो ऽनन्तस् तथैव च । एवं दश दिशो रक्षेद् वासु देवो जनार्दनः ।।
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं रक्षत्वीशो महाद्रि धृक । यदत्र संस्थितं भूतं स्थान माश्रित्य सर्वदा ।।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु। अपक्रामन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः।।
ये भूता विघ्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।। अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशः ।
सर्वेषा मविरोधेन पूजाकर्म समारभे ।।

आत्म रक्षार्थ तथा यज्ञ रक्षार्थ निम्न मन्त्र से जल, सरसों या पीले चावलों को (अपने चारों ओर) छोड़ें - सरसों छिड़कने के बाद इसी पियाले में जो रक्षा सूत्र (कलाई) रखा है उसे लेकर ब्राह्मण यजमान के हाथ में बाँध दे (यह कलावा की लम्बाई यजमान के हाथ भर लम्बी होनी चाहिए)

मन्त्र - **ॐ पूर्वे रक्षतु वाराहः, आग्नेय्यां गरुडध्वजः। दक्षिणे पद्मनाभस्तु, नैर्ऋत्यां मधुसूदनः ॥
पश्चिमे चैव गोविन्दो, वायव्यां तु जनार्दनः। उत्तरे श्रीपती रक्षेद्, ऐशान्यां हि महेश्वरः ॥
ऊर्ध्वं रक्षतु धाता वो, ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु। अनुक्तमपि यत् स्थानं, रक्षत्वीशो ममाद्रिधृक् ॥
ओम अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूता भूमि संस्थिताः। ये भूताः बिघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम। सर्वेषामविरोधेन पूजा कर्म / यज्ञकर्म समारभ्भे॥**

त्रदेव पूजन - <u>सृष्टि त्रिआयामी है - तीन लोक, तीन शरीर, तीन गुणों, तीन देव शक्तियों के सान्निध्य, संसर्ग और संयोग से सुयोग बनता है</u>

आदिशक्ति गायत्री - **ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पन्क्त्य सह । व्रहत्युष्णिहा ककुत्सुचिभिः शम्यन्तु त्वा ।। ॐ गायत्रै नमः आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि ।।**

यज्ञ भगवान - **ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। ॐ यज्ञ पुरुषाय नमः आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि ।।**

ज्योति पुरुष - **अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानिविद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ।। ॐ ज्योति पुरुषाय नमः आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि ।।**

पन्चवेदि पूजन - <u>पाँच चौकियों पर स्थापित पाँच कलशों को एक एक देवता का प्रतीक मानकर प्रत्येक का पूजन जल, पुष्प अक्षत, चन्दन, नैवैद्य इन पाँच वस्तुओं से किया जाय।</u>

प्रथ्वी - **ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽइमँ य्यज्ञम्मि मिक्क्षताम् । पिपृतान्नो भरीमभिः । विश्वाधाराऽसि धरणी सेषनागोपरि स्थिता । उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि ।।**

वरुण - **ॐ तत्त्वा यामि व्रहमणा वन्दमान स्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश गुंग स मा नऽ आयुः प्रमोषीः ।। ॐ अपांपतये वरुणाय नमः आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि ॥**

अग्नि - **ॐ त्वं अग्ने वरुण स्य विंद्वान, देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वहिन्तमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा गुम सि प्रमुमुग्ध्य स्मत् ॥ ॐ अग्नये नमः आवाहयामि , स्थापयामि , ध्यायामि ॥**

वायु - **ॐआ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् । वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ आवाहयामि , स्थापयामि , ध्यायामि ॥**

आकाश - **ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सुनृतावती । तया यज्ञं मिमिक्षतम् । उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा ॥ आवाहयामि , स्थापयामि , ध्यायामि ॥**

कुश कण्डिका - <u>यज्ञशाला या यज्ञ कुंड अथवा पूजा क्षेत्र के चारों ओर मन्त्रों के साथ कुशा स्थापित किये जाते हैं प्रत्येक दिशा के लिए चार - चार कुश लिए जाते है टोटल १६ कुशा बिछाये जाते हैं | एक बार मैं चार कुशा हाथ मैं लें हाथ जोड़कर स्थापित करें कुश का ऊपरी नुकीला भाग पूर्व या उत्तर की ओर रहे तथा मूल (जड) भाग पच्छिम या दक्षिण में रहे</u>

पूर्व दिशा - **ओं प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।१।।८।। (अथर्व ३/२७/१)**

दक्षिण दिशा - **ॐ दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः| तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु| योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः. अथर्ववेद ३/२७/२**

पश्चिम दिशा - **ॐ प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः | तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु | योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः | अथर्ववेद ३/२७/३**

उत्तर दिशा - **ॐ उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताऽशनिरिषवः | तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु | योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः| अथर्ववेद ३/२७/४**

<u>यज्ञ कुण्ड के बीच मै एक त्रिकोन बनाकर उसके बीच (रं) लिखे दे</u>

<u>हवन वेदि के दक्षिण 1 पत्ता रख कर उसके उपर 1 कुशा मै गाठ लगाकर ब्रहम बनाये या एक ब्रहमन् ko ब्रहम बनाये</u>

<u>पूर्णपात्र लेकर उसमे चावल भरकर ya स्टील पात्र लेकर उसमै २५६ मुटठी चावल से भरा पूर्ण पात्र तथा कुशा रखकर या कलस मै जल लेकर ब्रहम बनाये</u>

प्रार्थना करे - ॐ यावत् कर्म समाप्यते तावत्वं सुस्थिरो भव ||

सिर पर कपडा रखना, सादीशुदा जोड़ा का गठबंधन पत्नी पति के सीधे हाथ की तरफ रहे, प्रणिता पात्र यजमान अपने सामने जल भरकर रखे एक कुश नीचे एक उप्पर रखे (यज्ञ के दौरान, इस जल में घी की आहुति दी जाती है और फिर बचे हुए घी को "इदं न मम" कहकर टपकाया जाता है। इसके बाद, इस पात्र के घी को होठों और मुख पर लगाया जाता है, जिसे "संसव प्राशन" कहते हैं.)||

गांठ लगे कुशा वाले ब्रह्मा की ओर देखे |

पवित्र छेदन हेतु ३ कुशा

प्रोक्षणी पात्र रखे- हवन कुंड को जल से सिंचने के लिए किया जाता है, जिससे चारों दिशाओं में शीतलता का घेरा बने और शांति का अनुभव हो. ॐ अदितेऽनुमन्यस्व", "ॐ अनुमतेऽनुमन्यस्व", "ॐ सरस्वत्यनुमन्यस्व". ..., घी , सुवा , ३ हवन की लकडी तथा हवन की लकडी

प्रणिता पात्र सुरवा को जल छुआने के लिए

उपनयन हेतु ७ वेणी कुशा

पवित्री कुशा

घी को तपाये

भूमि पूजन - **ॐ चतुर्भुजां हरितवर्णां कुर्म प्रष्ठो परि स्थिताम् शङ्ख पद्‌य चक्र शूल युक्तां वसुन्धरां सदा भजे ||**

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः ||

ॐ भूम्यै नमः आवाहयामि , स्थापयामि , ध्यायामि , जल अक्षत पुष्प समर्पयामि - प्रार्थना नमस्कार करिष्यामि

» दीपक जलाने का मंत्र - **ॐ भूर्भुवः स्वः ॥**

दीपक जलाना - **ओं एतन्ते देव सावितर्यज्ञं प्राहुबृस्तये बृहमणे तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव|** - Eshwar ke haath saaf

ॐ यं ब्रह्म वेदान्त विदो वदन्ति परम् प्रधानम् पुरुषम् तथान्ये विश्वोदगते कारणमईश्वरम् वा तस्मै नमो विघ्न विनाशनाय | eswar ki namskar

शुभम करोति कल्याणं, आरोग्यं धन संपदाम, शत्रु बुद्धि विनाशाय, दीपं ज्योति नमोस्तुते।। Deepak jalana

ॐ ज्वलमालिन्यै नमः रत्नेश्वरी नमः | श्री विष्णवै नमः पुराण पुर्षोतमाय नमः ! सर्वोपचार्थे जल गंध अक्षत पुष्पाणिसमर्पयामि,

आरतिकर्म्: **हरिः ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत । ·श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ||** *अर्थ है: विराट पुरुष के मन से चंद्रमा, आँखों से सूर्य, कानों से वायु और प्राण, तथा मुख से अग्नि प्रकट हुई।*

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। ॐ अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ॐ सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। ॐ सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ॐ ज्योतिः सूर्यः सूर्या ज्योतिः स्वाहा।

धूपपात्र - **धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान्धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वाम| देवानामसि वह्नितमं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्|**

ॐ गन्धर्वदैवत्याय धूपपात्राय नमः| - *हे अग्नि! तुम धू हो। जो हमें धू करके नष्ट करना चाहते हैं उनको तुम धू कर दो (धू-धू कर जलाना, ध्वस्त करना)। तुम देवों में सबसे आग्नेय, शुद्ध, प्रिय, साथ जोड़ने वाले तथा देवों को आहुति पहुंचाते हो।*

शंखपूजन- शंख को चन्दन से लेपकर देवता के वायीं ओर पुष्प पर रखकर शंख मुद्रा करें।
त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे। नमितः सर्वदेवैश्च पाञ्जन्या नमोऽस्तुते।। पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि तन्नः शंखः प्रचोदयात्। ॐ भूर्भवः स्वः शंखस्थदेवतायै नमः शंखस्थदेवतामावाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्ध अक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

घण्टा पूजन- **ॐ सर्ववाद्यमयीघण्टायै नमः, आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम्| कुरु घण्टे वरं नादं देवतास्थानसन्निधौ।।**

ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्थाय गरुडाय नमः गरुडमावाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
गरुडमुद्रा दिखाकर घण्टा बजाएं। दीपक के दाहिनी ओर स्थापित कर दें।

मेखला पूजन - बड़े यज्ञों में मेखला पूजन किया जाता है , पूजन करने वाले के हाथ में जल, पुष्प, अक्षत, चन्दन या रोली आदि से पूजन करें

|| विष्णु पूजन (ऊपर की सफ़ेद मेखला) - **ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूढमस्य पासुऽरे स्वाहा ॥ ॐ विष्णवे नमः | आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि |**

|| ब्रह्मा पूजन || (बीच की लाल मेखला) - **ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽआवः. स बुधन्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः || ॐ ब्रह्मणे नमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि |**

|| रुद्र पूजन || (नीचे की काली मेखला) - **ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ उतोतऽ इषवे नमः । बाहुभ्याम् उत ते नमः॥ ॐ रुद्राय नमः | आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि |**

यज्ञ अङ्ग पूजन - हाथ मैं अक्षत लेकर ध्यान करके हवन कुंड मैं अक्षत डालना
योनि पूजन - **ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मा नयति कश्चन । स सत्स्यकश्चकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीं ।। ॐ गौर्यै नमः | आवाहयामि, स्थापयामि, नमस्करोमि |**

कण्ठ पूजन - **नील ग्रीवाः शितिकण्ठा दिवं रुद्रा उपश्रिताः । तेषाँ सहस्त्रयोजने अव धन्वानि तन्मसि॥ ॐ कण्ठे नमः | आवाहयामि, स्थापयामि, नमस्करोमि |**

नाभि पूजन - **नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेअपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्मोस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः || ॐ नाभ्यै नमः | आवाहयामि, स्थापयामि, नमस्करोमि |**

विश्कर्मा पूजन - **ॐ विश्कर्मणे नमः आवाहयामि, स्थापयामि, नमस्करोमि |**

अग्नि रखना - » यज्ञ कुण्ड में अग्नि स्थापित करने का मंत्र - **ॐ भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा । तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्नि मन्नाद मन्नाद्यायादधे ॥ ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे | देवाँ आसादयादिह |**

» अग्नि प्रदीप्त करने का मंत्र / लकड़ी के छोटे टुकड़े रखना - **ॐ उद् बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्विमिष्टापूर्ते सं सृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥**

== === हवन का आर[illegible] पूर्वाङ्ग प[illegible] संस्कार से [illegible]र मैं जहां हवन करना [illegible] उस भूमि के पांच आवश्यक संस्कार किया जा[illegible]।

[illegible]न्च भू संस्कर – दहिने हाथ मै कुशाये लेकर तीन बार [illegible] पूर्व या दक्षिण से उत्तर बुहारे मंत्र बोले| कुशाओं को पूर्व दिशा मैं फेंक दे| - **ॐ दर्भैः [illegible]मूह्य, परिसमूह्य, परिसमूह्य |**

गाय के गोबर से पच्चिम से पूरब या दक्षिण से उत्तर की ओर [illegible] करें - **ॐ गोमेयेन [illegible]प्य, उपलिप्य, उपलिप्य |**

सुरवा के मूल से तीन रेखाएं खीचें पच्चिम से पूर्व या दक्षिण से उत्तर की ओर - **ॐ सव्मूलेन उल्लिख्य, उल्लिख्य, उल्लिख्य |**

रेखांकित [illegible] गए स्थ[illegible] के ऊपर की मिटटी अनामिका और अंगुष्ठ के सहकार से पूर्व या ईशान मैं फेंक दें - **ॐ अनामि[illegible]ङ्गुस्ठेन उद्[illegible]त्य, उद्धत्य, उद्धत्य |**

उ[illegible] पर जल छिड़के **ॐ उदकेन अभ्यु[illegible]** |
====

अग्नि आवाहन - **ॐ अग्ने नय सुपथा राय अस्मान विश्वानि देव वयुनानि विद्वान । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्ति विधेम स्वाहा ||**

ॐ रक्त-माल्याम्बर-धरं रक्त-पद्मासन-स्थितम्। स्वाहा स्वधा वषट्कारै रङ्कितं मेषवाहनम् । शत मङ्गल रोद्रं वह्निमावा हयाम्यहम् ॥७॥

त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिर मितद्युते । आगच्छ भगवन्नग्ने वेद्यामस्मिन् सम्मुखो भव ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वैश्वानर शाण्डिल्य गोत्र शाण्डिल्या सित देवलेति त्रिप्रवरान्वित भूमिमातः वरुणपितः पश्चिम चरण पूर्व शिर-स्कन्ध ऊर्ध्व पाद पाताल द्रष्टि गोचर मेषध्वज प्राङ्मुख अग्ने त्वं स्वागतो भव ॥ हाथ के चावल अग्नि पर डालै

अग्नि पूजन - चावल लेकर अग्नि पर सप्तजिह्या का आवाहन करें -

1. ॐ कनिकायै नमः 2. ॐ रक्तायै नमः 3. ॐ कृष्णायै नमः 4. ॐ उद्दगारिण्यै नमः 5. ॐ सुप्रभायै नमः 6. ॐ बहुरूपायै नमः 7. ॐ अतिरक्तायै नमः

अग्नि प्रार्थना - **ॐ चत्वारि श्रृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य त्रिधा वदधोवृषभो रोरवीति महो गुमं आविवेश | || ॐ अग्ने नमः ||**

जल - गन्ध - अक्षत - पुष्प - नैवैद्य - आचमन - ताम्बूल - पुंगीफल - दक्षिणा चढ़ाकर अग्नि पूजन करें |

पूजन सामिग्री पुष्प आदि हवन कुंड वेदी के बहार रखें मिष्ठान अग्नि मैं डालें |

हाथ मैं जल लेकर छोड़ दे - **|| अनया पूजया अग्निदेवता प्रीयतां न मम ||**

प्रार्थना - **ॐ अग्निं प्रज्वलतिमं वन्दे जातवेदं हुताशनम् |**

हिरण्य वर्ण मनलं समद् धं विश्वतो मुखम् ||

सामिग्री पर जल डालें - **पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥**

मण्डप मैं ब्राहमण ३, ५, ७ बिषम संख्या होनी चाहिए , सभी ब्राहमण के माथे पर तिलक अक्षत लगाकर फूल डालकर यजमान पूजा करे

ब्राहमण वरण करें - कुशा - जल - अक्षत - द्रव्य - लेकर संकल्प करे

अद्य विशेषन विशिष्टायामं शुभ पुण्यतिथौ अमुक गौत्र अमुक नामाहं अस्मिन् कर्मणि शुभता सिध्यर्थम् यथानाम गोत्रान् युष्मान् ब्रहमणान व्रणे||

ब्रहमन् कहे - **|| ॐ स्वस्ति ||**

» घृत की तीन समिधायें रखने के मंत्र -
इस मंत्र से प्रथम समिधा रखें -
ॐ अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धयचास्मान् प्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ।
इदमग्नेय जातवेदसे - इदं न मम ॥१॥

» इन दो मन्त्रों से दूसरी समिधा रखें -
ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् । आस्मिन हव्या जुहोतन स्वाहा । इदमग्नये इदन्न मम ॥२॥
सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ॥३॥

तीसरी समिधा मन्त्र रखें-
तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि । बृहच्छोचा यविष्ठय स्वाहा॥इदमग्नेऽङ्गिरसे इदं न मम ॥४॥

» नीचे लिखे मन्त्र से घृत की पांच आहुति देवें - घी की आहुति देकर स्रुवा का शेष घी प्रोक्षणी मैं छोड़ते जायें
ओम् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वद्धर्स्व चेद्ध वधर्य चास्मान् प्रजया पशुभि ब्रहम वर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।
इदमग्नये जातवेदसे - इदं न मम॥१॥

» जल - प्रसेचन के मन्त्र -
इस मन्त्र से पूर्व में- **ओम् अदितेऽनुमन्यस्व॥**
इससे पश्चिम में **- ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व॥**
इससे उत्तर में **- ओम् सरस्वत्यनुमन्यस्व॥**
इस मन्त्र से वेदी के चारों और जल छिड़कावें। --
ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु॥

» चार घी की आहुतियाँ- फिर दाहिने पैर को मोड़कर अपने आसन से ब्रहमा पर्यन्त मौली या कुशा से अनवारब्ध (एक कलावा यज्ञ के चारों तरफ घुमाकर ब्रहमा के साथ रखे उसे ही

यजमान के पैर पर रखकर ३ आहुति दे बाकि आहुति कलावा हटाकर दें |) हो नीचे मन्त्र से आहुति देवें बचे शेष घी की एक बून्द प्रोक्षणी में गिराए और स्रुवा को प्रणीता पात्र में के जल से छुआएं |

वेदी के उत्तर भाग में - **ओम् अग्नये स्वाहा | इदमग्नये - इदं न मम॥**

वेदी के दक्षिण भाग में - **ओम् सोमाय स्वाहा | इदं सोमाय - इदं न मम॥**

यज्ञ कुण्ड के मध्य में - **ओम् इन्द्राय स्वाहा | इदं इन्द्राय - इदं न मम॥**

बिना अन्वारब्ध (एक कलावा यज्ञ के चारों तरफ घुमाकर ब्रह्मा के साथ रखे उसे ही यजमान के पैर पर रखकर ३ आहुति दे बाकि आहुति कलावा हटाकर दें |) की एक आहुति –

ओम् प्रजापतये स्वाहा | इदं प्रजापतये - इदं न मम॥

स्विष्टकृध्दोमः - एक लड्डवा , हलवा,भात, मिठाई, भोज्य पदार्थ पर बूँद घी की डाल कर दें |

यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा।। ॐ अग्नेय स्विष्ट क्रते स्वाहा इदमग्ने स्विष्ट क्रते न मम |

तदुत्तर अन्वारब्ध (ब्रह्मा से कुशात्मक संबंध) के बिना स्थापित-पूजित देवताओं की, जप किये गए मंत्र की आदि शाकल्यादि अन्य होम द्रव्य हो तो उससे अन्यथा आज्य से ही आहुति दे।

फिर अग्नि का पूजन करें -

यजमान आचमन करे उसके बाद -

ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् | ॐ गणपतये नमः स्वाहाः ||

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् | ॐ गौर्यै नमः स्वाहाः ||

नवग्रह -

१- सूर्य (मदार की लकड़ी) - **ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतंमर्त्यंच । हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भूवनानि पश्यन् || श्री सूर्याय नमः स्वाहाः||**

२- चन्द्र (छिउल की लकड़ी) - **ॐ इमं देवा असपत्न सुवध्वं महते क्षत्राय | महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ।| इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी | राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना राजा ।| ॐ चन्द्रमनसे नमः स्वाहाः ||**

३- मंगल (खैर की लकड़ी) - **ॐ अग्निमूर्धा दिवःककुत्पतिः अयम् । अपा रेता असि जिन्वति ॥ ॐ भौमाय नमः, स्वाहाः ||**

४- बुध (चिचड़ी की लकड़ी) - **ॐ उदबुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स सृजेथामयं च । अमिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥ ॐ बुधाय नमः, स्वाहाः ।**

५- बृहस्पति (पीपल) - **ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अहार्दधुमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यदीदयच्छवसऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ बृहस्पतये नमः, स्वाहाः ।**

६- शुक्र (गूलर) - **ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान शुकमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥ ॐ शुक्राय नमः, स्वाहाः ।**

७- शनि (शमी) - **ॐ शं नो देवीरभिष्ट्य आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः ॥ ॐ शनैश्चराय नमः, स्वाहाः ।**

८ - राहु (दूब)- **ॐ काया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः । सखा कया सचिष्ठया वृता ॥ ॐ राहवे नमः, स्वाहाः ।**

९ - केतु (कुशा)- **ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथा ॥ केतवे नमः, स्वाहाः ।**

===

अधिदेवता प्रत्यधि देवता -

1 ईश्वर - **ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ ॐ ईश्वराय नमः स्वाहाः ।**

२-उमा - **ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण । हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् । लम्बोदरस्य जननीमुमामावाहयाम्यहम् ॥ ॐ उमायै नमः स्वाहाः ।**

३-स्कन्द- **ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन् ॥ ॐ स्कन्दाय नमः स्वाहाः ।**

४- विष्णु - **ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ ॐ विष्णवे नमः स्वाहाः ।**

५- ब्रह्मा - **ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहाः ।**

६- इन्द्र - **ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् । जहि शत्रूँरप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः । ॐ इन्द्राय नमः स्वाहाः ।**

७-यम - **ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ ॐ यमाय नमः स्वाहाः ।**

८-काल - **ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि । समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ ॐ कालाय नमः स्वाहाः ।**

९-चित्रगुप्त - **ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय । धर्मराजसभासंस्थं कृताकृतविवेकिनम् । ॐ चित्रगुप्ताय नमः स्वाहाः ।**

प्रत्यधि देवता -

१- अग्नि - **ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे । देवाँ २ आ सादयादिह ॥ ॐ अग्नये नमः स्वाहाः ।**

२- अप् - **ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥ ॐ अद्भ्यो नमः स्वाहाः ।**

३- पृथ्वी - **ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥ ॐ पृथिव्यै नमः स्वाहाः ।**

४- विष्णु - **ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा ॥ ॐ विष्णवे नमः स्वाहाः ।**

५- इन्द्र - **ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः । देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥ ॐ इन्द्राय नमः स्वाहाः ।**

६- इन्द्राणी - **ॐ अदित्यै रास्नाऽसीन्द्राण्या उष्णीषः । पूषाऽसि घर्माय दीष्व ॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः स्वाहाः ।**

७- प्रजापति - ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय ँ स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ॐ प्रजापतये नमः स्वाहाः ।

८- सर्प - ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः स्वाहाः ।

९- ब्रह्मा - ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः । स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्चः योनिमसतश्च विवः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहाः ।

पञ्चलोकपाल

गणेशजी - ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिँ हवामहे वसो मम । ॐ गणपते नमः स्वाहाः ।

दुर्गाजी - ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ ॐ दुर्गायै नमः स्वाहाः ।

वायु - ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् । वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ॐ वायवे नमः स्वाहाः ।

आकाश - ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा । दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥ ॐ आकाशाय नमः स्वाहाः ।

अश्विनीकुमारों - ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सुनृतावती । तया यज्ञं मिमिक्षतम् । उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा ॥ ॐ अश्विभ्यां नमः स्वाहाः ।

दशदिक्पाल

इन्द्र - ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ ॐ इन्द्राय नमः स्वाहाः ।

अग्नि - ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे । देवाँ आ सादयादिह ॥ ॐ अग्नये नमः स्वाहाः ।

यम - ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ ॐ यमाय नमः स्वाहाः ।

निर्ऋति - ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ ॐ निर्ऋतये नमः स्वाहाः ।

वरुण - ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ स मा न आयुः प्रमोषीः ॥ ॐ वरुणाय नमः स्वाहाः ।

वायु - ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् । वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ॐ वायवे नमः स्वाहाः ।

कुबेर - ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय । इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति ॥ उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्ण । एष ते योनिस्तेजसे त्वा वीर्याय त्वा बलाय त्वा ॥ ॐ कुबेराय नमः स्वाहाः ।

ईशान - ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ॐ ईशानाय नमः स्वाहाः ।

ब्रह्मा - ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः । स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहाः ।

अनन्त - ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः । ॐ अनन्ताय नमः स्वाहाः ।

...रुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत । वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ १४ ॥

सर्वतोभद्र मंडल वेदी - पूजन

१. ब्रह्मा (मध्य वापी) : ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ॥

२. सोम (उत्तर वापी) : ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः स्वाहाः ।

३. ईशान (ईशान खण्ड) : ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः स्वाहाः ।

४. इन्द्र (पूर्व वापी)- ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः स्वाहाः ।

५. अग्नि (अग्निकोण खण्ड)- ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः ॥

६. यम (दक्षिण वापी)- ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः स्वाहाः ।

७. निर्ऋति (नैर्ऋत्यकोण खण्ड)- ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये ॥

८. वरुण (पश्चिम वापी)- ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः स्वाहाः ।

९. वायु (वायुकोण खण्ड)- ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः स्वाहाः ।

१०. अष्टवसु (वायु-सोम मध्यभद्र) : ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः स्वाहाः ।

११. एकादशरुद्र (सोम-ईशान मध्यभद्र) : ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः स्वाहाः ।

१२. द्वादशादित्य (ईशानेन्द्र मध्यभद्र) : ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः स्वाहाः ।

१३. अश्विनी (इन्द्राग्नी मध्यभद्र) : ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः स्वाहाः ।

१४. सपैत्रिक विश्वेदेव (अग्न-यम मध्यभद्र) : ॐ भूर्भुवः स्वः सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः स्वाहाः ।

१५. सप्तयक्ष (यम-निर्ऋति मध्यभद्र) : ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः स्वाहाः ।

१६. अष्टकुलनाग (निर्ऋति-वरुण मध्यभद्र) : ॐ अष्टकुलनागेभ्यो नमः स्वाहाः ।

१७. गन्धर्वाप्सरा (वरुण-वायु मध्यभद्र) - ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाऽप्सरोभ्यो नमः स्वाहाः ।

१८. स्कन्द (ब्रह्म-सोम मध्य वापी) : ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः स्वाहाः ।

१९. वृषभ (तदुत्तर) : ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभाय नमः स्वाहाः ।

२०. शूल (तदुत्तर) : ॐ भूर्भुवः स्वः शूलाय नमः स्वाहाः ।

२१. महाकाल (तदुत्तर) : ॐ भूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः स्वाहाः ।

२२. दक्षादिसप्तगण (ब्रह्म-ईशान मध्यश्रृंखला) : ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः स्वाहाः ।

२३. दुर्गा (ब्रह्म-इन्द्र मध्यवापी) : ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः स्वाहाः ।

२४. विष्णु (तत्पूर्व) : ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः स्वाहाः ।

२५. स्वधा (ब्रह्म-अग्नि मध्यश्रृंखला) : ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वाहाः ।

२६. मृत्युरोग (ब्रह्म-यम मध्यश्रृंखला) : ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः स्वाहाः ।

२७. गणपति (ब्रह्म-निरृति मध्यश्रृंखला) : ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः ॥

२८. अप (ब्रह्म-वरुण मध्यश्रृंखला) : ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः ॥

२९. मरुत (ब्रह्म-वायु मध्यश्रृंखला) : ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः ॥

३०. पृथिवी (ब्रह्मपादमूल) : ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः स्वाहाः ।

३१. गङ्गादिनदी (तदुत्तर) : ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनदीभ्यो नमः ॥

३२. सप्तसागर (तदुत्तर) : ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः स्वाहाः ।

३३. मेरु (कर्णिकापरिधि) : ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः स्वाहाः ।

३४. गदा (श्वेतपरिधि उत्तर) : ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः स्वाहाः ।

३५. त्रिशूल (ईशानकोण) : ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय नमः स्वाहाः ।

३६. वज्र (पूर्व) : ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय नमः स्वाहाः ।

३७. शक्ति (अग्निकोण) : ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तये नमः स्वाहाः ।

३८. दण्ड (दक्षिण) : ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाय नमः स्वाहाः ।

३९. खड्ग (नैरृत्यकोण) : ॐ भूर्भुवः स्वः खड्गाय नमः स्वाहाः ।

४०. पाश (पश्चिम) : ॐ भूर्भुवः स्वः पाशाय नमः स्वाहाः ।

४१. अङ्कुश (वायव्यकोण) : ॐ भूर्भुवः स्वः अङ्कुशाय नमः स्वाहाः ।

४२. गौतम (रक्तपरिधि उत्तर) : ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः स्वाहाः ।

४३. भरद्वाज (ईशानकोण) : ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाज नमः स्वाहाः ।

४४. विश्वामित्र (पूर्व) : ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वमित्राय नमः स्वाहाः ।

४५. कश्यप (अग्निकोण) : ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः स्वाहाः ।

४६. जमदग्नि (दक्षिण) : ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्नये नमः स्वाहाः ।

४७. वशिष्ठ (नैरृत्यकोण) : ॐ भूर्भुवः स्वः वशिष्ठाय नमः स्वाहाः ।

४८. अत्रि (पश्चिम) : ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः स्वाहाः ।

४९. अरुन्धती (वायव्यकोण) : ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै नमः स्वाहाः ।

५०. ऐन्द्री (कृष्णपरिधि पूर्व) : ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्रयै नमः स्वाहाः ।

५१. कौमारी (अग्निकोण) : ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्यै नमः स्वाहाः ।

५२. ब्राहमी (दक्षिण) : ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राहम्यै नमः स्वाहाः ।

५३. वाराही (नैरृत्यकोण) : ॐ भूर्भुवः स्वः वाराहयै नमः स्वाहाः ।

५४. चामुण्डा (पश्चिम) : ॐ भूर्भुवः स्वः चामुण्डायै नमः स्वाहाः ।

५५. वैष्णवी (वायव्यकोण) : ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै नमः स्वाहाः ।

५६. माहेश्वरी (उत्तर) : ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्यै नमः स्वाहाः ।

५७. वैनायकी (ईशानकोण) : ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायक्यै नमः स्वाहाः ।

==

हरिः ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । स भूमिꣳ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १॥

पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् । उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २॥

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः । पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३॥

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः । ततो विष्वङ् व्यक्रामत्सा शनानशने अभि ॥ ४॥

ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः । स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५॥

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् । पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६॥

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७॥

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः । गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥ ८॥

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः । तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ ९॥

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् । मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥ १०॥

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः । ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳ शूद्रो अजायत ॥ ११॥

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत । श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ १२॥

नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत । पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँऽकल्पयन् ॥ १३॥

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत । वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ १४॥

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः । देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥ १५॥

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ १६॥

।। इति शुक्लयजुर्वेदीयपुरुषसूक्तं सम्पूर्णम् ।।

श्रीसूक्तम् - ॐ हिरण्यवर्णां हरिणींसुवर्णरजतस्रजाम्

ॐ ह्रीं हिरंण्यवर्णां हरिंणीं सुवर्णरंजतस्रंजाम् । चन्द्रां हिरण्मंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म आवंह ॥

तां म आवंह जातंवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनींम् । यस्यां हिरंण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुंषानहम् ॥

अश्वपूर्वां रंथमध्यां हस्तिनांद-प्रमोदिनीम् । श्रियं देवीमुपंह्वये श्रीर्मां देवीर्जुंषताम् ॥

कां सोस्मितां हिरंण्यप्राकारांमार्द्रां ज्वलंन्तीं तृप्तां तर्पयंन्तीम् । पद्मे स्थितां पद्मवंर्णां तामिहोपंह्वये श्रियम् ॥

चन्द्रां प्रंभासां यशसा ज्वलंन्तीं श्रियं लोके देवजुंष्टामुदाराम् । तां पद्मिनीमीं शरंणमहं प्रपंद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥

आदित्यवंर्णे तपसोऽधिंजातो वनस्पतिस्तवं वृक्षोऽथ बिल्वः । तस्य फलाँनि तपसा नुंदन्तु मायान्तंरायाश्चं बाह्या अंलक्ष्मीः ॥

उपैंतु मां देंवसखः कीर्तिश्च मणिंना सह । प्रादुर्भूतोऽस्मिं राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृंद्धिं ददातुं मे ॥

क्षुत्पिंपासामंलां ज्येष्ठामंलक्ष्मीं नांशयाम्यहम् । अभूंतिमसंमृद्धिं च सर्वां निर्णुंद मे गृहांत् ॥

गन्धद्वारां दुंराधर्षां नित्यपुंष्टां करीषिणींम् । ईश्वरीगं सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियम् ॥

मनंसः काममाकूंतिं वाचः सत्यमंशीमहि । पशूनां रूपमन्नंस्य मयि श्रीः श्रंयतां यशंः ॥

कुर्दमेंन प्रंजाभूता मयि सम्भंव कुर्दम । श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिंनीम् ॥

आपंः सृजन्तुं स्निग्धानि चिक्लीत वसं मे गृहे । नि चं देवीं मातरं श्रियं वासयं मे कुले ॥

आर्द्रां पुष्करिंणीं पुष्टिं पिङ्गलां पंद्ममालिनीम् । चन्द्रां हिरण्मंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म आवंह ॥

आर्द्रां यः करिंणीं यष्टिं सुवर्णां हेंममालिनीम् । सूर्यां हिरण्मंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म आवंह ॥

तां म आवंह जातंवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनींम् । यस्यां हिरंण्यं प्रभूंतं गावों दास्योऽश्वाँन्, विन्देयं पुरुंषानहम् ॥

ॐ महादेव्यै चं विद्महें विष्णुपत्न्यै चं धीमहि । तन्नों लक्ष्मीः प्रचोदयांत् ॥ ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रेपार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् इष्णन्निषानाऽमुं म इषाण सर्वलोकं मऽइषाण । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिंः ॥

== प्रधान देवता की आहुति १२ आहुति ==
=======

गणेश - अभीप्सितार्थ सिद्धार्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः । सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ ॐ गणाधिपतये नमः स्वाहाः ।

गौरी - सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ! । शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि । नमोऽस्तु ते ॥ ॐ गौरि नमः स्वाहाः ।

श्री कार्तिकेय - ॐ शारवाना-भावाया नमः, ज्ञानशक्तिधरा स्कंदा , वल्लीईकल्याणा सुंदरा। देवसेना मनः कांता, कार्तिकेया नामोस्तुते । ॐ कार्तिकेय नमः स्वाहाः ।

अशोक सुंदरी - ॐ जयन्ती मङ्गलमय्या अशोक सुन्दरी देवी । त्रिपुराम्बिका रूपिणी त्रिलोकी जननी ।। ॐ अशोक सुंदरी नमः स्वाहाः ।

हरि - शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ।। सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् । येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः ।। ॐ हरिः नमः स्वाहाः ।

सीताराम - रामाय रामभद्राय रामचंद्राय वेधसे। रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम। पाणौ महासायकचारूचापं, नमामि रामं रघुवंशनाथम॥

हनुमान स्तुति - मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्। वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं , दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्। सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं , रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीय विग्रहम्। पारिजाततरूमूल वासिनं भावयामि पवमाननंदनम्।

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृत मस्तकाञ्जिंलम। वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं राक्षसान्तकाम्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ॐ नमो भगवते महाबल पराक्रमाय भूत-प्रेत-पिशाच ब्रह्म राक्षस शाकिनी डाकिनी यक्षिणी पूतना मारीमहामारी राक्षस भैरव बेताल ग्रह राक्षसादिकान् क्षणेन हन हन,भंजय भंजय मारय मारय फट् स्वाहा।

ॐ दक्षिणमुखाय पञ्चमुख हनुमते करालवदनाय नरसिंहाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः सकलभूतप्रेतदमनाय स्वाहा।

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय सर्वशत्रुसंहारणाय सर्वरोग हराय सर्ववशीकरणाय रामदूताय स्वाहा। ॐ हनुमते नमः ॐ राम दूताय नमः। ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय स्वाहा। ॐ ऐ ह्रीं हनुमते श्री राम दूताय स्वाहा।

श्रीकृष्ण - वसुदेवसुतं देवं, कंसचाणूरमर्दनम्। देवकी परमानन्दं, कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।
कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने । प्रणतः क्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः।।

श्रीं श्याम मंत्र - ॐ श्याम देवाय बर्बरीकाय हरये परमात्मने । प्रणतः क्लेशनाशाय सुहृदयाय नमो नमः।
ॐ मोर्वी नन्दनाय विद् महे श्याम देवाय धीमहि तन्नो बर्बरीक प्रचोदयात्।

सप्तदेव - विनायकं गुरुं भानुं, ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्। सरस्वतीं प्रणौम्यादौ, शान्तिकार्यार्थसिद्धये॥

पुण्डरीकाक्ष- मङ्गलं भगवान् विष्णुः, मङ्गलं गरुडध्वजः। मङ्गलं पुण्डरीकाक्षो, मङ्गलायतनो हरिः॥ ॐ पुण्डरीकाक्षो नमः स्वाहाः ।

ब्रह्मा - त्वं वै चतुर्मुखो ब्रह्मा, सत्यलोकपितामहः। आगच्छ मण्डले चास्मिन्, मम सर्वार्थसिद्धये॥

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः । स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्चः योनिमसतश्च विवः ॥ हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणपूजितम् । आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम् ॥

श्री ब्रम्हाजी - ॐ नमस्ते परमं ब्रह्मा, नमस्ते परमात्ने । निर्गुणाय नमस्तुभ्यं, सदुयाय नमो नमः।।

विष्णु- शान्ताकारं भुजगशयनं, पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं, मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं, योगिभिर्ध्यानगम्यं, वन्दे विष्णुं भवभयहरं, सर्वलोकैकनाथम्॥

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं। नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणं॥ सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली। गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः॥

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः, श्नप्त्रे स्थो विष्णोः, स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि, वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

शिव- वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं, वन्दे जगत्कारणम्, वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं, वन्दे पशूनाम्पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं, वन्दे मुकुन्दप्रियम् , वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं, वन्दे शिवं शङ्करम्॥

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

पूजन - ॐ त्र्यक्षरं त्रिगुणाधारं सर्वाक्षरमयं शुभम् प्रणवं प्रणवं हंसं स्रष्टारं परमेश्वरम्
अनादिनिधनं देवमप्रमेयं सनातनम् परं परतरं बीजं निर्मल निष्कलं शुभम्

महामृत्युंजय मंत्र- ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

श्री कार्तिकेय - ॐ शारवाना-भावाया नमः, ज्ञानशक्तिधरा स्कंदा , वल्लीईकल्याणा सुंदरा। देवसेना मनः कांता, कार्तिकेया नामोस्तुते ।

अशोक सुंदरी - ॐ जयन्ती मङ्गलमय्या अशोक सुन्दरी देवी । त्रिपुराम्बिका रूपिणी त्रिलोकी जननी ।।

ॐकार - ॐकार बिंदु संयुक्तं नित्यं ध्यायंति योगिनः। कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः॥ ॐ ॐकार नमः स्वाहाः ।

पंचॐकार - ॐ ब्रह्मदेवि च गायत्री तथा गोवेर्धनेश्वेरः । प्रथ्वी यज्ञ पतिश्चैतान् पन्चोन्कार नमाम्यहं ॥ ॐ पंचॐकार नमः स्वाहाः ।

दुर्गा- दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥ ॐ दुर्गे नमः स्वाहा। ।

ॐ जयंती मंगला काली, भद्रकाली कपालिनी । दुर्गा क्षमा शिवा धात्री, स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।। ॐ दुर्गे नमः स्वाहाः ।

सरस्वती- शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमां, आद्यां जगद्व्यापिनीं, वीणापुस्तकधारिणीमभयदां, जाड्यान्धकारापहाम्।

हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं, पद्मासने संस्थिताम्, वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं, बुद्धिप्रदां शारदाम्॥ ॐ सरस्वती नमः स्वाहाः ।

ॐ सरस्वति नमस्तुभ्यं, वरदे कामरूपिणि। विद्यारम्भं करिष्यामि, सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥ ॐ सरस्वती नमः स्वाहाः ।

लक्ष्मी- आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं, सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो मऽआवह॥ ॐ लक्ष्मी नमः स्वाहाः ।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रे, पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽ इषाण, सर्वलोकं म ऽ इषाण।। ॐ लक्ष्मी नमः स्वाहाः ।

ॐ सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो, धन धान्यः सुतान्वितः । मनुष्यो मत्प्रसादेन, भविष्यति न संशयःॐ । ॐ लक्ष्मी नमः स्वाहाः ।

अष्टलक्ष्मी कुबेर मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं कुबेराय अष्ट-लक्ष्मी मम गृहे धनं पुरय पुरय नमः॥

कालभैरव जी - ॐ ह्रीं वां बटुकाये, क्षौं क्षौं आपदुद्धाराणाये, कुरु कुरु बटुकाये, ह्रीं बटुकाये स्वाहा।

काली- कालिकां तु कलातीतां, कल्याणहृदयां शिवाम्। कल्याणजननीं नित्यं, कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥

काली महाकाली कालिके परमेश्वरी सर्वानन्दकरी देवी नारायणि नमोऽस्तुते ॐ क्रीं काल्यै नमः।

गङ्गा- विष्णुपादाब्जसम्भूते, गङ्गे त्रिपथगामिनि। धर्मद्रवेति विख्याते, पापं मे हर जाह्नवि॥

काली- कालिकां तु कलातीतां, कल्याणहृदयां शिवाम्। कल्याणजननीं नित्यं, कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥ ॐ कालिके नमः स्वाहाः ।

तीर्थ- पुष्करादीनि तीर्थानि, गङ्गाद्याः सरितस्तथा। आगच्छन्तु पवित्राणि, पूजाकाले सदा मम॥

नवग्रह- ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशीभूमिसुतो बुधश्च । गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः,सर्वेग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥ ॐ नवग्रह नमः स्वाहाः।

षोडशमातृका- गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोकमातरः ॥

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः, आत्मनः कुलदेवता। गणेशेनाधिका ह्येता, वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ॥ ॐ षोडशमातृका नमः स्वाहाः ।

चतुःषष्टियोगिनी - आवाहयाम्यहं देवीर्योगिनीः परमेश्वरीः । योगाभ्यासेन संतुष्टाः परं ध्यानसमन्विताः ॥ दिव्यकुण्डलसंकाशादिव्यज्वालास्त्रिलोचनाः । मूर्तिमतीर्ह्यमूर्ताश्च उग्राश्चैवोग्ररुपिणीः ॥ अनेकभावसंयुक्ताः संसारार्णवतारिणीः। यज्ञे कुर्वन्तु निर्विघ्नं श्रेयो यच्छन्तु मातरः ॥ ॐ चतुःषष्टियोगिनीभ्यो नमः स्वाहाः ।

सप्तमातृका- कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा, सिद्धिः प्रज्ञा सरस्वती। माङ्गल्येषु प्रपूज्याश्च, सप्तैता दिव्यमातरः॥ ॐ सप्तमातृका नमः स्वाहाः

पंचकन्या मंत्रः अहल्या द्रौपदी कुंती तारा मंदोदरी तथा। पंचकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातकनाशिनीः ॥

वास्तोष्पतिम् - ॐ वासतोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः । यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव दविपदे शं चतुष्पदे ॥

नागपृष्ठं समारूढं, शूलहस्तं महाबलम् । पातालनायकम् देवं, वास्तुदेवं नमाम्यहम्॥ ॐ वासतोष्पतये नमः नमः स्वाहाः ॥

क्षेत्राधिपतिम् - ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः । एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्य वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः ॥

भूतप्रेतपिशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम् । आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः ॥

क्षेत्रपालात्रमस्यामि सर्वारिष्टनिवारकान्। अस्य यागस्य सिद्ध्यर्थं पूजयाराधितान् मया॥ ॐ क्षेत्राधिपतये नमः स्वाहाः ।

सर्प - ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च प्रथिवी मनु । ये अंतिरिक्षे ये दिवि तेभ्योः सर्पेभ्यो नमः ॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः स्वाहाः ।

नरसिंह- ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम्॥ ॐ नरसिंह नमः स्वाहाः ।

ॐ नमो भगवते तुभ्यं पुरुषाय महात्मने हरिंऽद्भुत सिंहाय ब्रह्मणे परमात्मने। ॐ नरसिंह नमः स्वाहा। ।

सप्त चिरंजीवी मंत्र - अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः। कृपः परशुरामश्चैव सप्तैते चिरंजीविनः॥

सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्। जीवेद् वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः॥ ॐ सप्त चिरंजीवी नमः स्वाहाः ।

शेष सनत कुमार - ॐ शेषः सनत्कुमारश्च सान्ख्यायन पराशरौ | ब्रहस्पतिश्च मैत्रैय उद्धवंश्चात्र कर्मणि ॥

प्रत्युह व्रन्दं सततं हरन्तां पूजिता मया | अनया पूजया इमे देवाः प्रीयन्तां न मम ॥ ॐ शेष सनत कुमार नमः स्वाहाः ।

पौराणिक पूजन - ॐ त्रय्यारुणिः कश्यपश्च राम शिष्यो अ क्रत व्रणः | वैशम्पायन हारीत षड्वै पौराणिका इमे ॥ ॐ पौराणिक नमः स्वाहाः ।

लोक पूजन - ॐ अतलं वितलं चैव नितलं सुतलं तथा | तलातलं रशातलं पातालं पूजयाम्यहम् ॥

ॐ जन्लोकस्त पोलोकः सत्यलोको विराजते | भूर्भुवः स्वर्लोको महर्लोक इति स्मृतः ॥ ॐ चतुर्दशलोकान् नमः स्वाहाः ।

दशावतार पूजन - ॐ मत्स्यं कुर्म वराहं च नरसिहं त्रिविक्रमम् | रामं परसु रामं च कृष्णं च बौद्धं चैव सकल्किनम् ॥

गतो अ स्मि शरणं देवं हरि नारायणं शुभम् | प्रणतो अ स्मि जगन्नाथं समे विष्णुः प्रसीदतु ॥ ॐ दशावतार नमः स्वाहाः ।

परमेश्वरम् - ॐ त्र्यक्षरं त्रिगुणाधारं सर्वाक्षरमयं शुभम् त्र्यणवं प्रणवं हंसं सष्टारं परमेश्वरम्

अनादिनिधनं देवमप्रमेयं सनातनम् परं परतरं बीजं निर्मलं निष्कलं शुभम् | ॐ परमेश्वरम् नमः स्वाहाः ।

श्रीकृष्ण - वसुदेवसुतं देवं, कंसचाणूरमर्दनम्। देवकी परमानन्दं, कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्। ॐ कृष्णाय नमः स्वाहाः ।

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने । प्रणतः क्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः || ॐ कृष्णाय नमः स्वाहाः ।

सच्चिदानंद रूपाय विश्वोत्पत्यादिहेतवे! तापत्रय विनाशाय श्री कृष्णाय वयं नुमः|| ॐ श्री कृष्णाय नमः स्वाहाः ।

भागवतं पुस्तक पीठः पूजन - श्री मद् भागवतं शास्त्रं विष्णु रूपं यदुच्यते | तदहं सप्रवक्ष्यामि विशेषेण सुरानद्य || ॐ श्री भागवतं नमः स्वाहाः ।

धन्यं भागवतं शास्त्रं यस्मिन्भाति जनार्दन | धन्यास्ते वैष्णवा लोके ये शृण्वन्ति कथा मिमाम् || ॐ श्री भागवतं नमः स्वाहाः ।

तुलसी पूजन - तुलसि श्रीसखि शुभे पापहारिणि पुण्यदे । नमस्ते नारदनुते नारायणमनःप्रिये ॥ ॐ तुलसि नमः स्वाहाः ।

श्रीं श्याम मंत्र - ॐ श्याम देवाय बर्बरीकाय हरये परमात्मने । प्रणतः क्लेशनाशाय सुहृदयाय नमो नमः|| ॐ श्याम देवाय नमः स्वाहाः ।

पितृ मंत्र - ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृप्यन्त पितरः पितरःशुन्धध्वम् ॥
ॐ पितृभ्यश्च नमः स्वधाः
ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।। ॐ पितृभ्यश्च नमः स्वधाः
ॐ पितृ गणाय विद्महे जगतधारिणे धीमहि तन्नो पित्रो प्रचोदयात्। ॐ पितृभ्यश्च नमः स्वधाः
ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।। ॐ पितृभ्यश्च नमः स्वधाः ॥

महामृत्युंजय मंत्र- ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ ॐ त्र्यम्बकं नमः स्वाहाः ।

गायत्री मंत्र - ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ गायत्र्यै नमः स्वाहाः ।
भगवान विष्णु या कृष्ण : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय स्वाहाः |
पूर्णमासी की आहुति - ॐ अग्नेय स्वाहाः | ॐ अग्नीषोमाभ्यां स्वाहाः | ॐ विष्णवे स्वाहाः |
अमावस्या की आहुति - ॐ अग्नेय स्वाहाः | ॐ इन्द्राग्निभ्यां स्वाहाः | ॐ विष्णवे स्वाहाः |

» दैनिक अग्निहोत्र की प्रधान आहुतियां - प्रातः कालीन आहुति के मन्त्र
इन मन्त्रों से घृत के साथ साथ सामग्री आदि अन्य होम द्रव्यों की भी आहुतियां दें।
ओम् ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा॥१॥
ओम् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा॥२॥
ओम् ज्योतिः सूर्यः सुर्योज्योति स्वाहा॥३॥
ओम् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरूषसेन्द्रव्यता जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा॥४॥

» प्रातः कालीन आहुति के शेष समान मन्त्र - व्याहृति होम : (आज्याहुति)

ओम् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय - इदं न मम॥१॥
ओम् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय -इदं न मम॥२॥
ओम् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय -इदं न मम॥३॥
ओम् भूभुर्वः स्वरिग्नवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः - इदं न मम॥४॥
ओम् आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूभुर्वः स्वरों स्वाहा॥५॥
ओम् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरू स्वाहा॥६॥
ओम् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।यद भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा ॥७॥
अग्ने नय सुपथा राय अस्मान विश्वानि देव वयुनानि विद्वान।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्ति विधेम स्वाहा॥८॥

» सायं कालीन आहुति के मन्त्र
ॐ सजूर्देवेन सवित्रा सजुरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ॥४॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।धियो योm नः प्रचोदयात् स्वाहा ॥
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

===

गुगल होम - हाथ मे जल ले - संकल्प ले - अद्य पूर्वोच्चराति एवं गुण विषेशेन् विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नो अमुक नाम मम ग्रहे भूत प्रेत पिशाच दोष परिहारार्थं त्र्यम्बक मन्त्रेन गुग्गल होम महं करिष्ये |

<u>तीन आहुति</u> गुगल - ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् | उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ||

सर्षप होम - हाथ मे जल ले - संकल्प ले - अद्यपूर्वोच्चराति एवं गुण विषेशेन् विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नो अमुक नाम मम ग्रहे सर्वारिष्ट परिहारार्थ् सर्वशत्रु बलक्षयार्थ्म सर्षपहोम महं करिष्ये |

<u>तीन आहुति सरसों -</u>
ॐ सर्वा बाधा विनिर्मुक्तो धन-धान्य सुतान्वितः। मनुष्यो मत्प्रसादेन, भविष्यति न शंसयः॥
ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिव व्रत्रहा शूर विद्वान| जहि शत्रू 2 रप म्रधो नुदस्वाथाभयं क्रणुहि विश्वतो नः स्वाहा ||

रोगनाशक मंत्र, <u>तीन आहुति -</u> काली मिर्च
"रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।"

तिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नो अमुक नाम मम ग्रहे अलक्ष्मी विनाशार्थ दशविध लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं लक्ष्मी होम मह करिष्ये |

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रेपाश्र्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् इष्णन्निषानाऽमुं म इषाण सर्वलोकं मऽइषाण |ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा || or श्री सूक्तम से १६ कमल गट्टा या खीर

अघोर मन्त्र - ॐ अघोरेभ्यो अथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः | सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा ||

अथउत्तर पूजनम् - हाथ मे जल ले - संकल्प ले - अद्यपूर्वोच्चराति एवं गुण विषेशेन् विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नो अमुक नाम कृतस्य कर्मणः साङ्गता सिध्यर्थ स्थापित देवतानां मृडागनेश्चोत्तर पूजनं करिष्ये | गणेशात रुद्र कलश सहित मृडाग्नि पर्यन्त स्थापित देवताभ्यो नमः उत्तर पूजनार्थे सर्वो पचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि |

==खीर पूड़ी से २८ आहुति गायत्री मन्त्र से दें - "ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।" ==

घृत भात या खीर / पका हुआ भोजन आहुति

ॐ अग्नेय स्वाहा | ॐ सोमाय स्वाहा | ॐ अग्नेषोमाभ्यो स्वाहा | ॐ धन्वन्तरये स्वाहा |ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा | ॐ कुहवै स्वाहा | ॐ अनुम्त्यै स्वाहा | ॐ द्यावाप्रथिवीभ्यां स्वाहा | ॐ प्रजापतये स्वाहा | ॐसहद्यावाप्रथिवीभ्यां स्वाहा | ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।। पेज न. 168 भूतयज्ञ ,

स्विष्टकृध्दोमः - एक लड्वा , हलवा,भात, मिठाई, भोज्य पदार्थ पर बूँद घी की डाल कर दें | वेदी के पास रखी कुशाओं को मन्त्र द्वारा घी में भिगोकर हवन करे

यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्दधयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा।। ॐ अग्नेय स्विष्ट क्रते स्वाहा इदमग्ने स्विष्ट क्रते न मम |

इति हुतशेषा अज्यस्य प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षेपः |

प्रायशिच्त होम - अद्यपूर्वोच्चराति एवं गुण विषेशेन् विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नो अमुक नाम (अमुक कर्मणि) न्युनातिरिक्त दोष सकल दोष वा परिहारार्थं यथा संख्या प्रायशिचत् होममहं करिष्ये |

प्रायश्चित्तसंज्ञक ये पञ्चमहावारुणी होम करे : यजमान शाकल्य का हवन करे - ब्राहमण या अन्य कोई घी छोड़े

ॐ भूः स्वाहा | ॐ भुवः स्वाहा | ॐ स्वः स्वाहा | ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा |

ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासि सीष्ठाः। यजिष्ठो वहिनतमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा॰सि प्रमुमुध्यस्मत् स्वाहा, --इदमग्नीवरुणाभ्याम् ॥

ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुण॰ रराणो वीहि मृडीक॰सुहवो न एधि स्वाहा, ---इदमग्नीवरुणाभ्याम् ॥

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमया असि | अया नो यज्ञ ॰ वहास्ययानो धेहि भेषज ॰ स्वाहा, - इदमग्नये॥

ॐ ये ते शतँवरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा, --

इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः॥

ॐ उदुत्तमँवरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम॰श्रथाय | अथा व्वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा,--- इदं वरुणाय ॥

ओम् प्रजापतये स्वाहा | इदं प्रजापतये - इदं न मम॥

दीपदान - आटे के 15 दीपक गोल 1 चौमुहा तैयार करके जलाकर पूजन करे |

बलि प्रदान -

एक तन्त्रेण दशदिक्पाल बलिदान - एक पत्तल पर घी की बत्तियाँ जलाकर उड़द , दही, पापड़, मुंगोड़ी सेव रख कर निम्न मन्त्र से बलि प्रदान करें। ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहाव्वाचयै दिशे स्वाहा , दक्षिणायै दिशे स्वाहाव्वाचयै दिशे स्वाहा , प्रतीच्यै दिशे स्वाहाव्वाचयै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे , स्वाहाव्वाचयै दिशे स्वाहोध्वायै दिशे स्वाहाव्वाचयै दिशे स्वाहाव्वाचयै दिशे स्वाहाव्वाचयै दिशे स्वाहा |

ॐ इन्द्रादि दशदिक्पालान साड़ंगान सपरिवारान सायुधान सशक्ति कान् एभिर्गन्धाक्षत पुष्पैः अहं पूजयामि | ॐ इन्द्रादि दश दिक्पालेभ्यः सदङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः एतान् सदीपान् दधिमाष भक्तबलीन् समर्पयामि | भो भो इन्द्रादि दशदिकपालाः दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरुत | आयुः कर्तारः क्षेम कर्तारः शान्ति कर्तारः पुष्टि कर्तारः तुष्टि कर्तारः निर्विघ्न कर्तारः कल्याण कर्तारो वरदा भवत | अनेन बलिदानेन इन्द्रादि दशदिकपालाः प्रीयान्ताम् ||

हाथ में जल लेकर जल छोड़े| और हवन वेदी के चारों ओर रखें|

एक तन्त्रेण नवग्रह बलिदान - इसी तरह १ बत्ती दही उरद के साथ लेकर जल छोड़कर नवगृह को बलि प्रदान करें - नवगृह के पास रखें|

ॐ ग्रहाअउर्ज्जाहुतयो व्वयन्तो विप्प्राय मतिम् | तेषां विशिप्प्रियाणां वो हमिषमुर्ज गुं समग्र भमुपयाम ग्रहीतो सीन्द्राय त्वा जुष्टङ्ग्रहन्नाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ||

ॐ सूर्यादि नव ग्रहेभ्यः साड़ंगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेवता प्रत्यधि देवता गणपत्यादि पन्च लोकपाल वास्तोष्पति सहितेभ्यः इदं एतम सदीपं दधिमाष् बलिं समर्पयामि | भो सूर्यादि नवग्रहाः साड्न्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः अधिदेवताः प्रत्यधि देवता गणपत्यादि पन्च लोकपाल वास्तोष्पति सहिता इमं बलिं ग्रहणीत मम / यजमानस्य सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्तारः क्षेम कर्तारः शान्ति कर्तारः पुष्टि कर्तारः तुष्टि कर्तारः निर्विघ्न कर्तारः कल्याण कर्तारो वरदा भवत | अनेन बलिदानेन सूर्यादि नवग्रहाः प्रीयन्ताम् ||

अथ वास्तु बलिदान मन्त्र - ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीद्यस्मान स्वावेशो अनमी वो भवानः | यत्वे महे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ||

ॐ शिख्यादि वास्तु मण्डल देवता सहिताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय वास्तु पुरुषाय इमं सदिपम् आसादितं बलिं समर्पयामि ।।

ॐ शिख्यादि वास्तु मण्डल देवता सहित वास्तु पुरुष इमं बलिं ग्रहन । मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरु । आयुः कर्ता क्षेम कर्ता शान्ति कर्ता पुष्टि कर्ता निर्विघ्न कर्ता कल्याण कर्ता वरदो भव ।

अनेन बलिदानेन शिख्यादि वास्तु मण्डल देवता सहित वास्तु पुरुषः प्रीयताम् ।।

हाथ में जल लेकर जल छोड़े

अथ मातृका बलिदान मन्त्र - ॐ समक्ष्ये देव्व्याधिया सन्दक्षिण योरुचक्षसा । माम आयुः प्रमोषीर्म्मो अअहन्त वव्वीरं व्विदेयतव देवीसन्द्रशि ।।

भो वसोर्द्धारा सहित स गणेश गौर्यादयः षोडश मातरः इमं बलिं ग्रहणीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्त्र्य क्षेम कर्त्र्य शान्ति कर्त्र्य पुष्टि कर्त्र्य तुष्टि कर्त्र्य निर्विघ्न कर्त्र्य कल्याण कर्त्र्य वरदा भवत ।।

अनेन बलिदानेन वसोर्द्धारा सहित स गणेश गौर्यादयः षोडश मातरः प्रीयन्तांमम् ।।

{{

अथ प्रधान बलिदान मन्त्र - प्रधान देवता मन्त्र से बलिं प्रदान करे ।

अनेन बलिदानेन प्रधान देवता नाम प्रीयन्तांमम् ।।
}}

क्षेत्रपाल बलिदान मन्त्र - 1 मिट्टी के पियाले मै 4 मुख की बत्ती जला ले

एक मिट्टी के कुंडे में 1 पत्तल पर क्षेत्रपाल बना लें उसमें चौमुहा दीपक रखें उसमें सरसों का तेल डालें दीपक जलाकर उसमें सिंदूर, उरद , पापड़ , दही, गुड़ , सुपारी , काजल लगा कर दीपक पूजा करें । _(जल - रोडी - अक्षत - फूल - नैवेद्य - आचमन - दक्षिणा चढा दे)_

प्रार्थना करें -

ॐ नहि स्पशम विदन्नन्य मस्मा द्वैश्वा नरा त्पुर एतार मग्नेः । एमेनमव्रधन्नमता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्र जित्ययाय देवाः ।।
ॐ क्षेत्रपालाय नमः आवाहयामि स्थापयामि सर्वोपचार्थे पूजयामि ।।
ॐ क्षेत्रपाल महाबाहो महाबल पराक्रमः । क्षेत्राणां रक्षणार्थाय बलिं नय नमॉस्तुते ।।

हाथ मै जल लेकर कहे - मन्त्र बोले
ॐ क्षेत्रपालाय साङ्गाय भूत प्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनी पिशाचनी मारीगण बेतालादि परिवार सहिताय सायुधाय सशक्तिकायसवाहनाय इमं सचतुर्मुखदीप दधि भक्त बलिं समर्पयामि । भो क्षेत्रपाल सर्वतो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरु । आयुः कर्ता क्षेम कर्ता शान्ति कर्ता पुष्टि कर्ता निर्विघ्न कर्ता कल्याण कर्ता वरदो भव ।
अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयन्तां ।।
जल छोडे

(दुर्गा पूजन समय कुष्माण्ड बलि दें) उसके बाद नाई या नौकर पत्तल सहित दीपक को उठाकर यजमान के उप्पर पीठ की ओर से ३ बार उतार कर घर से बाहर ले जाकर दीपक को चौराहे रख दे हाथ पॉव धोकर घर में आवे । इसके बाद नौकर या नाई को दक्षिणा दें ।

नाई दीपक ले जाए तो यजमान उसके ऊपर पीली सरसों छिड़के दें । या जल छिड़के मन्त्र बोले -
ॐ भूताय त्वा नारातये स्वरभि विख्येषं द्र गुं हन्तां दुर्याः प्रथिव्या मुर्वन्त रिक्ष मन्वेमि प्रथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाम्य दित्या उपस्थेअग्ने हव्य गुं रक्ष ।।

ॐ हिन्काराय स्वाहा हिन्क्रताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा वक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहो पविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा व्वल्गते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कुजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विज्रम्भ मानाय स्वाहा विच्रताय स्वाहा स गुं हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहा यनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ।।
शांति पाठ करें नाई के आने पर
यजमान 3 बार आचमन करें तथा नाई या नौकर हाथ पॉव धोकर घर में आवे / स्नान करें
उसके बाद स्विष्ट कृत हवन करे - घी की १ आहुति बताशा या लड्डू के साथ दे
ॐ अग्नेय स्विष्टकृते स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ।

पूर्णाहुति संकल्प - : कुश - अक्षत - जल लेकर संकल्प करे - अद्य अमुक गोत्रः अमुक नमाहम मम मनोभिलषित धर्मार्थ कामादि यथेप्स्थितायु रारोग्यैश्वर्यं पुत्र पशु सखी सुहत सम्बन्धि बन्ध्वादि प्राप्तये अस्मिन् कर्मणि आवाहित देवतानां प्रीतये च दत्तैताभिः आहुतिभिः परिपूर्णता सिद्धये पूर्णाहुति होमं च करिष्ये ।।

नारियल / गोला में छेद करके घी या शाकल्य भरें । नारियल में कलाई या लाल वस्त्र लपेट कर सामने रख कर पञ्चोपकार पूजन कर दें - गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।
सुचि पर पान , शाकल्य व नारियल जिसमें घी डाल कर मोली में लपेट कर रखें ऊपर सुवे को उलटा रख कर मंत्र बोले -

» पूर्णाहुति
इस मन्त्र से तीन बार घी से पूर्णाहुति करें सुचि में सुपारी या नारियल घृत समेत रखकर पूर्णाहुति दें।
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णसदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते स्वाहा ।।1।।
ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणा वहाऽइषमूर्ज गुं शतक्रतोः स्वाहा ।।3।।
ॐ सर्वं वै पूर्ण गुं स्वाहा।

आसन पर बैठ जाये
जो कुशा वेदी के चारों ओर विछाया है । उसे उसी क्रम से उठा कर घी में बोर कर अग्नि में डाल दें ।
ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित। मनसस्पतऽइमं देव यज्ञं स्वाहा वाते धाः स्वाहा ।।" (यजुर्वेदः---08.21)

» **वासोध्दारा मन्त्र** - कटोरी का बचा है उसे हवन में डाल कर घी की धार दें , घी की धारा सुचि के

ॐ वसो पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्र धारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा ।

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।।

स्थंडिले प्रदक्षिणा मन्त्र - सपत्नीक यजमान अग्नि की १ परिक्रमा / प्रदक्षिणा करें या फूल लेकर ३ बार अग्नि के ऊपर घुमाकर रखें -

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम॥

(भस्म रुद्र कलश को अर्पण की जा सकती है | अन्य देवताओं को नहीं | शेष यजमान के लिए)

() भस्म धारण - सुवा से यज्ञ भस्म लेकर अनामिका उंगली से निम्न मन्त्रों द्वारा ललाट, ग्रीवा, दक्षिण बाहुमूल तथा हृदय पर लगावें।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे । ॐ कश्चपस्य त्रायुषमिति ग्रीवायाम् । ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिण बाहुमूले । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि ।

तर्पण - मर्जन करे -

तर्पण - हवन सामग्री (शाकल्य) वाले (थाली - परात) पात्र मै थोडा स जल लेकर --- कुशा से बोर बोर कर इस जल को अग्नि पर **28** बार गायत्री मन्त्र से छिडके (**"ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्"**)

मार्जन - इसी तरह थाली का जल कुशा से बोर बोर **28** बार अग्नि पर छिडके ||
(**"ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्"**)

() घृत अवघ्राण - प्रणीता में 'इदं न मम' के साथ टपकाकर घृत को हथेलियों में लगाकर अग्नि में सेंकें और उसे सूंघें तथा मुख, नेत्र, कर्ण आदि पर लगावें।

मन्त्र - **ॐ तनूपाअग्नेऽसि तन्व मे पाहि । ॐ आयुर्दाअग्नेऽस्यायुर्मे देहि । ॐ वर्चोदाअग्नेसि वर्चो में देहि । ॐ अग्ने यन्ने तन्वाऽऊनन्तन्म आपृण । ॐ मेधां मे देव सविता आदधातु । ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु । ॐ मेधां अश्विनौ देवां वाधतां पुष्कर स्रजौ ।**

गायत्री मन्त्र बोलते हुए घृत मुखमण्डल पर लगाना और सूंघना चाहिए।

पूर्णपात्रदानम् : चार पूर्णपात्र एक घी का पात्र , दूसरा शक्कर का पात्र , तीसरा चावल का पात्र , चौथा तिल का पात्र इन सब में दक्षिणा व यज्ञोपवीत रखकर संकल्प करके एक पात्र ब्रह्माजी को , दूसरा आचार्य महोदय को , तीसरा व चौथा अन्य ब्राह्मणों को दें ।

अद्य क्रतस्य अस्य कर्मणः सिध्यर्थम् ब्रह्मन् मिदं पूर्ण पात्रं सदक्षिणाकं प्रजापति दैवतं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

ब्रह्मा जी की गॅाठ खोल दें - कुशा मैं गॅाठ लगा कर जो रखा है उस गॅाठ को खोल दें ।

जल छिड़के - प्रणीता पात्र के जल को पवित्रद्वय से यजमान के ऊपर छिड़के
" ॐ सुमित्रिया न आप ओषधय : सन्तु "

यह मन्त्र बोलकर ईशान कोण में प्रणितापात्र को ओंधा कर दें । : **ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टियं यं च वयं दविष्म ।**

प्रणिता उलटने के बाद गिरे हुए जल को यजमान कुश पत्रद्वय से अपने ऊपर छिड़के ।
ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्त तमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ॥

वेणी रुप उपनयन कुशा को अग्नि मै डाल दे ||

आज्यपात्र दानं = घी का पात्र दान करना ||

गोदान संकल्प = : यजमान तथा पत्नी दाहिने बैठकर , कुश - अक्षत - जल - द्रव्य - लेकर गौ के आभाव मैं निष्क्रय द्रव्य संकल्प

अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुन्यतिथो अमुक गोत्रः अमुक नामाहम् क्रत्स्य कर्मणः सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थम च गोनिषक्रय भूतम् इदं द्रव्यं अमुक गोत्राय अमुक नामाहम ब्रह्मनाय तुभ्य सम्प्रददे ।

ब्राहमण कहे - || स्वस्ति ||

आचार्य हवन दक्षिणा दान - कुश - अक्षत - जल - द्रव्य - लेकर आचार्य पुरोहित की दक्षिणा संकल्प करे ।

अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुन्यतिथो अमुक गोत्रः अमुक नामाहम् क्रत्स्य कर्मणः सिध्यर्थम् फलावाप्तये च आचार्याय इमां मन सोद्दिष्टां दक्षिणां दातु मह मुत्स्रजे ॥

भूयसी दक्षिणा दानं संकल्प = बहुत अधिक दक्षिणा" या "बड़ी दक्षिणा"। यह शब्द धार्मिक कृत्यों के अंत में ब्राह्मणों को दी जाने वाली बड़ी दक्षिणा || - कुश - अक्षत - जल - द्रव्य - लेकर संकल्प
अद्य शुभ पुन्यतिथो अमुक गोत्रः अमुक नामाहम् क्रत्स्य कर्मणः न्यूनातिरिक्त दोष परिहारार्थम् इमां भूयसी दक्षिणां नानानाम गोत्रेभ्यो ब्राहमणेभ्यो दीना नाथेभ्यश्च विभज्य यथाकाले दातु मह मुत्सृजे ।

श्रेयो दानं ="कल्याण के लिए दान" या "श्रेष्ठ दान"
कुश - अक्षत - जल - द्रव्य - लेकर संकल्प || **अद्य विशिष्टायां शुभ पुन्यतिथो अमुक गोत्रः अमुक नामाहम् क्रतस्य अस्य कर्मणः सिध्यर्थम् आचार्यत्वं तदुत्पन्नं श्रेयः तत् अमुना साक्षतेन सजलेन पुन्गीफलेन् तुभ्यमहं सम्प्रददे ।**

ब्राहमण भोजन संकल्प -

विशेषण विशिष्टायां शुभ पुन्यतिथो अमुक गोत्रः अमुक नामाहम् क्रत्स्य कर्मणः साङ्गता सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्तयर्थम यथासन्ख्याकान् ब्रहमणान् यथा शक्ति भोज् नान भोजयिष्ये | भोजनान्ते क्रतस्य अमुक कर्मणः सान्गता सिद्ध्यर्थं नाना गोत्रेभ्यो ब्राहमणभ्यो दक्षिणां च दास्ये |

यजमान अभिषेक मंत्र -

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्. सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा सामाज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ||

"देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे अश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा सामाज्येनाभिषिञ्चामि ||

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे अश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनौर्भैषज्जयेन तेजसे ब्रह्म व्वर्च्च साया भिषिन्चामि सरस्वत्यै भैषज्जयेन व्वीर्य्या यान्नाद्यायाभि षिन्चा मीन्द्र स्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसे अभिषिञ्चामि ||

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः, स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु। - २५.१९ ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु, पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ - १८.३६

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः, श्नप्त्रे स्थो विष्णोः, स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि, वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ - ५.२१

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता, सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता, वसवो देवता रुद्रा देवता, ऽऽदित्या देवता मरुतो देवता, विश्वेदेवा देवता, बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता, वरुणो देवता॥ -१४.२०

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः, पृथिवी शान्तिरापः, शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः, शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः, सर्व [illegible] शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि॥ -३६.१७

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्नऽआ सुव। ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः॥ सर्वारिष्टसुशान्तिर्भवतु। -३०.३

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः, पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि, जातवेदः पुनीहि मा।

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्था न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥१॥

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥२॥

तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥३॥

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः ॥४॥

|| अमृताभिषेकोअस्तु | शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चाअस्तु ||

आरती - वैदिक आरती

हाथ धोकर आचमन करें - नया दीपक बनायें , कपूर दीपक बनायें , थाली फूलों या रंग से सजाकर दौनो या एक दीपक रखें आरती करें |

ओं एतन्ते देव सावितर्यज्ञं प्राहुबृस्तये बृहमणे तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव| - Eshwar ke haath saaf

ॐ यं ब्रहम वेदान्त विदो वदन्ति परम् प्रधानम् पुरुषम् तथान्ये विश्वोदगते कारणमईश्वरम् वा तस्मै नमो विघ्न विनाशनाय | eswar ki namskar

शुभम करोति कल्याणं, आरोग्यं धन संपदाम्, शत्रु बुद्धि विनाशाय, दीपं ज्योति नमोस्तुते।। Deepak jalana

[illegible]

ॐ ज्वलमालिन्यै नमः रत्नेश्वरी नमः | श्री विष्णवै नमः पुराण पुर्षोत्तमाय नमः । [illegible] अक्षत पुष्पाणिसमर्पयामि,

आरतिकर्म,: **हरिः ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत । श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ||** *अर्थ है: विराट पुरुष के मन से चंद्रमा, आँखों से सूर्य, कानों से वायु और प्राण तथा मुख से अग्नि प्रकट हुई।*

ॐ इद ँ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ँ सर्वगण ँ स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।।

ॐ आ रात्रि पार्थिव ँ रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदा ँ सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः।। कदलीगर्भसंभूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम् । अरार्तिमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥

Bhagwat aarti - श्री भगवत भगवान की है आरती,..................

यज्ञ आरती- यज्ञ रूप प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए। छोड़ देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिए॥

वेद की बोलें ऋचाएँ, सत्य को धारण करें। हर्ष में हों मग्न सारे, शोक सागर से तरें॥

अश्वमेधादिक रचाएँ, यज्ञ पर उपकार को। धर्म मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को॥

नित्य श्रद्धा- भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें। रोग पीड़ित विश्व के संताप सब हरते रहें॥

कामना मिट जाए मन से, पाप अत्याचार की। भावनाएँ शुद्ध होवें, यज्ञ से नर- नारि की॥

लाभकारी हो हवन, हर जीवधारी के लिए। वायु- जल सर्वत्र हों, शुभ गन्ध को धारण किए॥

स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेम पथ विस्तार हो। 'इदं न मम' का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो॥

हाथ जोड़ झुकाये मस्तक, वन्दना हम कर रहे। नाथ करुणारूप करुणा, आपकी सब पर रहे॥

यज्ञ रूप प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए। छोड़ देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिए॥

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट,दास जनों के संकट,क्षण में दूर करे ॥॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

जो ध्यावे फल पावे,दुःख बिनसे मन का,
सुख सम्पति घर आवे,कष्ट मिटे तन का ॥॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

मात पिता तुम मेरे,शरण गहूं किसकी,
तुम बिन और न दूजा,आस करूं मैं जिसकी ॥॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

तुम पूरण परमात्मा,तुम अन्तर्यामी,
पारब्रह्म परमेश्वर,तुम सब के स्वामी ॥॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

तुम करुणा के सागर,तुम पालनकर्ता,
मैं सेवक तुम स्वामी,कृपा करो भर्ता॥॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति
किस विधि मिलूं दयामय,तुमको मैं कुमति ॥॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

दीन-बन्धु दुःख-हर्ता, ठाकुर तुम मेरे,
अपने शरण लगाओ,द्वार पड़ा तेरे ॥॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

द्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुन्यतिथो अमुक गोत्रः अमुक नामाहम् क्रत्स्य कर्मणः साङ्गता सिदध्यर्थं

विषय-विकार मिटाओ,पाप हरो देवा,
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ,सन्तन की सेवा ॥ॐ जय जगदीश हरे ||

तन मन धन सब कुछ है तेरा ,
तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरो | ||ॐ जय जगदीश हरे ||

श्याम सुन्दर जी की आरती जो कोई नर गावे ,
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे | ॥ॐ जय जगदीश हरे ||

मथुरा में जन्म लियो है गोकुल है अति प्यारो ,
आरति भई सम्पूर्ण बोलो जयकारो || स्वामी जय जगदीश हरे । भक्त जनों के संकट,दास जनों के संकट,क्षण में दूर करे ॥

............///??? नटखट बंसी वाले गोकुल के राजा; मेरी अँखियाँ तरस गयी; अब तोह आजा आजा..नटखट बंसी वाले गोकुल के राजा; मेरी अँखियाँ तरस गयी; अब तोह आजा आजा...

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि|

त्वमेव माता च पिता त्वमेव । त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव । त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव । त्वमेव सर्वम् मम देव देव ॥

सानन्दमानन्दवने वसन्तम , आनन्दकन्दं हतपापवृन्दम्। वाराणसी नाथ मनाथ नाथं , श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये॥

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने। त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।

() प्रदक्षिणा –

चारो ओर घूमकर सभी वेदी पर आरती कर दें ।
आरती की थाली जमीन पर रख दें जल छोड़ दें ।
द्रव्य छोड़कर सब लोग आरती ले लें ।

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषा ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे।। *हे शम्भू!! मेरे द्वारा निषिद्ध कर्म करने से हुई सभी त्रुटियों को क्षमा करें।*

हरिओम जलेन आरती शीतल करणम पुष्पीभिः देवाभिः वन्दनम आरोग्यार्थे आत्माभिः वन्दनम स्वचक्छु वन्दनं ।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः, पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः, सर्वं शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।। सुशान्तिर्भवतु।।

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।।

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव। पुनर्ददताघ्नता जानता सङ्गमेमहि।।

ओ३म् ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः। ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिःसदा नः ।।

पुनन्तु माँ देवजना: पुनन्तु मनसा धियां | पुनन्तु बिश्वा भूतानि पवमान: पुनातु म .

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने । त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहत्वा मन्त्र पुष्पांजलि

पुष्पांञ्जलि - हाथ में फूल लेकर -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र साध्याः सन्ति देवाः।।

गणेश वन्दना

गाइये गणपति जग वन्दन।
शंकर सुवन भवानी नन्दन॥
गाइये गणपति जग वन्दन।
सिद्ध सदन गण वदन विनायक।
कृपा सिन्धु सुन्दर सुखदायक।
मोदक प्रिय मुद मंगल दाता।
विद्या वारिधि बुद्धि विधाता॥
माँगत तुलसी दास कर जोरे।
बसहुँ राम सिय मानस मोरें॥
गाइये गणपति जग वन्दन।

❖❖❖

गुरू स्तवन

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शतं येन तस्मै श्री गुरवे नमः॥
अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानान्जन शलाकया।
चक्षुरुन्त्रिलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

❖❖❖

की जय, अधर्म का नाश हो, विश्व में शान्ति हो, ... भारत माता की, भारत हिन्दू राष्ट्र की जय हो, जै जै जै श्री राधे राधे राधे श्याम ||

ॐ नमः पार्वती पतये, हर-हर महादेवा शम्भू | काल हर, कष्ट हर, दुख हर, दरिद्र हर, सर्व पाप हर ! हर हर महादेव शम्भू

विशेषण विशिष्टायां शुभ पुन्यतिथो अमुक गोत्रः अमुक नामाहम् क्रत्स्य कर्मणः साङ्गता सिद्ध्यर्थं

विषय-विकार मिटाओ,पाप हरो देवा,
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ,सन्तन की सेवा ॥ॐ जय जगदीश हरे ॥

तन मन धन सब कुछ है तेरा ,
तेरा तुझको अर्पण क्या

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र साध्याः सन्ति देवाः ॥

प्रातः कालीन स्तुति

करार विन्देनपदार विन्दं, मुखारविन्दे विनिवेश यन्तम
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं, वालं मुकुन्दं मनसास्मरामि ॥1 ॥
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव
जिह्वे पिवस्वामृतमेत देव, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥2 ॥
विक्रेतु काभा खिल गोपकन्या, मुरारि पादर्पित चित्त वृतिः
दध्यादिकं मोह बशाद वोचद् गोविन्द दामोदर माधवेति ॥3 ॥
गृहे-गृहे गोप वधू कदम्बा, सर्वे मिलित्वा समवाप्य योगे
पुण्यानि नामानि पठन्ति नित्यं गोविन्द दामोदर माधवेति ॥4 ॥
सुखं शयाना निलये निजेअपि नामानि विष्णोः प्रवदन्तिमर्त्या
ते निश्चितं तन्मयतां वृजन्ति गोविन्द दामोदर माधवेति ॥5 ॥
जिह्वे सदैवं भज सुन्दराणि नामानि कृष्णस्य मनोहराणि
समस्त भक्तार्ति विनाशनानि गोविन्द दामोदर माधवेति ॥6 ॥
सुखा वसाने इदमेव सारं दुःख वसाने इदमेव ज्ञेयम्
देहा वसाने इदमेव जाप्यं गोविन्द दामोदर माधवेति ॥7 ॥
जिह्वे रसज्ञे मधुर प्रियात्वं सत्यं हितं त्वां परमं बदामि
आवर्णये त्वान्मधुराक्षराणि गाविन्द दामोदर माधवेति ॥8 ॥
त्वामेव याचे मम देहि जिह्वे, समागते दण्ड धरेकृतान्ते
वक्तव्यमेवं मधुरं सुभक्त्या गोविन्द दामोदर माधवेति ॥9 ॥
श्रीकृष्ण राधावर गोकुलेश गोपाल गोवर्धन नाथ विष्णो
जिह्वे पिवस्वा मृत मेत देव, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥10 ॥

❖❖❖

संकीर्तन धुनें

स्वागतं कृष्णः शरणागतं कृष्णः, स्वागतं सुस्वागतं शरणागतं कृष्णा।
हे केशवः कृष्णः हे माधव कृष्णः, मधु सूदनः कृष्णः मन मोहन कृष्णा।।1।।

गिरिराज धरण प्रभु तेरी शरण, प्रभु तेरी शरण हरि तेरी शरण।।2।।

राधे गोविन्दा जय जय राधे गोविन्दा।
नटवर नागर नन्दा, जय जय राधे गोविन्दा।।3।।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।।4।।

जय राधे राधे गोविन्द, गोविन्द राधे, गोविन्द राधे गोपाल राधे।।5।।

कृष्ण–कृष्ण मुकुन्द जनार्दन, कृष्ण गोविन्द नारायण हरे।।6।।

हरी–हरी गोविन्द नारायण, नारायण हरि नारायण।।7।

जय गोविन्द गोविन्द गोपाला जय मुरली मनोहर नन्दलाला।।8।।

मधुर–मधुर नाम सीताराम सीताराम।
राजा राम राम राम, सीताराम राम राम।।9।।

राधा, राधाकृष्ण राधा।
गोविन्द गोविन्द गोपाला, मुरली मनोहर नन्दलाला।।10।।
हमारो धन राधा श्री राधा श्री राधा।

परमधन राधा राधा राधा राधा राधा।।11।।
गोविन्द मेरो है गोपाल मेरो है।

पुनन्तु माँ देवजनाः पुन
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि ते
ते ॥

हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहत्वा मन्त्र पुष्पांजलि

पुष्पांञ्जलि - हाथ में फूल लेकर -

की, भारत हिन्दू राष्ट्र की जय हो, जै जै जै श्री राधे राधे राधे श्याम ॥
ॐ नमः पार्वती पतये, हर-हर महादेवा शम्भू । काल हर, कष्ट हर, दुख हर, दरिद्र हर, सर्व पाप हर । हर हर महादेव शम्भू

विशेषण विशिष्टायां शुभ पुन्यतिथो अमुक गोत्रः अमुक नामाहम् क्रत्स्य कर्मणः साङ्गता सिदध्यर्थं
विषय-विकार मिटाओ,पाप हरो देवा,
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ,सन्तन की सेवा ॥ॐ जय जगदीश हरे ||

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र साध्याः सन्ति देवाः।।

(30)

देखत ही सिय मूरत को
निज अंग विभूरत खोवन लागे।
मंत्री सबयमानो मौन खड़े
मिथलेश की मूरत जोवन लागे।।
मानो विराग की राख महि
दृग अंजन 'बिन्दु' सो धोवन लागे।
देह की तो मरयाद मिटी
कह जानकी–जानकी रोवन लागे।।

श्रीबाँके बिहारी नन्दलाल मेरो है।12।।

राधे राधे राधे राधे राधे गोविन्दा।
राधे गोविन्दा भजो वृन्दावन चन्दा।।13।।

सब खुशी भये नर नारी।
आज प्रगटे कृष्ण मुरारी।।14।।

आजा आजारे कन्हाई, तेरी याद आई।।15।।

श्री राधे, श्री राधे राधे राधे प्रिया प्रिया ।।16।।

निकुन्ज मे विराजे घनश्याम राधे–राधे।।17।।

राधे बरसाने वारी, तेरो पुजारी है बनवारी।।18।।

राधे–राधे राधे राधे राधे राधे बोल।
वरषाने की गलियन डोल।।19।।

जाने राधे को नाम ले लियो,
श्याम ने बाको भलो कर दियो।।20।।

की, भारत हिन्दू राष्ट्र की जय हो, जै जै जै श्री राधे राधे राधे श्याम ।।
ॐ नमः पार्वती पतये, हर-हर महादेवा शम्भू । काल हर, कष्ट हर, दुख हर, दरिद्र हर, सर्व पाप हर । हर हर महादेव शम्भू

विशेषण विशिष्टायां शुभ पुन्यतिथो अमुक गोत्रः अमुक नामाहम् क्रत्स्य कर्मणः साङ्गता सिदध्यर्थं

विषय-विकार मिटाओ,पाप हरो देवा,

श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ,सन्तन की सेवा ॥ॐ जय जगदीश हरे॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र

साध्याः सन्ति देवाः॥

आरती

आरती बालकृष्ण की कीजै

आरति बाल कृष्ण की कीजै, अपनो जनम सुफल कर लीजै।
श्री यशुदा को परम दुलारो, बाबा की अँखियन को तारो।
गोपिन के प्राणन सो प्यारो, इन पर प्राण न्यौछावर कीजै।।
आरती......

बलदाऊ को छोटो भैया, कनुआ कहि कहि बोलत मैया।
परम मुदित मन लेत बलैया, इन कूँ सरबस अर्पण कीजै।।
आरती....

श्री राधावर कुँअर कन्हैया, ब्रजनन को नवनीत खवैया।
देखत ही मन लेत चुरैया, यह छवि नैनन में भरि लीजैं।।
आरती......

तोतरि बोलन मधुर सुहावै, सखन मध्य खेलत सुख पावै।
सोई सुकृति जो इन कूँ ध्यावे, अब इन कूँ अपनो करि लीजै।।
आरती......

सायं कालीन स्तुति

1. भजै व्रजैक मण्डलं समस्त पाप खण्डनं
स्व भक्त चित्तरंजनं सदैव नन्द नन्दनम्
सुपिच्छ गुच्छ मस्तकं सुनाद वेणु हस्तकम्
अनंग रंग सागरं नमामि कृष्ण नागरम्॥

2. मनोज गर्वमोचनं विशाल लोल लोचनं
विधूत गोप शोचनं नमामि पद्म लोचनं
करार विन्द भूधरं स्मितावलोक सुन्दरं
महेन्द्र मान दारणं नमामि कृष्ण वारणम्॥

3. कदम्ब पुष्प कुण्डलं सुचारु गण्ड मण्डलं
व्रजांग नैक वल्लभं नमामि कृष्ण दुर्लभम्
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया
युतं सुखैन दायकं नमामि गोपनायकम्

4. सदैव पादं पंकजं मदीय मानसे निजं
दधान मुक्त मालकं नमामि नन्द बालकम्
समस्त दोष शोषणं समस्त लोक पोषणं
समस्त गोप मानसं नमामि नन्द लालसम्

5. भुवोभरावतारकं भवाब्धि कर्णधारकं
यशोमति किशोरकं नमामि चित्त चोरकम्
दृगन्त कांत भंगिनं सदासदालि संगिनं
दिने दिने नवं नवं नमामि नन्ददनम्

6. गुणाकरं सुखाकरं कृपापरं कृपापरं
सुरद्विषन्नि कन्दनं नमामि गोपनन्दनम्
नवीन गोपनागरं नवीन केलि लम्पटं
नमामि मेघ सुन्दरं तडित्प्रभालसत्पठम्

7. समस्त गोप नन्दनं हृदम्बुजैक मोदनं
नमामि कुंज मध्यगं प्रसन्न भानु शोभनम्

...की जय, अधर्म का नाश हो, विश्व में शान्ति हो, ...भारत माता की, भारत हिन्दू राष्ट्र की जय हो, जै जै जै श्री राधे राधे राधे श्याम ॥

ॐ नमः पार्वती पतये, हर-हर महादेवा शम्भू । काल हर, कष्ट हर, दुख हर, दरिद्र हर, सर्व पाप हर । हर हर महादेव शम्भू

हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहत्वा मन्त्र पुष्पांजलि

पुष्पांञ्जलि - हाथ में फूल लेकर -

विशेषण विशिष्टायां शुभ पुन्यतिथो अमुक गोत्रः अमुक नामाहम् क्रत्स्य कर्मणः साङ्गता सिदध्यर्थ

विषय-विकार मिटाओ,पाप हरो देवा,

निकाम काम दायकं दृगन्त चारु सायकं
रसाल वेणु गायकं नमामि कुंजनायकम्
8. विदग्ध गोपिकामनोमनोज्ञतल्प शायिनं
नमामि कुंज कानने प्रवृद्ध वह्नि पायनम
किशोर कान्ति रंजितं दृगन्जनं सुशोभितं
गजेन्द्र मोक्ष कारिणं नमामि श्री विहारिणम्
9. यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्ण सत्कथा
मया सदेव गीयतां तथा कृपा विधीयताम्
प्रमाणिकाष्ट कद्वयं जपेत्य धीत्यय: पुमान
भवेत्स नन्द नन्दने भवे-भवे सुभक्तिमान्

❖❖❖

श्री पञ्चाक्षर शिव स्तिुति

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै, 'न' काराय नमः शिवाय ॥1॥
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय, नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय, तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥2॥
शिवाय गौरीवनदाब्जवृन्द, सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥3॥
वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-, मुनीन्द्रेवार्चितशेखराय।
चन्द्राकवैरानरलोचनाय, तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥4॥
यक्ष स्वरुपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय
दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥5॥
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥6॥

❖❖❖

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र
साध्याः सन्ति देवाः।।

श्री रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाण रूपम्, विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम्।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहम्, चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्।।
निराकारओंकारमूलं तुरीयम्, गिराज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम्।
करालं महाकाल, कालं कृपालम्, गुणागार संसारपारं नतोऽहम्।।
तुषाराद्रि संकाश गौरं गंभीरम्, मनोभूत कोटिप्रभा श्री शरीरम्।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारुगंगा, लसद्भाल बालेन्दु कण्ठे भुजंगा।।
चलत्कुण्डलम् शुभ्रनेत्रं विशालम्, प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम्।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालम्, प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशम्, अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणि, भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्।।
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी, सदा सच्चिदानन्द दाता पुरारी।
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।
न यावद् उमानाथ पादारविन्दम्, भजंतीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शाँति सन्तापनाशम्, प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्।।
न जानामि योगं जपंनैव पूजाम्, नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भू तुभ्यम्।
जरा जन्म दुःखौघतातप्यमानम्, प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो।।
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये, ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।

हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहत्वा मन्त्र पुष्पांजलि

पुष्पांञ्जलि - हाथ में फूल लेकर -

की, भारत हिन्दू राष्ट्र की जय हो, जै जै जै श्री राधे राधे राधे श्याम ।।

ॐ नमः पार्वती पतये, हर-हर महादेवा शम्भू । काल हर, कष्ट हर, दुख हर, दरिद्र हर, सर्व पाप हर । हर हर महादेव शम्भू

मधुराष्टक

अधरं मधुरं, वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतंरखिलं मधुरम् ॥1॥
वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं बलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥2॥
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥3॥
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥4॥
करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥5॥
गुंजा मधुरा माला मधुरा, यमुना मधुरा बीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥6॥
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥7॥
गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥8॥

गोपीगीत

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावका स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ॥१॥
शरदुदाशये साधुजातसत् सरसिजोदरश्रीमुषा दृशा।
सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका वरद निघ्नतो नेह किं वधः ॥२॥
विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद् वर्षमारुताद् वैद्युतानलात्।
वृषमयात्मजाद् विश्वतोभयादृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः ॥३॥
न खलु गोपिकानन्दनो भवानखिलदेहिनामन्तरात्मदृक्
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये सख उदेयिवान् सात्वतां कुले ॥४॥
विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते चरणमीयुषां संसृतेर्भयात्।
करसरोरुहं कान्त कामदं शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम् ॥५॥
व्रजजनार्तिहन् वीर योषितां निजजनस्मयध्वंसनस्मित।
भज सखे भवत्किंकरीः स्म नो जलरुहाननं चारु दर्शय ॥६॥
प्रणतदेहिनां पापकर्शनं तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम्।
फणिफणार्पितं ते पदाम्बुजं कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ॥७॥
मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण।
विधिकरीरिमा वीर मुह्यतीरधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः ॥८॥

विशेषण विशिष्टायां शुभ पुन्यतिथो अमुक गोत्रः अमुक नामाहम् क्रत्स्य कर्मणः साङ्गता सिदध्यर्थ
विषय-विकार मिटाओ,पाप हरो देवा,

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र साध्याः सन्ति देवाः॥

तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम्
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः॥९॥
प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम्
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि॥१०॥
चलसि यद् व्रजाच्चारयन् पशून् नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम्
शिलतृणांकुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त गच्छति॥११॥
दिनपरिक्षये नीलकुन्तलैर्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम्
घनरजस्वलं दर्शयन् मुहुर्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि॥१२॥
प्रणतकामदं पद्मजार्चितं धरणिमण्डनं ध्येयमापदि।
चरणपंकजं शन्तमं च ते रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन्॥१३॥
सुरतवर्धनं शोकनाशनं स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम्
इतररागविस्मारणं नृणां वितर वीर नस्तेऽधरामृतम्॥१४॥
अटति यद् भवानह्नि काननं त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम्
कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद् दृशाम॥१५॥
पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवानतिविलङ्घ्य तेऽन्त्यच्युतागताः।
गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि॥१६॥
रहसि संविदं हृच्छयोदयं प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम्।
बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः॥१७॥
व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम्।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम्॥१८॥
यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु।
तेनाटवीमटसि तद् व्यथते न किंस्वित् कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः॥१९॥

❖ ❖ ❖

भये प्रगट कृपाला

भये प्रगट कृपाला दीनदयाला, गौशल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मनहारी, अद्भुत रूप विचारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा, निज आयुध भुजचारी।
भूषन बनमाला नयन विशाला, सोभासिन्धु खरारी॥
कह दुई कर जोरी स्तुति तोरी, केहि विधि करौ अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना, वेद-पुरान भनंता॥
करुणा सुख सागर सब गुन आगर, जेहिं गावहिं श्रुति सन्ता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी, भयउ प्रगटं श्रीकंता॥
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया, रोम-रोम प्रतिवेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी, सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुस्काना, चरित बहुत विधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई, जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥
माता पुनि बोली सो मति डोली, तजहूँ तात यह रूपा।
कीजै शिशु लीला अति प्रियशीला, यह सुख परम अनूपा॥
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना, होइ बालक सुर भूपा।
यह चरित जे गावहिं हर पद पावहिं ते न परहिं भव कूपा॥

विप्र धेनु सुर सन्त हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गोपार॥

❖ ❖ ❖

श्रीरामचन्द्र कृपालु भज

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणम्।
नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम्॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरज सुन्दरम्।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम्॥
भज दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनम्।
रघुनन्द आनन्द कंद कौशल चन्द्र दशरथ नन्दनम्॥

हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहत्वा मन्त्र पुष्पांजलि

पुष्पांज्जलि - हाथ में फूल लेकर -

की जय, अधर्म का नाश हो, विश्व में शान्ति हो, ... भारत माता की, **भारत हिन्दू राष्ट्र** की जय हो, जै जै जै श्री राधे राधे राधे श्याम ॥

ॐ नमः पार्वती पतये, हर-हर महादेवा शम्भू । काल हर, कष्ट हर, दुख हर, दरिद्र हर, सर्व पाप हर । हर हर महादेव शम्भू

विशेषण विशिष्टायां शुभ पुन्यतिथो अमुक गोत्रः अमुक नामाहम् क्रत्स्य कर्मणः साङ्गता सिद्ध्यर्थं

विषय-विकार मिटाओ,पाप हरो देवा,

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र साध्याः सन्ति देवाः।।

मेरा तार प्रभु से जोड़े

मेरा तार प्रभु से जोड़े ऐसा कोई सन्त मिले
मेरे मन का रास्ता मोड़े ऐसा कोई सन्त मिले

1. सन्त दरश के बड़े महात्म्य
दुर्लभ जग में सन्त समागम
मेरे मन के भ्रम को तोड़े.... ॥ ऐसा कोई सन्त मिले ॥

2. भटकत-भटकत पथ नहीं मिलता
मन मेरा मन रोके नहीं रुकता
मेरे मन को रोके घोड़े.... ॥ ऐसा कोई सन्त मिले ॥

3. माया से जो दूर हटाये
मन का जो अज्ञान मिटाये
मेरे अवगुण सारे तोड़े.... ॥ ऐसा कोई सन्त मिले ॥

4. कोई ऐसा सन्त मिलाये
भव तारण की राह दिखाये
मेरी बाँह पकड़ ना छोड़े.... ॥ ऐसा कोई सन्त मिले ॥

❖ ❖ ❖

झूठा है संसार

झूठा है संसार धोखा खायेगा
कर ले प्रभु से प्यार फिर पछतायेगा

1. मतलब के हैं ये रिश्ते नाते, मतलब की है दुनिया सारी
साथ यहाँ क्या आया और क्या जायेगा।

2. मन को प्रभु चरणों में लगाले, अपना जीवन सफल बनाले
अपने सोये भाग्य जगाले अपने बिगड़े काज बनाले
एक प्रभु का नाम तेरे काम आयेगा।

❖ ❖ ❖

तात मिले पुनि मात मिले
सुतभ्रात मिले युवती सुखदाई।
राज मिले गज बाज मिले
सब साज मिले मनवांछित पाई।
लोक मिले परलोक मिले
विधि लोक मिले वैकन्ठहु जाई।
सुन्दर और मिले सब सब ही सुख
संत समागम दुर्लभ भाई॥

❖ ❖ ❖

मैया मोहँ माखन भावै

मैया री मोहँ माखन भावै
जो मेवा पकवान कहत तू मोहि नहि रूचि आवै

1. बृज जुवती इक पाछे ठाडी सुनत श्याम की बात
मन-मन कहत कबहु अपने घर देखो माखन खात
बैठे जायी मथनिया के ठिग मै तब रहौ छपानी
सूरदास प्रभु अन्तर जामी, ग्वालिनि मन की जानी

❖ ❖ ❖

हमारो धन राधे

हमारो धन, राधे जू के नाम!
राधे नाम प्रताप श्याम भये, रसिकन में सरनाम॥
राधे नाम सिद्ध करि मुरली, तानन मोह्यो बाम।
राधे नाम कृपा ते द्वापर, रास रच्यो ब्रजधाम॥
राधे नाम सुनत ही भाजत, हरि अधीर तेहि ठाम।
राधे नाम रकार बिना रह, श्यामहुँ आधे श्याम॥
करू 'कृपालु' राधे राधे की, रटना आठों याम॥

❖ ❖ ❖

की जय, अधर्म का नाश हो, विश्व में शान्ति हो, ...

की, भारत हिन्दू राष्ट्र की जय हो, जै जै जै श्री राधे राधे राधे श्याम ।।

ॐ नमः पार्वती पतये, हर-हर महादेवा शम्भू। काल हर, कष्ट हर, दुख हर, दरिद्र हर, सर्व पाप हर। हर हर महादेव शम्भू

हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहत्वा मन्त्र पुष्पांजलि

पुष्पांज्जलि - हाथ में फूल लेकर -

विशेषण विशिष्टायां शुभ पुन्यतिथो अमुक गोत्रः अमुक नामाहम् क्रत्स्य कर्मणः साङ्गता सिद्ध्यर्थं
विषय-विकार मिटाओ,पाप हरो देवा,

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र
साध्याः सन्ति देवाः।।

आरती

हे गिरधर तेरी आरती गाऊँ

हे गिरधर तेरी आरती गाऊँ
आरति गाऊँ प्यारे तुझको रिझाऊँ,
बाँके बिहारी तेरी आरति गाऊँ।

1. मोर मुकुट तेरे शीश पे सोहे,
प्यारी वंशी मुनि मन मोहै,
देख छवि बलिहारी जाऊँ ॥ हे गिरधर....
2. चरणों से निकली गंगा प्यारी,
जिसने सारी दुनिया तारी,
उन चरणों में शीश नवाऊँ ॥ हे गिरधर....
3. व्यास दास के नाथ आप हो,
सुख दु:ख जीवन प्यारे साथ आप हो,
श्रीचरणों में बलि बलि जाऊँ ॥ हे गिरधर....
4. संग सोहैं वृषभानु दुलारी,
ललिता विशाखा सखियाँ प्यारी।
वास सदा वृन्दावन पाऊँ ॥ हे गिरधर....
5. श्री हरिदास के प्यारे तुम हो,
मेरे मोहन जीवन धन हो
प्यारी छवि तेरी मन में बसाऊँ ॥ हे गिरधर....

❖ ❖ ❖

श्री हरि की डाल पे झूला पड़ो है
सब भक्तों में उत्साह बड़ो है ।। आजा रे कन्हैया

श्री श्यामा श्याम की आरती

श्यामा तेरी आरती कन्हैया तेरी आरती ॥
सारा संसार करेगा कर जोड़ के ॥

1. सिर पर सोना मुकुट विराजे, गल वैजयन्ती माला साजै ॥
और फूलन के हार करेगा कर जोड़ के।
श्यामा तेरी....
2. ब्रह्मादिक तेरौ यश गावें, नारद शारद ध्यान लगावें।
और करें जै जै कार, करेगा कर कर जोड़ के ॥
श्यामा तेरी....
3. मैं हूँ दीनन दु:खिया भारी, आया हूँ प्रभु शरण तुम्हारी।
रखियो लाज हमार, करेगा कर जोड़ के ॥
श्यामा तेरी....
4. अपने चरण की भक्ति दीजै, अपनी शरण में मोहे रखलीजै।
करो भवसागर पार, करेगा कर जोड़ के ॥
श्यामा तेरी....
5. प्रेम सहित जो आरति गावे श्री राधा माधव के पद पावे।
बाढै सुयश अपार, करेगा कर जोड़ के ॥
श्यामा तेरी....

❖ ❖ ❖

की जय, अधर्म का नाश हो, विश्व में शान्ति हो, विश्व का कल्याण हो, भारत माता
की, भारत हिन्दू राष्ट्र की जय हो, जै जै जै श्री राधे राधे राधे श्याम ।।
ॐ नमः पार्वती पतये, हर-हर महादेवा शम्भू । काल हर, कष्ट हर, दुख हर, दरिद्र हर, सर्व पाप हर । हर हर

हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहत्वा मन्त्र पुष्पांजलि
पुष्पांजलि - हाथ में फूल लेकर -

विशेषण विशिष्टायां शुभ पुन्यतिथो अमुक गोत्रः अमुक नामाहम् क्रत्स्य कर्मणः साङ्गता सिद्धयर्थ

विषय-विकार मिटाओ,पाप हरो देवा,

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र साध्याः सन्ति देवाः।।

आरति अति पावन पुराण की

आरति अति पावन पुराण की,
धर्म भक्ति विज्ञान खान की॥

1. महापुराण भागवत निरमल,
शुक-मुख विगलित निगम कल्पफल॥
परमानन्द सुधा रसमय कल,
लीला रति-रसनिधान की॥ आरती....

2. कलि-मल-मथनि त्रिताप-निवारिणि,
जन्म-मृत्युमय भव-भय-हारिणि॥
सेवत सतत सकल सुखकारिणि,
शुभहौषधि हरि-चरित-गान की॥ आरती....

3. विषय-विलास-विमोह-विनाशिनि,
विमल-विराग विवेक विकासिनि।
भगवत्तत्व-रहस्य प्रकाशिनि,
परम ज्योति परमात्म-ज्ञान की॥ आरती....

4. परमहंस-मुनि-मन उल्लासिनि,
रसिक-हृदय रस रास विलासिनि
भुक्ति, मुक्ति, रति प्रेम सुदासिनि,
कथा अकिंचन प्रिय सुजान की॥
आरति अति पावन पुराणकी,
धर्म-भक्ति विज्ञान खान की॥ आरती....

❖❖❖

आरती श्रीकुंज बिहारी की

आरती कुंज बिहारी की। श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की॥

1. गले में वैजन्ती माला, बजावै मुरली मधुर वाला,
श्रवण में कुण्डल झलकाला।
श्री आनन्द कन्द, वृन्दावन चन्द, मोहन वृज चन्द,
राधिका रमण बिहारी की। श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की॥

2. गगन सम अंग कान्ति काली, राधिका चमक रही आली,
लतन में ठाड़े वनमाली।
भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक, चन्द्रसी झलक,
ललित छवि श्यामा प्यारी की, श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।

3. शीश पै मोर मुकुट विलसै, देवता दर्शन को तरसै,
गगन से सुमन बहुत बरसै।
बजे मुरचंग मधुर मृदंग, ग्वालिनी संग,
अतुल रति गोप कुमारी की, श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की॥

4. जहाँ से प्रगट भई गंगा, कलुष कलि हारिणी श्री गंगा,
स्मरण से मोह होत भंगा।
बसी शिव शीश, जटा के बीच, हरै अघ खीस,
चरण छवि श्री बनवारी की। श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की॥

5. चमक रही उज्वल तट रेणू, बाज रही वृन्दावन वेणू,
चहूँ दिशि गोप ग्वाल धेनू।
हँसत मृदु मंद, चांदनी चन्द, कटत भव फन्द,
टेर सुन दीन भिखारी की। श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की॥
आरती कुंज बिहारी की। श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की॥

❖❖❖

हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहत्वा मन्त्र पुष्पांजलि

पुष्पांञ्जलि - हाथ में फूल लेकर -

की जय, **अधर्म** का नाश हो, **विश्व मै शान्ति हो, विश्व का कल्याण** हो, **भारत माता** की, **भारत हिन्दू राष्ट्र** की जय हो, जै जै जै श्री राधे राधे राधे श्याम ।।

ॐ नमः पार्वती पतये, हर-हर महादेवा शम्भू । काल हर, कष्ट हर, दुख हर, दरिद्र हर, सर्व पाप हर । हर हर महादेव शम्भू

विशेषण विशिष्टायां शुभ पुन्यतिथो अमुक गोत्रः अमुक नामाहम् क्रत्स्य कर्मणः साङ्गता सिदध्यर्थे

विषय-विकार मिटाओ,पाप हरो देवा,

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र साध्याः सन्ति देवाः।।

आरति बालकृष्ण की कीजै

आरती बालकृष्ण की कीजै,
अपनो जनम सफल कर लीजै।
श्रीयशुदा को परम दुलारो, बाबा की अँखियन को तारो।
गोपिन के प्राणन सों प्यारो, इन पै प्राण निछावर कीजै॥
आरति बालकृष्ण....

बलदाऊ को छोटो भइया, कनुआ कहि कहि बोलत मइया।
परम मुदित मन लेत बलइया, यह छबि नैनन में भरि लीजै॥
आरति बालकृष्ण....

तोतरि बोलन मधुर सुहावै, सखन संग खेलत सुख पावै।
सोई सुकृती जो इनकूँ ध्यावे, अब इनको अपनो करि लीजै॥
आरति बालकृष्ण....

श्रीराधावर सुघर कन्हैया, व्रज जन को नवनीत खवैया।
देखत ही मन लेत चुरैया, अपनो सर्वस इनको दीजै॥
आरति बालकृष्ण....

❖ ❖ ❖

श्रीरामायण जी की आरती

आरति श्रीरामायणजी की। कीरति कलित ललित सिय पी की॥
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। वाल्मीकि बिग्यान बिसारद॥
सुक सनकादि सेष अरु सारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी॥1॥
गावत बेद पुरान अष्टदस। छओ शास्त्र सब ग्रंथन को रस।
मुनि जन धन संतन को सरबस। सार अंस संमत सबहि की॥2॥
गावत संतत संभु भवानी। अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी।
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी। कागभुसुंडि गरुड़ के ही की॥3॥
कलिमत हरनि बिषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।
दलन रोग भव मूरि अमी की। तात मात सब बिधि तुलसी की॥4॥

❖ ❖ ❖

राजा राम की आरती

हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ तोपे तन मन वारूँ॥ हे राजाराम....

कनक सिंहासन राजत जोरी।
दशरथ नन्दन जनक किशोरी॥
छिन-छिन पल यह रूप निहारूँ॥ हे राजाराम.... ॥1॥

वाम भाग शोभित जग जननी।
चरण विराजत हैं सुत अंजनी॥
प्रभु पंकज न नेक विसारूँ॥ हे राजाराम.... ॥2॥

श्यामल तन पीताम्बर सोहे।
देख छवि मुनि जन मन मोहे॥
सुन्दरता पर सर्वस वारूँ॥ हे राजाराम.... ॥3॥

❖ ❖ ❖

की जय, अधर्म का नाश हो, विश्व मै शान्ति हो, विश्व का कल्याण हो, भारत माता की, भारत हिन्दू राष्ट्र की जय हो, जै जै जै श्री राधे राधे राधे श्याम ।।

ॐ नमः पार्वती पतये, हर-हर महादेवा शम्भू । काल हर, कष्ट हर, दुख हर, दरिद्र हर, सर्व पाप हर । हर हर महादेव शम्भू

हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहत्वा मन्त्र पुष्पांजलि

पुष्पांजलि - हाथ में फूल लेकर -

नमस्कार मंत्र

मो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च। नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥

सर्वकामदुधे देवि सर्वतीर्थाभिषेचिनि । पावनि सुरभिश्रेष्ठे देवि तुभ्यं नमो नमः ॥

गोग्रास- नैवेद्य-मन्त्र - सुरभित्वं जगन्मातर्देवि विष्णुपदे स्थिता। , सर्वदेवमयी ग्रासं मया दत्तमिमं ग्रस।।

॥ दुर्गा सप्तशती: सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम् ॥

ॐ अस्य श्रीकुंजिकास्तोत्रमंत्रस्य सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, श्रीत्रिगुणात्मिका देवता, ॐ ऐं बीजं, ॐ ह्रीं शक्तिः, ॐ क्लीं कीलकम्, मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

उवाच: शृणु देवि प्रवक्ष्यामि, कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् । येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत ॥1॥

कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् । न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् ॥2॥

जकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत् । अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम् ॥3॥

नीयं प्रयत्नेनस्वयोनिरिव पार्वति । मारणं मोहनं वश्यंस्तम्भनोच्चाटनादिकम् । पाठमात्रेण

द्ध्येत्कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ॥4॥

थ मन्त्रः ॥ - ॐ ऐं ह्रीं क्लींचामुण्डायै विच्चे ॥ ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालयज्वालय ज्वल ज्वल

ल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वलहं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॥

इति मन्त्रः ॥

नमस्ते रूद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि । नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥1॥

नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि । जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरूष्व मे ॥2॥

ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका । क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते ॥3॥

चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी । विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥4॥

धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी । क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥5॥

हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी । भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥6॥

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं । धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥7॥

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा । सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे ॥8॥

इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रंमन्त्रजागर्तिहेतवे । अभक्ते नैव दातव्यंगोपितं रक्ष पार्वति ॥

यस्तु कुञ्जिकाया देविहीनां सप्तशतीं पठेत् । न तस्य जायतेसिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तोत्र:

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्। उज्जयिन्यां महाकालमोंकारं अमलेश्वरम्॥

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम्। सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने॥

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे। हिमालये तु केदारं घृष्णेशं च शिवालये॥

एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायंप्रातः पठेन्नरः। सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥

॥ श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् ॥

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।

नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै न काराय नमः शिवाय ॥१॥

मन्दाकिनी सलिलचन्दन चर्चिताय, नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय ।

मन्दारपुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय, तस्मै म काराय नमः शिवाय ॥२॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द, सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै शि काराय नमः शिवाय ॥३॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य, मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।

चन्द्रार्क वैश्वानरलोचनाय, तस्मै व काराय नमः शिवाय ॥४॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय ।

दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै य काराय नमः शिवाय ॥५॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ। शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

AARATI HSANKER JI KI

ॐ जय शिव ओंकारा, प्रभु जय शिव ओंकारा। ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धांगी धारा

ॐ हर हर हर महादेव॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजे। शिव पंचानन राजे। हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजे

॥ ॐ हर हर हर महादेव.॥

दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज अति सोहे। प्रभु दस भुज अति सोहे। तीनों रूप निरखते। त्रिभुवन मन मोहे ॥ ॐ हर हर हर महादेव॥

अक्षमाला बनमाला मुण्डमाला धारी। शिव मुण्डमाला धारी। चंदन मृगमद चंदा, सोहे त्रिपुरारी॥ ॐ हर हर हर महादेव॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे। शिव बाघम्बर अंगे। ब्रह्मादिक सनकादिक भूतादिक संगे ॥ ॐ हर हर हर महादेव॥

कर के मध्य कमंडलु चक्र त्रिशूल धर्ता। शिव कर में त्रिशूल धर्ता। जगकर्ता जगहर्ता जगपालनकर्ता॥ ॐ हर हर हर महादेव॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका। स्वामी जानत अविवेका। प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका ॥ ॐ हर हर हर महादेव॥

काशी में विराजे विश्वनाथ, नंदी ब्रह्मचारी। नित उठ दर्शन पावत, महिमा अति भारी॥ ॐ हर हर हर महादेव॥

त्रिगुण शिवजी की आरती जो कोई नर गावे। प्रभु प्रेम सहित गावे। कहत शिवानन्द स्वामी

वत पर नारियल पुष्प द्रव्य रखै - ॐ श्री मदभगवताख्योअयं प्रत्यक्षः कृष्ण एव हि । स्वीकृतोअसि
यानाथ मुक्त्यर्थम् भवसागरे ।।
व्यास वंदना-व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे । नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः ।।
नमोस्तुते व्यास विशाल बुद्धे फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र। येन त्वया भारत तैल पूर्णः प्रज्वलितो ज्ञानमय प्रदीप ।।

श्री शुकदेव पूजन - यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेत कृत्यं द्वैपायनो विरह कातर आजुहाव। पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदुः तं सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोस्मि॥ श्री शुकदेवाय आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ।।

भागवतं पुस्तक पीठः पूजन - श्री मद् भागवतं शास्त्रं विष्णु रूपं यदुच्यते । तदहं सप्रवक्ष्यामि विशेषेण सुरानद्य ।।

धन्यं भागवतं शास्त्रं यस्मिंन्भाति जनार्दन । धन्यास्ते वैष्णवा लोके ये शृण्वन्ति कथा मिमाम् ।।

तुलसी पूजन -

तुलसि श्रीसखि शुभे पापहारिणि पुण्यदे । नमस्ते नारदनुते नारायणमनःप्रिये ॥ १॥
मनः प्रसादजननि सुखसौभाग्यदायिनि । आधि व्याधि हरे देवि तुलसि त्वां नमाम्यहम् ॥ २॥
सौभाग्यं सन्ततिं देवि धनं धान्यं च सर्वदा । आरोग्यं शोकशमनं कुरु मे माधवप्रिये ॥ ६॥
देवी त्वं निर्मिता पूर्वमर्चितासि मुनीश्वरैः । नमो नमस्ते तुलसी पापं हर हरिप्रिये।।
तुलसी श्रीर्महालक्ष्मीर्विद्याविद्या यशस्विनी। धर्म्या धर्मानना देवी देवीदेवमनः प्रिया।।
भते सुतरां भक्तिमन्ते विष्णुपदं लभेत्। तुलसी भूर्महालक्ष्मीः पद्मिनी श्रीर्हरप्रिया।।

ष्णु- शान्ताकारं भुजगशयनं, पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं, मेघवर्ण शुभाङ्गम्। लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं, गिभिर्ध्यानगम्यं, वन्दे विष्णुं भवभयहरं, सर्वलोकैकनाथम्॥ कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं। नासाग्रे वरमौक्तिकं तले वेणुः करे कङ्कणं॥ सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली। गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः॥
ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः, श्नप्त्रे स्थो विष्णोः, स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि, वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

ष्ण जी - लडडू गोपाल पूजन -

च्चिदानंद रूपाय विश्वोत्पत्यादिहेतवे! तापत्रय विनाशाय श्री कृष्णाय वयं नुमः।।
कृष्णाय वासुदेवाय देवकी नन्दनाय च । नंदगोपकुमाराय गोविंदाय नमो नमः ॥
नमो विश्वस्य रूपाय विश्व स्थित्यन्त हेतवे । विश्वेश्वराय विश्वाय गोविन्दाय नमो नमः ।।
नमो कमल नेत्राय नमः कमल मालिने । नमः कमल नाभाय कमला पतये नमो नमः ।।
प्रसीद परमानन्द प्रसीद परमेश्वर । आधि व्याधि भुजंगेन दष्टं मामुद्धर प्रभो ।।
श्रीकृष्ण - वसुदेवसुतं देवं, कंसचाणूरमर्दनम्। देवकी परमानन्दं, कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।
कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने । प्रणतः क्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः ।।
वृन्दावनेश्वरी राधा कृष्णो वृन्दावनेश्वरः। जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम।।
राधा साध्यम साधनं यस्य राधा, मन्त्रो राधा मन्त्र दात्री चः राधा ।
सर्वं राधा जीवनम् यस्य राधा, राधा राधा वाचिकिम तस्य शेषम् ॥
वृन्दावन सो वन नहीं, नंदगांव सो गांव! बंशीवट सो वट नहीं, कृष्ण नाम सो नाम
वृन्दावन के वृक्ष को, मरम न जाने कोय। डाल डाल और पात पे; श्री राधे राधे होय।।
राधा मेरी स्वामिनी, मैं राधे को दास। जनम जनम मोहे दीजियो, श्री चरणों का दास।
राधा राधा कहत ही, सब बाधा मिट जाय। कोटी जनम की आपदा, नाम लिये सों जाय,
बरसाने की राधिका, नंदगांव के श्याम इन दोनों के चरणों में मेरा कोटि-कोटि प्रणाम ।
भक्त भक्ति भगवंत गुरु चतुर नाम बपु एक। इनके पद बंदन किएँ, नासत बिघ्न अनेक।।
कृष्णं नारायणं वन्दे कृष्णं वन्दे व्रजप्रियम्। कृष्णं द्वैपायनं वन्दे कृष्णं वन्दे पृथासुतम्॥
कृष्णस्य द्रविणं राधा राधायाः द्रविणं हरि : जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम।
भगवान श्रीकृष्ण की पूर्ण सम्पदा श्री राधा रानी है और श्रीराधारानी का पूर्ण धन भगवान श्रीकृष्ण हैं,

॥ महिषासुर मर्दिनि स्तोत्रम् ॥ अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते।
गिरिवरविन्ध्यशिरोऽधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते। जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।
सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते।
दनुजनिरोषिणि
अयि जगदम्ब
मधुमधुरे मधुकैटभ
अयि शतखण्ड
निजभुजदण्ड
अयि रणदुर्मद
दुरितदुरीह दुराशय
अयि शरणागत
दुमिदुमितामर
अयि निजहुङ्कृति
शिवशिवशुम्भ
धनुरनुषङ्ग रण
कृतचतुरङ्ग
सुरललना ततथेयि
धुधुकुट धुक्कुट
जय जय जप्य
नटित नटार्ध नटी
अयि सुमनःसुमन
सुनयनविभ्रम
सहितमहाहव
वर्गवृते।
शितकृतफुल्ल
अविरलगण्ड
अयि सुदतीजन
कमलदलामल
अलिकुलसङ्कुल
करमुरलीरव
निजगणभूत
कटितटपीत
जितकनकाचल
विजितसहस्रकरैक
सुरथसमाधि
पदकमलं करुणानिलये
तव पदमेव परम्
कनकलसत्कलसिन्धुजलै
तव चरणं शरणं
तव विमलेन्दुकुलं
मम तु मतं शिवनामधने
अयि मयि दीन दयालुतया ... अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथानुमितासिरते।
यदुचितमत्र भवत्युररीकुरुतादुरुतापमपाकुरुते। जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।

विशेषण विशिष्टायां शुभ पुन्यतिथो अमुक गोत्रः अमुक नामाहम क्रत्स्य कर्मणः साङ्गता सिद्ध्यर्थं

षय-विकार मिटाओ,पाप हरो देवा,

श्रद्धा भक्ति

तन मन ध

तेरा तुझको

श्याम सुन्दर

कहत शिवान

मथुरा में ज

आरति भई र

संकट,क्षण में

............///?

बंसी वाले गो

कर्पूरगौरं करुण

त्वमेव माता च

देव ॥

सानन्दमानन्दव

भक्त्या दीपं

() प्रदक्षिणा

चारो ओर घूम

आरती की थाल

द्रव्य छोड़कर स

ये तीर्थानि प्रच

यानि कानि च

निषिद्ध कर्म

हरिओम जल

वन्दनं ।

ॐ द्यौः शान्ति

शान्तिः, सर्वं

यतो यतः सम

ॐ शं नो देवीरभि

स्वस्ति पन्थाम

ओ३म् ये देवान

॥

पुनन्तु माँ

भक्त्या दीप

ते ॥

<u>हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहत्वा मन्त्र पुष्पांजलि</u>

श्रीभागवत भगवान की है आरती

श्रीभागवत भगवान की है आरती,
पापियों को पाप से है तारती ॥

1. ये अमरग्रन्थ ये मुक्ति पंथ ये पंचम वेद निराला।
नव ज्योति जगाने वाला।
हरिनाम यही, हरिध्यान यही, जग के मंगल की आरती ॥
पापियों को पाप....

2. ये शान्ति गीत पावन पुनीत, पापों को मिटाने वाला।
हरि दरश कराने वाला।
ये सुख करणी, ये दुःख हरणी, श्रीमधुसूदन की आरती ॥
पापियों को पाप....

3. ये मधुर बोल जग पंथ खोल, सन्मार्ग बताने वाला।
बिगड़ी को बनाने वाला।
श्रीराम यही, घनश्याम यही, प्रभु की महिमा की आरती ॥
पापियों को पाप....

❖ ❖ ❖

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र साध्याः सन्ति देवाः।।

1. गणेश गायत्री– ॐ एक दंष्ट्राय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो बुद्धिः प्रचोदयात् ।

2. गौरी गायत्री– ॐ गणेशअम्बिकाये विध्महे , कर्म सिद्धये च धीमहि, तन्नो गौरी प्रचोदयाति ।

3. शिव गायत्री – ॐ तत्पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

4. कृष्ण गायत्री – ॐ देवकी नन्दनाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि । तन्नो कृष्णः प्रचोदयात् ।

3. राधा - ॐ वृषभानुजायै विद्महे , कृष्ण प्रियायै धीमहि । तन्नो राधा प्रचोदयात् ।

7. हनुमान गायत्री–ॐ अञ्जनी सुताय विद्महे, वायु पुत्राय धीमहि। तन्नो मा रुतिः प्रचोदयात् ।

4. तुलसी गायत्री–ॐ श्री तुलस्यै विद्महे, विष्णु प्रियायै धीमहि । तन्नो वृन्दाः प्रचोदयात् ।

5. Ram –ॐ दशरथये विद्महे, सीता बल्लभाय धीमहि । तन्नो रामः प्रचोदयात् ।

6. सीता गायत्री–ॐ जनकनन्दिन्यै विद्महे, भूमिजायै धीमहि । तन्नो सीता प्रचोदयात् ।

ॐ पितृ गणाय विद्महे जगतधारिणे धीमहि तन्नो पित्रो प्रचोदयात्।

8. विष्णु गायत्री–ॐ नारायण विदूमहे, वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

9. लक्ष्मी गायत्री–ॐ महालक्ष्म्यै विद्महे, विष्णु प्रियायै धीमहि । तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् ।

10. अग्नि गायत्री–ॐ महाज्वालाय विद्महे, अग्निदेवाय धीमहि । तन्नो अग्निः प्रचोदयात् ।

ॐ सेवन्तिका बकुल चम्पक पाटलाब्जैः, पुन्नाग जाति करवीर रसाल पुष्पैः ।

बिल्व प्रवाल तुलसीदल मंजरीभिः । त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद।।

मंदार माला कलितालकायै, कपालमालंगित सुन्दराय। दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय, नमः शिवायै च नमः शिवाय।

ॐ नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कालो भवानी च, पुष्पान्जलिर्मया दत्त ग्रहाण परमेश्वर ॥ पुराण पुर्षोत्तमाय नमः ॥ मंत्रपुष्पांजली समर्पयामि ॥

सुमन सुगंधित सुमनलय सुमनस बुद्धी विचार, पुष्पांजलि अर्पण करूँ मेरे ठाकुर मेरी मात् करो स्वीकार।। मंत्रपुष्पांजली समर्पयामि!!

सुमन सुगन्धित सुमन लै सुमन सुगंधि सुजान!! पुष्पांजलि अर्पण करू मेरे देव / मेरी मात् करो स्वीकार!! !!मंत्र पुष्पांजलि समर्पयामि!!

Jaikar – श्री **वृन्दावन** बिहारी लाल, **राधा रानी**, श्री **सीताराम** जी महाराज, **पवनसुत हनुमान** जी महाराज, शंकर भगवान की जय, गंगा यमुना की, श्री **मद् भागवत महापुरान**, श्री **व्यास जी महाराज**, श्री **शुकदेव जी महाराज**, सदगुरु महाराज की, **सन्त समाज की जय, सत्य सनातन वैदिक धर्म, गौउ माता की** जय, अपने मात पिता की जय, भक्त और भगवान की जय, नगर बस्ती की जय, आज के आनन्द की जय **धर्म** की जय, **अधर्म** का नाश हो, **विश्व मै शान्ति हो, विश्व का कल्याण** हो, **भारत माता** की, **भारत हिन्दू राष्ट्र** की जय हो, जै जै जै श्री राधे राधे राधे श्याम ।।

ॐ नमः पार्वती पतये, हर-हर महादेव! शम्भू । काल हर, कष्ट हर, दुख हर, दरिद्र हर, सर्व पाप हर ! हर हर

क्षमा प्रार्थना- आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन। यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे।।

पापोहं पापकर्माहं पापात्मा पाप संभवः! त्राहिमां पुण्डरीकाक्ष सर्व पाप हरो हरी।

यदक्षर पद भ्रष्टं मात्रा हीनं च यद् भवेत | तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ||

साष्टांग नमस्कार

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे । सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः ।।

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च । जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ।।
वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्द नम् । देवकी परमानन्दम् कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ।।

भगवत्स्मरण : ॐ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

शुभकामना मंत्र : ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः । सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु । मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत् ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

'नाम संकीर्तनं यस्य सर्व पाप प्रणाशनम्, प्रणामो दुःख शमनः तम नमामि हरिं परम्।। || akhiri slok

आसन से यजमान हटना

यजमान जिस आसन पर बैठा है | उसके नीचे जल छिड़क कर उस जल को अपने माथे में और आँखों में लगा ले |

ॐ सकराय नमः ॐ इन्द्राय नमः - ऐसे करने से इंद्र आपके पूजा को नहीं लेके जायेगा ऐसा मानना है

मन्त्र अक्षत आशीर्वाद

ब्राहमण फूल फल आदि लेकर **यजमान तथा उसकी पत्नी** को मन्त्र अक्षत दें |

ॐ मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः | शत्रूणां बुद्धि नाशो अस्तु मित्राणा मुदयस्तव ||

ॐ श्रीर्वर्चस्व मायुष्य मारोग्य माविधात पवमानं महीयते | धनं धान्यं पशुं पुत्र पौत्र लाभं शत संवत्सरं दीर्घमायुः ||

त्वम् आयुष्मान् वर्चस्वी तेजस्वी श्रीमान् भूयाः।

गॉठ खोलन -

यजमान और उसकी पत्नी की गॉठ बाँधी है, खोल दी जाय | यजमान सबका ब्राहमणो का आशीर्वाद लें | स्वस्ति वाचन बोले |

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा : स्वस्ति न : पूषा विश्व वेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्षो ऽअरिष्टनेमि स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातुः ॥१॥

|| ॐ विष्णवे नमः ॐ विष्णवे नमः ॐ विष्णवे नमः ||
|| ॐ विष्णोः स्मरणात परिपूर्णा स्तु अस्तु परिपूर्ण ||

उत्तर पूजन - यजमान - गौरी - गणेश - कलश - नवग्रह चारों कोनों में स्थापित पीठ प्रधान देवता आदि सभी आवाहित देवताओं पर गन्ध - अक्षत - पुष्प छोड़कर उत्तर पूजन कर दें -

मंत्र - ॐ आवाहित देवताभ्यो नमः | उत्तर पूजां ग्रहणन्तु | प्रीयंताम ||

अग्नि विसर्जन - हवन वेदी के गन्ध - अक्षत - पुष्प छोड़ कर प्रार्थना करे |

ॐ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ, स्वस्थाने परमेश्वर, यत्र ब्रहमादयो देवाः, तत्र गच्छ हुताशन |

देव विसर्जन - लक्ष्मी - गणेश देव हमारे यहा स्थापित रहें | अन्य देवता जो हमने बुलाये है सभी अपने अपने स्थान को प्रस्थान करें और हमें यस, वैभव, धन, लक्ष्मी, पुत्र , पुत्री , पशु , स्थाई लक्ष्मी , सुख सम्पदा प्रदान करने का शुभ आशीर्वाद दें ||

गच्छन्तु सुराः श्रेष्ठाः स्वस्थानं परमेश्वराः | यजमान हितार्थाय पुनरागमनाय च ||

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीमम | इष्ट काम समृद्ध्यर्थ पुनरागनाय च ||

पीठदान संकल्प = कुश - अक्षत - जल - द्रव्य लेकर = नवग्रह , वास्तु, योगिनी , प्रधान देवता आदि की पीठ का संकल्प करे -

अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुन्यतिथो अमुक गोत्रः अमुक नामाहम् क्रत्स्य कर्मणः सिद्ध्यर्थ इमानि, सोपस्करादि-सहितानि पीठादिनी सर्दक्षिणानि आचार्याय अमुक गोत्राय अमुक नामाहम ब्रहमानाय तुभ्यंमहं सम्प्रददे |

ध्वजा पताका दान - कुश - अक्षत - जल - द्रव्य लेकर = नवग्रह की झण्डी तथा इन्द्रध्वज का संकल्प करे -

अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुन्यतिथो अमुक गोत्रः अमुक नामाहम् क्रत्स्य कर्मणः सिद्ध्यर्थ इदं मण्डपं ध्वज पताकादि - उपस्कर युतम सदक्षिणाम आचार्याय अमुक गोत्राय अमुक नामाहम ब्रहमानाय तुभ्यंमह सम्प्रददे |

|| ॐ विष्णवे नमः ॐ विष्णवे नमः ॐ विष्णवे नमः ||
|| ॐ विष्णोः स्मरणात परिपूर्णा स्तु अस्तु परिपूर्ण ||

जय घोष - श्री वृन्दावन बिहारी लाल, राधा रानी, श्री सीताराम जी महाराज, पवनसुत हनुमान जी महाराज, शंकर भगवान की जय, गंगा यमुना की, श्री मद् भागवत महापुरान, श्री व्यास जी महाराज, श्री शुकदेव जी महाराज, सदगुरु महाराज की, सन्त समाज की जय, सत्य सनातन वैदिक धर्म, गौउ माता की जय, अपने मात पिता की जय, भक्त और भगवान की जय, नगर बस्ती की जय, आज के आनन्द की जय धर्म की जय, अधर्म का नाश हो, विश्व मै शान्ति हो, विश्व का कल्याण हो, भारत माता की, भारत हिन्दू राष्ट्र की जय हो, जै जै जै श्री राधे राधे राधे श्याम ||

ॐ नमः पार्वती पतये, हर-हर महादेव! शम्भू | काल हर, कष्ट हर, दुख हर, दरिद्र हर, सर्व पाप हर ! हर

आरती क्या है और कैसे करनी चाहिये?

आरतीको 'आरात्रिक' अथवा 'आरार्तिक' और 'नीराजन' भी कहते हैं। पूजाके अन्तमें आरती की जाती है। पूजनमें जो त्रुटि रह जाती है, आरतीसे उसकी पूर्ति होती है। स्कन्दपुराणमें कहा गया है—

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत् कृतं पूजनं हरेः।
सर्वं सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे॥

'पूजन मन्त्रहीन और क्रियाहीन होनेपर भी नीराजन (आरती) कर लेनेसे उसमें सारी पूर्णता आ जाती है।'

आरती करनेका ही नहीं, आरती देखनेका भी बड़ा पुण्य लिखा है। हरिभक्तिविलासमें एक श्लोक है—

नीराजनं च यः पश्येद् देवदेवस्य चक्रिणः।
सप्तजन्मनि विप्रः स्यादन्ते च परमं पदम्॥

'जो देवदेव चक्रधारी श्रीविष्णुभगवान्‌की आरती (सदा) देखता है, वह सात जन्मोंतक ब्राह्मण होकर अन्तमें परमपदको प्राप्त होता है।'

विष्णुधर्मोत्तरमें आया है—

धूपं चारात्रिकं पश्येत् कराभ्यां च प्रवन्दते।
कुलकोटिं समुद्धृत्य याति विष्णोः परं पदम्॥

'जो धूप और आरतीको देखता है और दोनों हाथोंसे आरती लेता है, वह करोड़ पीढ़ियोंका उद्धार करता है और भगवान् विष्णुके परमपदको प्राप्त होता है।'

आरतीमें पहले मूलमन्त्र (जिस देवताका जिस मन्त्रसे पूजन किया गया हो, उस मन्त्र) के द्वारा तीन बार पुष्पाञ्जलि देनी चाहिये और ढोल, नगारे, शङ्ख, घड़ियाल आदि महावाद्योंके तथा जय-जयकारके शब्दके साथ शुभ पात्रमें घृतसे या कपूरसे विषम संख्याकी अनेक बत्तियाँ जलाकर आरती करनी चाहिये—

ततश्च मूलमन्त्रेण दत्त्वा पुष्पाञ्जलित्रयम्।
महानीराजनं कुर्यान्महावाद्यजयस्वनैः॥
प्रज्वलयेत् तदर्थं च कर्पूरेण घृतेन वा।
आरार्तिकं शुभे पात्रे विषमानेकवर्तिकम्॥

साधारणतः पाँच बत्तियोंसे आरती की जाती है, इसे 'पञ्चप्रदीप' भी कहते हैं। एक, सात या उससे भी अधिक बत्तियोंसे आरती की जाती है। कपूरसे भी आरती होती है। पद्मपुराणमें आया है—

कुङ्कुमागुरुकर्पूरघृतचन्दननिर्मिताः।
वर्तिकाः सप्त वा पञ्च कृत्वा वा दीपवर्त्तिकाम्॥
कुर्यात् सप्तप्रदीपेन शङ्खघण्टादिवाद्यकैः।

'कुङ्कुम, अगर, कपूर, घृत और चन्दनकी सात या पाँच बत्तियाँ बनाकर अथवा दियेकी (रूई और घीकी) बत्तियाँ बनाकर सात बत्तियोंसे शङ्ख, घण्टा आदि बाजे बजाते हुए आरती करनी चाहिये।'

आरतीके पाँच अङ्ग होते हैं—

पञ्च नीराजनं कुर्यात् प्रथमं दीपमालया।
द्वितीयं सोदकाब्जेन तृतीयं धौतवाससा॥
चूताश्वत्थादिपत्रैश्च चतुर्थं परिकीर्तितम्।
पञ्चमं प्रणिपातेन साष्टाङ्गेन यथाविधि॥

'प्रथम दीपमालाके द्वारा, दूसरे जलयुक्त शङ्खसे, तीसरे धुले हुए वस्त्रसे, चौथे आम और पीपल आदिके पत्तोंसे और पाँचवें साष्टाङ्ग दण्डवत्‌से आरती करे।'

'आरती उतारते समय सर्वप्रथम भगवान्‌की प्रतिमाके चरणोंमें उसे चार बार घुमाये, दो बार नाभिदेशमें, एक बार मुखमण्डलपर और सात बार समस्त अङ्गोंपर घुमाये'—

आदौ चतुः पादतले च विष्णो-
र्द्वौ नाभिदेशे मुखबिम्ब एकम्।
सर्वेषु चाङ्गेषु च सप्तवारा-
नारात्रिकं भक्तजनस्तु कुर्यात्॥

यथार्थमें आरती पूजनके अन्तमें इष्टदेवताकी प्रसन्नताके हेतु की जाती है। इसमें इष्टदेवको दीपक दिखानेके साथ ही उनका स्तवन तथा गुणगान किया जाता है। आरतीके दो भाव हैं जो क्रमशः 'नीराजन' और 'आरती' शब्दसे व्यक्त हुए हैं। नीराजन (**निःशेषेण राजनं प्रकाशनम्**) का अर्थ है—विशेषरूपसे, निःशेषरूपसे प्रकाशित करना। अनेक दीप-बत्तियाँ जलाकर विग्रहके चारों ओर घुमानेका अभिप्राय यही है कि पूरा-का-पूरा विग्रह एड़ीसे चोटीतक प्रकाशित हो उठे—चमक उठे, अङ्ग-प्रत्यङ्ग स्पष्टरूपसे उद्भासित हो जाय, जिसमें दर्शक या उपासक भलीभाँति देवताकी रूप-छटाको निहार सके, हृदयंगम कर सके। दूसरा 'आरती' शब्द (जो संस्कृतके आर्तिका प्राकृत रूप है और जिसका अर्थ है—अरिष्ट) विशेषतः माधुर्य-उपासनासे सम्बन्धित है। 'आरती वारना' का अर्थ है—आर्ति-निवारण, अनिष्टसे अपने प्रियतम प्रभुको बचाना। इस रूपमें यह एक तान्त्रिक क्रिया है, जिससे प्रज्वलित दीपक अपने इष्टदेवके चारों ओर घुमाकर उनकी सारी विघ्न-बाधा टाली जाती है। आरती लेनेसे भी यही तात्पर्य है— उनकी 'आर्ति' (कष्ट)-को अपने ऊपर लेना। बलैया लेना, बलिहारी जाना, बलि जाना, वारी जाना, न्योछावर होना आदि सभी प्रयोग इसी भावके द्योतक हैं। इसी रूपमें छोटे बच्चोंकी माताएँ तथा बहिनें लोकमें भी आरती (या आरत) उतारती हैं। यह **'आरती'** मूलरूपमें कुछ मन्त्रोच्चारणके साथ केवल कष्ट-निवारणके भावसे उतारी जाती रही होगी। आजकल वैदिक-उपासनामें उसके साथ-साथ वैदिक मन्त्रोंका उच्चारण होता है तथा पौराणिक एवं तान्त्रिक-उपासनामें उसके साथ सुन्दर-सुन्दर भावपूर्ण पद्य-रचनाएँ गायी जाती हैं। ऋतु, पर्व, पूजाके समय आदि भेदोंसे भी आरती की जाती है।

॥ श्रीहरिः॥

संक्षिप्त पूजन-विधि

किसी देवता या देवीके पूजनके पहले पूजन-वस्तु एवं शरीरकी शुद्धि अनिवार्य होती है। पूजाकी अनेक विधियाँ हैं। यथा—

१-पञ्चोपचार—१-गन्ध, २-पुष्प, ३-धूप, ४-दीप और ५-नैवेद्य।

२-दशोपचार—१-पाद्य, २-अर्घ्य, ३-आचमन, ४-स्नान, ५-वस्त्र, ६-गन्ध, ७-पुष्प, ८-धूप, ९-दीप और १०-नैवेद्य।

३-षोडशोपचार—१-पाद्य, २-अर्घ्य, ३-आचमन, ४-स्नान, ५-वस्त्र, ६-आभूषण, ७-गन्ध, ८-पुष्प, ९-धूप, १०-दीप, ११ नैवेद्य, १२-आचमन, १३-ताम्बूल, १४-स्तवपाठ, १५-तर्पण (पुष्पाञ्जलि) और १६-नमस्कार।

आचमन —१- **ॐ केशवाय नमः**, २- **ॐ नारायणाय नमः**, ३-**ॐ माधवाय नमः**।—इन तीन मन्त्रोंसे पृथक्-पृथक् हाथमें जल लेकर मन्त्र पढ़ते हुए आचमन करे। इसके बाद '**ॐ हृषीकेशाय नमः**' बोलकर हाथ धो ले।

शरीरशुद्धि— **ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।**
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

—इस मन्त्रसे शरीरका जलसे सेचन करे।

तदनन्तर मङ्गलपाठ करे और गणेश-स्मरण करे—

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

सङ्कल्प—हाथमें अक्षत-पुष्प आदि लेकर पूजनका सङ्कल्प करे—
ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य...... अहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं च........ देवस्य [देव्याः] पूजनं करिष्ये।

ध्यान—जिस देवताकी पूजा करनी हो उसका ध्यान कर ले। जैसे—'**विष्णवे नमः**' विष्णुको नमस्कार कर ले। इसी तरह जिस देवीका ध्यान करना हो उस देवीका ध्यान करे। जैसे—'**दुर्गादेव्यै नमः**' —दुर्गादेवीको नमस्कार कर ले।

आवाहन— हाथमें अक्षत, पुष्प लेकर उस देवताका आवाहन करे—
अमुक*-देवाय/ देव्यै नमः, आवाहयामि। अक्षत, पुष्प जमीनपर छोड़ दे।

आसन—अक्षत, पुष्प लेकर निम्न मन्त्रसे आसन प्रदान करे—

अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
इदं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥

'आसनं समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

पाद्य—'पादयोः पाद्यं समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

अर्घ्य—'हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

आचमन—'आचमनीयं जलं समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

स्नान—'स्नानीयं जलं समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

वस्त्र—'वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

यज्ञोपवीत—'यज्ञोपवीतं समर्पयामि' अमुक-देवाय नमः।

*अमुकके स्थानपर जिस देवी-देवताका पूजन करना हो वहाँ उस देवी-देवताका उच्चारण करना चाहिये।

चन्दन—'चन्दनं समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

अक्षत—'अक्षतान् समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

पुष्प—'पुष्पाणि समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

पुष्पमाला—'पुष्पमालां समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

धूप—'धूपमाघ्रापयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

दीप—'दीपं दर्शयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

नैवेद्य—'नैवेद्यं निवेदयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

फल—'फलं समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

ताम्बूल—'ताम्बूलं समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

दक्षिणा—'दक्षिणां समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

आरती—'आरार्तिक्यं समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

मन्त्रपुष्पाञ्जलि—'मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

प्रदक्षिणा—'प्रदक्षिणां समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

नमस्कार—'प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

इसके बाद क्षमा-याचना करे—

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन। यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम। तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष मां परमेश्वर॥

समर्पण—'ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु'—कहकर समस्त पूजन-कर्म भगवान्‌को निवेदित कर दे।

मानस-पूजा

बाह्यपूजाके साथ-साथ मानस-पूजाका भी अत्यधिक महत्त्व है। जो बाह्यपूजा न कर सकें तो वे भी मानस-पूजा तो कर ही सकते हैं। यहाँ मानस-पूजाका संक्षिप्त स्वरूप दिया जा रहा है—

(१) ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि।

(प्रभो! मैं पृथ्वीरूप गन्ध (चन्दन) आपको अर्पित करता हूँ।)

(२) ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि।

(प्रभो! मैं आकाशरूप पुष्प आपको अर्पित करता हूँ।)

(३) ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि।

(प्रभो! मैं वायुदेवके रूपमें धूप आपको प्रदान करता हूँ।)

(४) ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि।

(प्रभो! मैं अग्निदेवके रूपमें दीपक आपको प्रदान करता हूँ।)

(५) ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि।

(प्रभो! मैं अमृतरूपी नैवेद्य आपको निवेदन करता हूँ।)

(६) ॐ सौं सर्वात्मकं सर्वोपचारं समर्पयामि।

(प्रभो! मैं सर्वात्माके रूपमें संसारके सभी उपचारोंको आपके चरणोंमें समर्पित करता हूँ।)

इन मन्त्रोंसे भावनापूर्वक मानस-पूजा की जा सकती है।

पूजन-सम्बन्धी जाननेयोग्य कुछ आवश्यक बातें

सूर्य, गणेश, दुर्गा, शिव, विष्णु—ये पञ्चदेव कहे गये हैं। इनकी पूजा सभी कार्योंमें करनी चाहिये।

कल्याण चाहनेवाले गृहस्थ एक मूर्तिकी ही पूजा न करें, अनेक देवमूर्तिकी पूजा करें, इससे कामना पूरी होती है। किन्तु घरमें दो शिवलिङ्ग, तीन गणेश, दो शङ्ख, दो सूर्य, तीन दुर्गामूर्ति, दो गोमतीचक्र और दो शालग्रामकी पूजा करनेसे गृहस्थ मनुष्यको अशान्ति होती है। शालग्रामकी प्राणप्रतिष्ठा नहीं होती। बाणलिङ्ग तीनों लोकोंमें विख्यात हैं, उनकी प्राणप्रतिष्ठा, संस्कार या आवाहन कुछ भी नहीं होता।

पत्थर, काष्ठ, सोना या अन्य धातुओंकी मूर्तियोंकी प्रतिष्ठा घर या मन्दिरमें करनी चाहिये। घरमें चल प्रतिष्ठा और मन्दिरमें अचल प्रतिष्ठा करनी चाहिये। यह कर्मज्ञानी मुनियोंका मत है। गङ्गाजीमें, शालग्रामशिलामें तथा शिवलिङ्गमें सभी देवताओंका पूजन बिना आवाहन-विसर्जन किया जा सकता है।

तुलसीदल-चयन—तुलसीका एक-एक पत्ता न तोड़कर पत्तियोंके साथ अग्रभागको तोड़ना चाहिये। तुलसीकी मञ्जरी सब फूलोंसे बढ़कर मानी जाती है। मञ्जरी तोड़ते समय उसमें पत्तियोंका रहना भी आवश्यक माना गया है।

तुलसीदल-चयनमें निषिद्ध समय—वैधृति और व्यतीपात—इन दो योगोंमें, मंगल, शुक्र और रवि—इन तीन वारोंमें, द्वादशी, अमावास्या एवं पूर्णिमा—इन तीन तिथियोंमें, संक्रान्ति और

जननाशौच तथा मरणाशौचमें तुलसीदल तोड़ना मना है। संक्रान्ति, अमावास्या, द्वादशी, रात्रि और दोनों संध्याओंमें भी तुलसीदल न तोड़े, किंतु तुलसीके बिना भगवान्‌की पूजा पूर्ण नहीं मानी जाती, अतः निषिद्ध समयमें तुलसीवृक्षसे स्वयं गिरी हुई पत्तीसे पूजा करे (पहले दिनके पवित्र स्थानपर रखे हुए तुलसीदलसे भी भगवान्‌की पूजा की जा सकती है)। शालग्रामकी पूजाके लिये निषिद्ध तिथियोंमें भी तुलसी तोड़ी जा सकती है। बिना स्नानके और जूता पहनकर भी तुलसी न तोड़े।

बिल्वपत्र तोड़नेका निषिद्ध काल—चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी और अमावास्या तिथियोंको, संक्रान्तिके समय और सोमवारको बिल्वपत्र न तोड़े। किंतु बिल्वपत्र शङ्करजीको बहुत प्रिय है, अतः निषिद्ध समयमें पहले दिनका रखा बिल्वपत्र चढ़ाना चाहिये। शास्त्रने तो यहाँतक कहा है कि यदि नूतन बिल्वपत्र न मिल सके तो चढ़ाये हुए बिल्वपत्रको ही धोकर बार-बार चढ़ाता रहे।

बासी जल, फूलका निषेध—जो फूल, पत्ते और जल बासी हो गये हों, उन्हें देवताओंपर न चढ़ाये। किंतु तुलसीदल और गङ्गाजल बासी नहीं होते। तीर्थोंका जल भी बासी नहीं होता। वस्त्र, यज्ञोपवीत और आभूषणमें भी निर्माल्यका दोष नहीं आता।

मालीके घरमें रखे हुए फूलोंमें बासी दोष नहीं आता। दौना तुलसीकी ही तरह एक पौधा होता है। भगवान् विष्णुको यह बहुत प्रिय है। स्कन्दपुराणमें आया है कि दौनाकी माला भगवान्‌को इतनी प्रिय है कि वे इसे सूख जानेपर भी स्वीकार कर लेते हैं। मणि, रत्न, सुवर्ण, वस्त्र आदिसे बनाये गये फूल बासी नहीं होते। इन्हें प्रोक्षण कर चढ़ाना चाहिये।

पूजा-सामग्रीके रखनेका प्रकार—पूजनकी किस वस्तुको किधर रखना चाहिये, इस बातका भी शास्त्रने निर्देश दिया है। इसके अनुसार वस्तुओंको यथास्थान सजा देना चाहिये।

बायीं ओर—(१) सुवासित जलसे भरा उदकुम्भ (जलपात्र), (२) घंटा, (३) धूपदानी और (४) तेलका दीपक भी बायीं ओर रखे।

दायीं ओर—(१) घृतका दीपक और (२) सुवासित जलसे भरा शङ्ख।

सामने—(१) कुंकुम (केसर) और कपूरके साथ घिसा गाढ़ा चन्दन, (२) पुष्प आदि हाथमें तथा चन्दन ताम्रपात्रमें न रखे।

भगवान्‌के आगे—चौकोर जलका घेरा डालकर नैवेद्यकी वस्तु रखे।

पुष्पादि चढ़ानेकी विधि—फूल, फल और पत्ते जैसे उगते हैं, वैसे ही इन्हें चढ़ाना चाहिये। उत्पन्न होते समय इनका मुख ऊपरकी ओर होता है, अतः चढ़ाते समय इनका मुख ऊपरकी ओर ही रखना चाहिये। दूर्वा एवं तुलसीदलको अपनी ओर और बिल्वपत्र नीचे मुखकर चढ़ाना चाहिये। दाहिने हाथके करतलको उत्तान कर मध्यमा, अनामिका और अँगूठेकी सहायतासे फूल चढ़ाना चाहिये।

उतारनेकी विधि—चढ़े हुए फूलको अँगूठे और तर्जनीकी सहायतासे उतारना चाहिये।

देव-पूजामें निषिद्ध पत्र-पुष्प

देवीके लिये विहित-प्रतिषिद्ध पत्र-पुष्प

आक और मदारकी तरह दूर्वा, तिलक, मालती, तुलसी, भंगरैया और तमाल विहित-प्रतिषिद्ध हैं अर्थात् ये शास्त्रोंसे विहित भी हैं और निषिद्ध भी। विहित-प्रतिषिद्धके सम्बन्धमें तत्त्वसागरसंहिताका कथन है कि जब शास्त्रोंसे विहित फूल न मिल पायें तो विहित-प्रतिषिद्ध फूलोंसे पूजा कर लेनी चाहिये।

शिवार्चामें निषिद्ध पत्र-पुष्प

कदम्ब, सारहीन फूल या कठूमर, केवड़ा, शिरीष, तिन्तिणी, बकुल (मौलसिरी), कोष्ठ, कैथ, गाजर, बहेड़ा, कपास, गंभारी, पत्रकंटक, सेमल, अनार, धव, केतकी, वसंत ऋतुमें खिलनेवाला कंदविशेष, कुंद, जूही, मदन्ती, शिरीष, सर्ज और दोपहरियाके फूल भगवान् शंकरपर नहीं चढ़ाने चाहिये। वीरमित्रोदयमें इनका संकलन किया गया है।

विष्णुके लिये निषिद्ध फूल

विष्णुभगवान्पर नीचे लिखे फूलोंको चढ़ाना मना है—

आक, धतूरा, कांची, अपराजिता (गिरिकर्णिका), भटकटैया, कुरैया, सेमल, शिरीष, चिचिड़ा (कोशातकी), कैथ, लाङ्गुली, सहिजन, कचनार, बरगद, गूलर, पाकर, पीपर और अमड़ा (कपीतन)।

घरपर रोपे गये कनेर और दोपहरियाके फूलका भी निषेध है।

सूर्यके लिये निषिद्ध फूल

गुंजा (कृष्णला), धतूरा, कांची, अपराजिता (गिरिकर्णिका), भटकटैया, तगर और अमड़ा—इन्हें सूर्यपर न चढ़ाये। वीरमित्रोदयने इन्हें सूर्यपर चढ़ानेका स्पष्ट निषेध किया है।

वे भी भगवतीपर चढ़ाये जाते हैं[१]। जितने लाल फूल हैं वे सभी भगवतीको अभीष्ट हैं तथा सुगन्धित समस्त श्वेत फूल भी भगवतीको विशेष प्रिय हैं[२]।

बेला, चमेली, केसर, श्वेत और लाल फूल, श्वेत कमल, पलाश, तगर, अशोक, चंपा, मौलसिरी, मदार, कुंद, लोध, कनेर, आक, शीशम और अपराजित (शंखपुष्पी) आदिके फूलोंसे देवीकी भी पूजा की जाती है[३]।

इन फूलोंमें आक और मदार—इन दो फूलोंका निषेध भी मिलता है—**'देवीनामर्कमन्दारौ.....(वर्जयेत्)'** (शातातप)। अतः ये दोनों विहित भी हैं और प्रतिषिद्ध भी हैं। जब अन्य विहित फूल न मिलें तब इन दोनोंका उपयोग करे[४]। दुर्गासे भिन्न देवियोंपर इन दोनोंको न चढ़ाये।

१-यानि पुष्पाणि चोक्तानि शङ्करस्यार्चने पुरा।
तानि गौर्याः प्रशस्तानि त्वपामार्गो विशेषतः॥
शिवार्चने निषिद्धानि पत्रपुष्पफलानि च।
तानि देव्याः प्रशस्तानि अनुक्तानि विशेषतः॥

२-नित्यं गौर्याः प्रशस्तानि रक्तपुष्पाणि सर्वदा।
शुक्लान्यपि च सर्वाणि गन्धवन्ति स्मृतानि वै॥
(पारिजात)

३-ऋतुकालोद्भवैः पुष्पैर्मल्लिकाजातिकुङ्कुमैः॥
सितरक्तैश्च कुसुमैस्तथा पद्मैश्च पाण्डुरैः॥
किंशुकैस्तगरैश्चैव किंकिरातैः सचम्पकैः।
बकुलैश्चैव मन्दारैः कुन्दपुष्पैस्तिरीटकैः।
करवीरार्कपुष्पैश्च शिंशपैश्चापराजितैः॥
(आचारभूषण)

४-अर्कपुष्पविधानं तु विहितालाभे द्रष्टव्यम् देवीनामर्कमन्दाराविति निषेधात्।

किंतु दुर्गाजीपर चढ़ाया जा सकता है, क्योंकि दुर्गाकी पूजामें इन दोनोंका विधान है[1]।

शमी, अशोक, कर्णिकार (कनियार या अमलतास), गूमा, दोपहरिया, अगस्त्य, मदन, सिन्दुवार, शल्लकी, माधवी आदि लताएँ, कुशकी मंजरियाँ, बिल्वपत्र, केवड़ा, कदम्ब, भटकटैया, कमल[2]—ये फूल भगवतीको प्रिय हैं।

देवीके लिये विहित-प्रतिषिद्ध पत्र-पुष्प

आक और मदारकी तरह दूर्वा, तिलक, मालती, तुलसी, भंगरैया और तमाल विहित-प्रतिषिद्ध हैं अर्थात् ये शास्त्रोंसे विहित भी हैं और निषिद्ध भी हैं[3]। विहित-प्रतिषिद्धके सम्बन्धमें तत्त्वसागरसंहिताका कथन है कि

१-अर्कमन्दारनिषेधो दुर्गेतरदेवीविषयः। दुर्गापूजाधिकारे तयोः पाठात्।
(आचारेन्दु, पृ० १५९)

२-मल्लिकामुत्पलं पुष्पं शमीं पुन्नागचम्पकम्।
अशोकं कर्णिकारं च द्रोणपुष्पं विशेषतः॥
(आचारेन्दु, पृ० १५९)

धत्तूरकातिकैश्च बन्धूकागस्तिसम्भवैः।
मदनैः सिन्दुवारैश्च सुरभीभिर्बकैस्तथा।
लताभिर्ब्रह्मवृक्षस्य दूर्वाङ्कुरैः सुकोमलैः॥
मञ्जरीभिः कुशानां च बिल्वपत्रैः सुशोभनैः।
...... केतकीं चातिमुक्तं च बन्धूकं बहुलान्यपि।
कर्णिकारः कदम्बश्च सिन्दुवारः समृद्धये।
पुन्नागश्चम्पकश्चैव यूथिका वनमल्लिका॥
तगरार्जुनमल्ली च बृहती शतपत्रिका॥
(वीरमि०, पृ० ३१५—३१८)

विशेषः—इन श्लोकोंमें जो फूल आ चुके हैं, उनका हिंदीमें उल्लेख नहीं किया गया है।

३-तिलकं मालती वाणस्तुलसी भृङ्गराजकम्।
तमालं शिवदुर्गार्थं निषिद्धविहितं भवेत्॥ (भविष्यपुराण)

जब शास्त्रोंसे विहित फूल न मिल पायें तो विहित-प्रतिषिद्ध फूलोंसे पूजा कर लेनी चाहिये[1]।

शिव-पूजनके लिये विहित पत्र-पुष्प

भगवान् शंकरपर फूल चढ़ानेका बहुत अधिक महत्त्व है। बतलाया जाता है कि तपःशील सर्वगुणसम्पन्न वेदमें निष्णात किसी ब्राह्मणको सौ सुवर्ण दान[2] करनेपर जो फल प्राप्त होता है, वह भगवान् शंकरपर सौ फूल चढ़ा देनेसे प्राप्त हो जाता है[3]। कौन-कौन पत्र-पुष्प शिवके लिये विहित हैं और कौन-कौन निषिद्ध हैं, इनकी जानकारी अपेक्षित है। अतः उनका उल्लेख यहाँ किया जाता है—

पहली बात यह है कि भगवान् विष्णुके लिये जो-जो पत्र और पुष्प विहित हैं, वे सब भगवान् शंकरपर भी चढ़ाये जाते हैं। केवल केतकी—केवड़ेका निषेध है[4]।

शास्त्रोंने कुछ फूलोंके चढ़ानेसे मिलनेवाले फलका तारतम्य बतलाया है, जैसे दस सुवर्ण-मापके बराबर सुवर्ण-दानका फल एक आकके फूलको चढ़ानेसे मिल जाता है। हजार आकके फूलोंकी अपेक्षा एक कनेरका फूल, हजार कनेरके फूलोंके चढ़ानेकी अपेक्षा एक बिल्व-

---

१-विहितप्रतिषिद्धैस्तु विहितालाभतोऽर्चयेत्।

२-एक सुवर्ण=सोलह माशा या एक कर्ष।

३-तपःशीलगुणोपेते विप्रे वेदस्य पारगे।
दत्त्वा सुवर्णस्य शतं तत्फलं कुसुमस्य च॥
(वीरमित्रोदय, पृ० २०)

४-विष्णोर्यानीह चोक्तानि पुष्पाणि च पत्रिकाः।
केतकीपुष्पमेकं तु विना तान्यखिलान्यपि।
शस्तान्येव सुरश्रेष्ठ शंकराराधनाय हि॥ (नारद)

नित्यहोम-विधि

नित्यकर्मके पश्चात् पूर्वमुख बैठकर आसन-शुद्धिके बाद आचमन, प्राणायाम करके संकल्प करे। **ॐ अद्य** आदि देश-कालका उच्चारण कर **गोत्रः, प्रवरः, शर्मा (वर्मा/ गुप्तः/ दासः) अहं नित्यकर्मानुष्ठानसिद्धिद्वारा श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं च नित्यहोमं करिष्ये।**

पञ्चभूसंस्कार—संकल्प करनेके बाद वेदीके निम्नलिखित पाँच संस्कार करने चाहिये—

(१) तीन कुशोंसे वेदी अथवा ताम्रकुण्डका दक्षिणसे उत्तरकी ओर परिमार्जन करे तथा उन कुशोंको ईशान दिशामें फेंक दे (**दर्भैः परिसमुह्य**)। (२) गोबर और जलसे लीप दे (**गोमयोदकेनोपलिप्य**)। (३) स्रुवा अथवा कुशमूलसे पश्चिमसे पूर्वकी ओर प्रादेशमात्र (दस अंगुल लंबी) तीन रेखाएँ दक्षिणसे प्रारम्भ कर उत्तरकी ओर खींचे (**वज्रेणोल्लिख्य**)। (४) उल्लेखनक्रमसे दक्षिण अनामिका और अँगूठेसे रेखाओंपरसे मिट्टी निकालकर बायें हाथमें तीन बार रखकर पुनः सब मिट्टी दाहिने हाथमें रख ले और उसे उत्तरकी ओर फेंक दे (**अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य**)। (५) पुनः जलसे कुण्ड या स्थण्डिलको सींच दे (**उदकेनाभ्युक्ष्य**)।

इस प्रकार पञ्चभूसंस्कार करके पवित्र अग्नि अपने दक्षिणकी ओर रखे और उस अग्निसे थोड़ा क्रव्याद-अंश निकालकर नैर्ऋत्यकोणमें रख दे। पुनः सामने रखी पवित्र अग्निको कुण्ड या स्थण्डिलपर निम्न मन्त्रसे स्थापित करे—**ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ आ सादयादिह।**

—इस मन्त्रसे अग्नि-स्थापनके पश्चात् कुशोंसे परिस्तरण करे। कुण्ड या स्थण्डिलके पूर्व उत्तराग्र तीन कुश या दूर्वा रखे। दक्षिणभागमें पूर्वाग्र तीन कुश या दूर्वा रखे। पश्चिमभागमें उत्तराग्र तीन कुश या दूर्वा रखे। उत्तरभागमें पूर्वाग्र तीन कुश या दूर्वा रखे। अग्निको बाँसकी नलीसे प्रज्वलित करे। इसके बाद अग्निका ध्यान करे।

अमर तत्व जो त्रय कालों का भेद यथावत् पाता है।
बुद्धि, ज्ञान की पाँच इन्द्रियाँ, अहंकार से नाता है।।
इन्हीं सप्त ऋत्विज्का फैला जिसमें निशदिन यज्ञ-वितान।
नित्य युक्त शिव संकल्पों से वह मन मेरा हो भगवान्।। 4।।

चार वेद निगमागम सारे, ईश-ज्ञान के सुन्दर स्रोत।
रथ के पहिये में ज्यों आरे एव रहते ओत-प्रोत।।
जगम-जग का चित्त अचल हो, जिसमें रहता निष्ठावान्।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से वह मन मेरा हो भगवान्।। 5।।

जो जन-कुल को बागडोर से इधर उधर ले जाता है।
चतुर सारथी ज्यों घोड़े को उत्तम चाल चलाता है।
सदा प्रतिष्ठित हृदय देश मे, विपुल तीव्र गति अजर महान्।
नित्य युक्त शिव संकल्पों से वह मन मेरा हो भगवान्।। 6।।

स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते। शं राजन्नोषधीभ्यः

—सा0 उत्तरार्चिक।प्रपा0 1।मन्त्र 3

हे भगवान्! हमारे मन में ज्ञान प्रभा फैलाओ।
औषध, सोम, धेनु, धन रक्षा में कटिबद्ध कराओ।।

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु।।27।।

अन्तरिक्ष द्यौ पृथ्वी प्रमुदित हमको अभय बनावें।
प्रभु के पद पर यज्ञ कर्म के फल परमार्थ चढ़ावें।।

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।28।।

मित्र, अमित्र, अधेरी रजनी अनुदित अभय बनावें।
भक्त 'भवानी' भयभञ्जक पर श्रद्धा-सुमन चढ़ावें।।

—अथर्व का0 19।सू0 15।मन्त्र 5-6।।

सामान्य होम विधि:

(दैनिक, विशेष सभी यज्ञों में)

विधि (4) – तत्पश्चात् हवन कुण्ड अथवा वेदी में समिधायें रक्खें। तीन समिधायें पहिले से बचाकर अलग रखलें, पुनः निम्नलिखित मन्त्र द्वारा घृत के दीपक या दियासलाई से कपूर जलावें।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। गोभि0 प्र0 1। खं0 1 सू0 11।।

हे सच्चिदानन्द ! यह अग्नि मंगलमय हो।

आचमन, अंगस्पर्श एवं स्तुति प्रार्थनोपासना के पश्चात् और विशेष यज्ञों में इनको करने के बाद स्वस्तिवाचन शान्तिकरण के पश्चात्।

विधि (5) – फिर उस जलते हुए कर्पूर को स्रुवे में रखकर नीचे लिखे मन्त्र से कुण्ड में रखी हुई समिधाओं के मध्य में छोड़ दें।

ओम् भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे।।

–यजु0 3 ।5 ।।

देवताओं को यथायोग्य भाग पहुँचाने वाली अग्नि को प्रदीप्त करके मैं सर्वलोक को अनुकूल बनाने के लिए उस परमेश्वर की प्रार्थना करता हूँ जो सर्वाधार, सर्वव्यापक और सुख–स्वरूप है और जिसमें पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्यौलोक स्थित हैं। यह यज्ञाग्नि हमें अन्नादि देकर तृप्त और पुष्ट करे।

विधि (6)– इस मन्त्र से कुण्ड में छोटी–छोटी समिधायें रखकर अग्नि को सँवार, यदि आवश्यक हो तो पंखा से अग्नि को प्रदीप्त करें –

ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सं सृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

–यजु0 15 ।54

हे अग्ने ! तू प्रसन्न होकर प्रकट हो। हे यजमान ! तुम सजग और सावधान होकर यज्ञ–कर्म का अनुष्ठान करो। वेद–ज्ञान फैलाओ, अतिथि–सत्कार

करो, कूप–तड़ाग खुदवाओ, बाग–बगीचे लगाओ, पाठशाला और धर्मशाला बनवाओ, पुस्तकालय और चिकित्सालय खोलो। जनता की सेवा–समन्वित इष्ट कर्म (यज्ञ) के नाना रूप हैं। इस यज्ञ में विश्वदेव विराजमान हों।

समिदाधान

विधि (7) – जब अग्नि समिधाओं में प्रविष्ट होने लगे तब निम्न चार मन्त्रों से तीन समिधायें जो पहले से तैयार हों, घी में भिगोकर अग्नि में चढ़ावें। इस मन्त्र से पहली समिधा चढ़ावें –

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।। 1 ।। –आश्व0 1 ।10 ।12 ।।

हे घट–घट में व्यापी भगवन् ! यह मेरी आत्मा तेरे लिए ईंधन रूप है। मुझमें तू प्रकाशित होकर प्रेरणा कर, जिससे मैं कल्याण मार्ग में आगे बढ़ूं। हमें तू आज्ञाकारी पुत्र, पौत्र, सेवक आदि प्रजा से प्रतिष्ठित कर। गौ आदि पशुओं एवं दूध–घी आदि खाद्य–पदार्थों से समृद्ध कर। यह सुन्दर समिधा है, ज्ञानस्वरूप परमात्मा के लिए, मेरे लिए नहीं।

इन दो मन्त्रों से दूसरी समिधा चढ़ावें।

ओम् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा।। इदमग्नये इदन्न मम।। 2।।

ओम् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।। 3।।

हे विद्वानो ! तुम समिधा से यज्ञ की पवित्र अग्नि को प्रज्ज्वलित करो और इस यज्ञाग्नि की तरह घृतादि से सेवा करो। इसमें अपनी कामनाओं की त्याग–रूपी सामग्री की यथा–विधि आहुति डालो। यह सुन्दर समिधा ज्योतिरूप जगदीश्वर के लिए है, मेरे लिए नहीं।। 1 ।।

हे यज्ञकर्त्ता ! अग्नि में तपाया हुआ शुद्ध घी लेकर इस यज्ञ में आहुति

आचमन अंगस्पर्श एवं स्तुति प्रार्थनोपासना के पश्चात् और विशेष यज्ञों में इनको करने के बाद स्वस्तिवाचन शान्तिकरण के पश्चात्।

डालो, जिससे सारे संसार का कल्याण हो। सुन्दर समिधा प्रकाश–स्वरूप परमेश्वर के लिए हैं, मेरे लिए नहीं।

इस निम्नलिखित मन्त्र से तीसरी समिधा चढ़ावें –

ओं तं त्वां समिद्भिरंगिरो घृतेन वर्धयामसि।
बृहच्छोचायविष्ठ्य स्वाहा।। इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदन्न मम।।4।।

–यजु0 अ0 3 ।मन्त्र 1 ।2 ।3 ।।

हे सर्व फलदायक प्रगतिशील अग्ने! तुझे घृत और समिधाओं से अलंकृत कर वातावरण को शान्त, शुद्ध और सात्विक बनावें। यह सुन्दर समिधा है, मंगलस्वरूप महेश्वर के लिये, मेरे लिए नहीं।। 4।।

पंच–घृताहुति

विधि (8) – इस मन्त्र से पाँच बार घी की आहुति देवें–

ओम्! अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धयचास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदं न मम।।

हे अग्ने ! यह काठ तेरा आधार है, इससे तू प्रदीप्त हो और बढ़। हमको पुत्रादि प्रजा से सम्पन्न कर और पशुओं से लाभ पहुँचा। यह हमारी आहुति स्वीकार कर, जो प्रजापति परमात्मा के लिए है, मेरे लिए नहीं।

जलाञ्जलि

विधि (9) – तत्पश्चात् अञ्जलि में जल लेकर निम्नलिखित मन्त्रों से वेदी या कुण्ड के चारों ओर छिड़कें –

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व। इससे वेदी या कुण्ड के पूर्व भाग में।

हे अखण्ड अखिलेश्वर ! हमें सुमति दीजिए–

ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व। इससे पश्चिम में।

हे व्यापक विभो ! हमें सुबुद्धि दीजिए।

ओम् सरस्वत्यनुमन्यस्व। इससे उत्तर में।

– गोभिल0 गृ0 अ0 प्र0 1 ।ख0 3 सू0 1 से 3 ।।

हे ज्ञानरूप भगवन् ! हमें ज्ञान दीजिए।

ओं देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।।

(इससे वेदी या कुण्ड के चारों ओर)–यजु0 अ0 30 । मन्त्र 1

हे महाप्रभु ! आप शिल्पकारों और विश्व कर्त्ताओं को उत्पन्न कर संसार का सौन्दर्य बढ़ावें और यज्ञपतियों को पैदा कर प्रजा का कल्याण करावें। संगीतज्ञों और साहित्यकों में पवित्र भाव भरें। आप वाचस्पति हैं, अतएव हमारी वाणी को मधुर और बुद्धि को विशुद्ध बनावें।

आघारावाज्याहुति

विधि (10) – फिर निम्नलिखित मन्त्रों से घृत की दो आहुतियाँ कुण्ड के भीतर प्रज्ज्वलित अग्नि पर देवें।

ओं अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।।

इससे कुण्ड के उत्तर में प्रकाश स्वरूप परमेश्वर अथवा यज्ञाग्नि के लिये यह आहुति हैं, मेरे लिये नहीं।

ओं सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदन्न मम।।

इससे कुण्ड के दक्षिण में शान्ति स्वरूप सर्वेश्वर अथवा सोमलता आदि के लिए ये आहुति है, मेरे लिये नहीं।

आज्यभागाहुति

विधि (11) – इन दोनों मन्त्रों से यज्ञ–कुण्ड के मध्य में घी की आहुति देवें –

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये–इदन्न मम।।

– प्रजापति परमात्मा प्रजापालक के लिए यह आहुति है, मेरे लिए नहीं।
–यजु0 22 ।32

यदि पुरुष और स्त्री दोनों हों (अथवा कोई दो जने हों तो पुरुष घी की और स्त्री साकल्य सामग्री की आहुति दें। और यदि अकेले ही हों तो साकल्य में ही घृत मिला लें। साकल्य की आहुति देते समय हाथ की पीठ नीचे की ओर रक्खें, हाथ का अगला भाग झुकाकर श्रद्धापूर्वक आहुति दें, चुटकी बाँध कर नहीं।)

ओम् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय–इदन्न मम।।

इन्द्र रूपी ईश्वर अथवा जनता के लिए यह आहुति है, मेरे लिए नहीं।

–यजु0 22।27

विधि (12) – पुनः प्रातःकाल को प्रातः काल के तथा सायंकाल को सायंकाल के मन्त्रों से घृत और सामग्री की आहुति दें।

ज्ञातव्य – यदि दोनों काल हवन करने में असमर्थ हों तो दोनों कालों की आहुतियाँ निम्न विधि से प्रातःकाल ही दे लें।

प्रातः काल की आहुतियाँ

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। –य0 अ0 3 मं09।।

–सूर्य के प्रकाश के प्रकाशक परमात्मा की प्रसन्नता के लिये हम स्तुति करते हैं।

ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वचः स्वाहा।

–जिसकी ज्योति से सारा जगत् जगमगा रहा है, उसी जगदीश्वर की प्रसन्नता के लिए हम स्तुति करते हैं।

ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा। –य0 अ0 3 मं09।।

– जिसकी ज्योति से सारा जगत् जगमगा रहा है, उसी जगदीश्वर की प्रसन्नता के लिये हम स्तुति करते हैं।

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा।।

– यजु0 अ0 3।मं0 10।।

– सर्वलोक में व्यापक सर्वशक्तिमान् सर्वनियन्ता सर्वेश्वर की प्रीति प्राप्त करने के लिए हम स्तुति करते हैं।

ओम् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम।।

– परमेश्वर प्राणाधार है, वही प्राणवायु का पोषक है। उसी के लिए यह आहुति है, मेरे लिये नहीं।

ओम् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदम् वायवेऽपानाय इदन्न मम।।2।।

– परमेश्वर प्राणपति है। वही अपान–वायु का रक्षक है। उसी के लिये

यह आहुति है, मेरे लिए नहीं।

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम।।3।।

– परमेश्वर मंगल–स्वरूप है। उसी के प्रताप से व्यान–वायु मनुष्य के लिए स्वास्थ्यदायक होता है। यह आहुति उसी के लिए हैं, मेरे लिए नहीं।

ओम् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम।।

– पार0 का0 1 5 सू0 3।4।।

– परमात्मा सबका स्वामी है। अग्नि, वायु और सूर्य उसी के नियन्त्रण के अधीन हैं। वही प्राण, अपान और व्यान से जीवन का पोषण और रक्षण करता है। यह आहुति उसी के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओम् आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।

परमात्मा–सर्वरक्षक, सर्वव्यापक, ज्योतिर्मय, जगत् का बीज अविनाशी, सृष्टिकर्ता, सर्वाधार, अन्तर्यामी और सुखस्वरूप है।

विधि (13) – तदनंतर निम्नलिखित तीन मंत्रों से आहुति दें।

ओम् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।1। –यजु0 अ0 32 मंत्र 34।

हे ज्ञान–स्वरूप परमेश्वर ! जिस मेधा बुद्धि का आश्रय लेकर मनुष्य उच्चपद प्राप्त कर लेता है, उसी मेधा से हमें अलंकृत करो।

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा।।2।। – यजु0 अ0 30।मंत्र 3।।

इस मंत्र का अर्थ पृष्ठ 40 पर देखें।

ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जहुराणमेनो भूयिष्ठाँ ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।। 3।।

– यजु0 अ0 40।मं0 16।।

इस मन्त्र का अर्थ पृष्ठ 43 पर देख लेवें।

सायंकाल की आहुतियाँ

(आहिताग्नि* होम)

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। –य0 अ0 3 मं09 ।।

आग्नि की ज्योति की भी ज्योति उस जगदीश्वर के अनुग्रह के लिए हम प्रार्थना करते हैं।

ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। –यज0 अ03 ।मं09 ।।

अग्नि में ज्योति स्वरूप परमेश्वर की दीप्ति है, इसी की हम प्रार्थना करते हैं।

इस तीसरे मन्त्र को मन में पढ़कर आहुति देवें –

ओम् अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा। –य0 अ0 3 ।मं09 ।।

अग्नि की ज्योति में परमात्मा की ज्योति है उसी की स्तुति करते हैं।

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा।

।–य0 अ0 3 ।मंत्र 10 ।।

प्रकाशमान् सर्व प्रेरक महाप्रभु की रात्रि भी एक विभूति है।

वह हमारे लिए प्रीति युक्त, सुखप्रद हो। यह यज्ञ सफल हो, यही परमात्मा से हमारी प्रार्थना है।

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।* (1)
ओम् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। (2)
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। (3)
ओम् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा। (4)
ओउम् आपोज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।

–पार0 का0 1–5 सू0 3–4

---

* एक ही समय यज्ञ करने की स्थिति में। यदि दोनों समय यज्ञ करें तो यहाँ (1) इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम।(2) इदं वायवे उपानाय इदन्न मम।(3) इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम।(4) इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम' लगावें। यदि एक ही समय करें तो न लगावें।(सार्वदेशिक से) यदि सायंकाल पृथक् यज्ञ करें तो आचमन (विधि 1) से विधि 11 तक की सम्पूर्ण क्रिया करके सायंकाल के मन्त्रों के अन्त में यां मेधां, विश्वानि देव तथा अग्ने नय सुपथा की आहुतियाँ भी दें।

विधि (10) – यदि घृत और साकल्य शेष रहे तो गायत्री मन्त्र अथवा 'ओम् विश्वानि0' इस प्रार्थना–मन्त्र से तीन या अधिक आहुतियाँ पूर्णाहुति मन्त्र से पूर्ण देवें।

पूर्णाहुति

ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा। इस मन्त्र से तीन आहुति दें।

द्रष्टव्य – दैनिक यज्ञ में इतनी ही विधि करणीय है। अन्त में 'शान्ति पाठ' (जो आगे दिया जायेगा) कर यज्ञ–कार्य की समाप्ति करें। पश्चात् पूजनीय प्रभो यह ईश–विनय प्रेम और श्रद्धा से गावें।

सामान्य होम विधिः समाप्त

विशेष यज्ञों में

(पृष्ठ 56 से आगे की विधि)

विधि (1) – तदनन्तर अग्न्याधान, समिदाधान आदि से लेकर यदि प्रातःकाल हो तो प्रातः सायं दोनों समय की अथवा केवल प्रातःकाल की और यदि सायंकाल हो तो सायंकाल की आहुतियाँ 'अग्ने नय सुपथा' मंत्र (पृष्ठ 56 से 63) तक देवें। पश्चात् 'आघारावाज्य भागाहुति' चार, 'व्याहृति आहुति' चार 'स्विष्टकृत् आहुति' एक तथा 'प्राजापत्याहुति' एक ये दस आहुतियाँ नीचे लिखे मन्त्रों से देवें–

आघारावाज्यभागाहुति

ओं अग्नये स्वाहा।। इदमग्नये इदन्न मम।। इससे उत्तर में।
(गोभिल0)

ओं सोमाय स्वाहा।। इदं सोमाय इदन्न मम।। इससे दक्षिण में (गोभिल0)
ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम।। इससे मध्य में।
ओं इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदन्न मम।। इससे मध्य में।
–(यजु0 22।32,27)

व्याहृत्याहुतियाँ

ओम् भूरग्नये स्वाहा।। इदमग्नये इदन्न मम।। 1
प्रकाश–पुञ्ज परमेश्वर के लिए यह आहुति है, मेरे लिए नहीं।

ओम् भुवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे इदन्न मम।। २
सर्वव्यापक सर्वेश्वर के लिए यह आहुति है, मेरे लिए नहीं।

ओं स्वरादित्याय स्वाहा।। इदमादित्याय इदन्न मम।। 3
ज्योतिरूप जगदीश्वर के लिए यह आहुति है, मेरे लिए नहीं।

ओम् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा। इदमग्नि वाय्वादित्येभ्यः इदन्न मम।। 4

ईश्वर सर्वाधार, सुख–स्वरूप और सर्वव्यापक है। अग्नि, वायु और सूर्य के कल्याणकारी होने के लिए यह आहुति है, मेरे लिए नहीं।

स्विष्टकृत–होमाहुति

इस मन्त्र से घी अथवा भात की आहुति देवें –

ओम् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्।
अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वंस्विष्टं सुहुतं करोतु मे।
अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां
कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा।
इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्न मम।।

यह भौतिक अग्नि शरीर का कल्याण करें और आध्यात्मिक अग्नि आत्मा का। यज्ञ फल–दायक हो, पूर्व कृत पाप के लिए प्रायश्चित की प्रेरणा मिले, कामनायें स्वार्थ पूर्ण नहीं, प्रत्युत् जन हितकारी हों। मैंने कर्म का जो कुछ अनुष्ठान किया, चाहे वह अधिक हो या कम, उसे मैं श्रद्धा से इष्टदेव के चरणों पर चढ़ाता हूँ, उस पर अब मेरा कोई अधिकार नहीं रहा।

प्राजापत्याहुति

इस मन्त्र को मन में पढ़कर आहुति दें –

ओम् प्रजापतये स्वाहा।। इदं प्रजापतये इदन्न मम।।
यह आहुति प्रजापति परमात्मा के लिए है, मेरे लिए नहीं।

विधि (7) – निम्नलिखित मंत्रों से आज्याहुति दें। समावर्त्तन और विवाह में यह आहुतियाँ मुख्यतया देनी योग्य है।

आज्याहुति

ओम् भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः।
आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।। 1।।

हे प्रकाशरूप परमात्मन् ! मेरे जीवन को पवित्र करो और आयु को बढ़ाओ। मुझे अन्न और बल दो। दुष्ट जीव जन्तुओं से मेरी रक्षा करो। यह आहुति पतित पावन परमेश्वर के लिये है, मेरे योग्य नहीं।

ओम् भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पवमानः पांचजन्यः पुरोहितः।
तमीमहे महागयं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।।2।।

हे भगवन्! तू सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, अन्तर्यामी है। तू ही प्रजातन्त्र के पुरोहित और पञ्चायत का प्रेरक है जिसका यशोगान कर विद्वान् भव–बाधा से विमुक्त हो जाते हैं। उसी परमेश्वर के लिए यह आहुति है, मेरे लिए नहीं।

ओम् भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्।
दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय। इदन्न मम।।3।।

–ऋ0 9।66।19।11

हे सच्चिदानन्द ! हमें शौर्य और शक्ति दो, तेजस्वी बनाओ यह सम्पत्ति बढ़ाओ। यह आहुति परमात्मा के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओम् भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्नमम।। 4।।

हे प्रजापति ! तू सर्वोपरि है। जिसे–जिस कामना से हम तेरा आश्रय लेवें उसे तू पूर्ण कर, जिससे हम सुख–सम्पत्ति भोग सकें। यह आहुति प्रजापति के लिए है, मेरे लिए नहीं।

अष्टाज्याहुति

विधि (3) – इसके अनन्तर समस्त मंगल कार्यों में निम्नलिखित आठ मन्त्रों से 'अष्टाज्याहुति' देनी चाहिए।

ओं त्वन्नोऽग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषांसि प्रमुमुग्ध्स्मत् स्वाहा। इदमग्निवरुणाभ्याम् इदन्न मम।। 1।।

हे प्रकाशमान् परमात्मन् ! तू ही हमारे सब दृश्य और अदृश्य कर्मों को जानने वाला है। हमें ऐसी सुमति दें कि हम सदैव तेरी आज्ञा का पालन करें और किसी से द्वेष–भाव न रक्खें।

यह आहुति उसी तेजस्वी यज्ञपति के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओं स त्वन्नोअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो व्रीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्निवरुणाभ्याम् इदन्न मम।। 2।।

हे ज्योतिर्मय जगदीश्वर! तू हमारी रक्षा और पालन कर। इस सुन्दर प्रभातकाल में अग्निहोत्रादि शुभ कर्मों से हमारे अन्तःकरण में छिपी हुई पाप वासनायें नष्ट हो जायें। पुण्य कार्य में सदा प्रेरणा और फल देने वाले प्रभु! इस हवि को तू स्वीकार कर। यह आहुति परमात्मा के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओम् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके स्वाहा।। इदं वरुणाय इदन्न मम।। 3।।

हे उपास्यदेव ! तू मेरी प्रार्थना को सुन और आज इस यज्ञ से हमें सुखी कर। मनोकामना की पूर्ति के लिए मैं बार–बार तेरी स्तुति करता हूँ। यह आहुति प्रशंसनीय परमात्मा के लिए है, मेरे लिए नहीं। –ऋ0 1।25।19

ओं तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा। इदं वरुणाय इदन्न मम।।4।।

हे अखिलेश्वर ! हमारी वेद विहित स्तुति स्वीकार कर हम तुम से आयु की याचना करते हैं और उसे यज्ञादि शुभ कार्यों के अनुष्ठान में उपयोग करना चाहते हैं। यह आहुति भगवान् के लिए हैं, मेरे लिए नहीं। –ऋ0 1।24।11

ओम् ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नोऽद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा।। इदं वरुणाय सवित्रेविष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्क्केभ्यः इदन्न मम।। 5।।

हे पूज्य परमेश्वर ! यज्ञ सम्बन्धी शुभ कर्मों में सैकड़ों–हजारों विघ्न–बाधायें आ पड़ती हैं, उनसे तू हमारी रक्षा कर। यह आहुति सर्वोत्पादक सर्वेश्वर के लिए हैं, मेरे लिए नहीं।

ओम् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयासि। अया नो यज्ञं वहास्या नो धेहि भेषजं स्वाहा।। इदमग्नये अयसे इदन्न मम।। 6।।

–कात्या0 25।1।11।।

हे विश्वेश्वर ! तुम बाहर और भीतर सर्वत्र विराजमान हो। निर्दोष और निष्कलक मनुष्यों के प्रतिपालक और कल्याणकारक हो। हमारे शोक सन्ताप

को दूर करो। यह आहुति विश्वम्भर के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओम् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणायाऽऽदित्यायाऽदितये च इदन्न मम।। 7।।

हे अविनाशी ईश्वर ! हमारे जीवन के छोटे-बड़े सभी बन्धनों को काट दे, हमारे हृदय में कोई दुर्भाव न हो, हम शरीर से कोई अपराध न करें तेरे आदर्श का पालन और मोक्ष प्राप्ति का प्रयत्न करते रहें। यह आहुति पूजनीय परमात्मा के लिए है, मेरे लिए नहीं। —(ऋ0 1।24।15)

ओम् भवतं नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञं हिं सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा। इदं जातवेदोभ्याम् इदन्न मम।। 8।।

हे दयानिधे ! हमारे मध्य में समान मन और समान बुद्धि वाले निष्पाप व्यक्तियों का समाज हो। हम एक दूसरे की सेवा और सहायता करें, यज्ञ का लोप न होने दें। यज्ञकर्त्ता की रक्षा करें, आज यज्ञ-काल में सभी शान्त रूप हों। यह आहुति ब्रह्म के लिए है, मेरे लिए नहीं।

विधि (9) – पश्चात् स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण दोनों अथवा एक से, अथवा दोनों के या एक के थोड़े मन्त्रों से अथवा यजुर्वेद के इकत्तीसवें अध्याय (पुरुष सूक्त) या अन्य किसी अध्याय से अथवा पूरे यजुर्वेद या चारों वेदों से मन्त्र के आदि में 'ओ3म्' और अन्त में 'स्वाहा' जोड़कर (स्वाहा का उच्चारण सभी उच्च स्वर से करें) सामग्री और घृत के परिमाण के अनुसार आहुति दें। तदनन्तर कम से कम तीन आहुतियाँ 'गायत्री मन्त्र' या 'ओ3म् विश्वानि0' मन्त्र से दें। फिर निम्न लिखित मंत्र से तीन आहुतियाँ (एक बार में एक आहुति) दें –

ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।

विधि (10) – अन्त में निम्न प्रकार से महावामदेव्य गान करके शान्ति पाठ के पश्चात् यज्ञ कार्य समाप्त करें।

महावामदेव्य गान

काऽ5 या। नश्चाऽ3 यित्राऽ2 आभुवात्। ऊ। ती सदावृधः स खा। औऽ3 हो हायि। कया ऽ13 शतायि। ष्ठौहो3। हुम्माऽ2। वा2तो3ऽ5 हायि। (1)

काऽ5स्त्वा। सत्यो2मा3उदानाम्। मा। हिष्ठा मात्सादन्धः। सा। औ3हो हायि। दृढाऽ23 विदा रुजौहो3। हुम्मा2। वाऽ3सो3ऽ5हायि। (2)

आऽ5मी। षुणा3। सा3खीनाम्। आ। बिता जरायितॄ। णाम्। ओ23 हो हायि। शता 23म्भवा सियोहो 3। हुम्मा 2 ताऽ2 यो 3ऽ5 हायि। (3)

सर्वत्र और सर्वदा विस्तृत-व्यापक सखा रूप परमात्मा हमें श्रेष्ठ बुद्धि और उत्तम कर्मों से प्राप्त हो सकते हैं। इस पञ्चभौतिक शरीर को पुष्ट और बलिष्ठ बनाने के लिए अन्न की आवश्यकता है, अतएव अन्न देने वाली मातृभूमि की सेवा और रक्षा करना मनुष्य का सर्वोपरि धर्म है। हे परमात्मन्! तुम्हीं साधारण प्राणियों के एकमात्रा रक्षक हो, अतएव हम तुम्हारी शरण में आये हैं, हमारी ओर अभिमुख होकर अपना आश्रय दो।

शान्ति पाठ

ओम् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सा मा शान्तिरेधि। ओ3म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

—यजु0 अ0 36।मंत्र 17।।

सभी मिलकर शान्तिपाठ के निम्न हिन्दी भावानुवाद को प्रेम व श्रद्धा से गायें।

शान्ति-गीत

शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में।
जल में थल में और गगन में, अन्तरिक्ष में अग्नि पवन में।
औषधि वनस्पति वन उपवन में, सकल विश्व के जड़ चेतन में।
ब्राह्मण के उपदेश वचन में, क्षत्रिय के द्वारा हो रण में।
वैश्य जनों के होवें धन में और शूद्र के हो चरणन में।। शान्ति0
शान्ति राष्ट्र निर्माण सृजन में, नगर, ग्राम में और भुवन में।
जीव मात्र के तन में मन में और प्रकृति के हो कण कण में।।
शान्ति कीजिये0 ।।

पक्ष यज्ञ विधि

पूर्णमासी की आहुतियाँ

ओं अग्नये स्वाहा।1। ओं अग्निषोमाभ्यां स्वाहा।2। ओं विष्णवे। स्वाहा।3।

अमावस्या की आहुतियाँ

ओं अग्नये स्वाहा।1। ओं इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा।2। ओं विष्णवे स्वाहा।3।

3. पितृ–यज्ञ

प्रत्येक ब्रह्मचारी व गृहस्थी का परम कर्त्तव्य है कि जीवित माता–पिता, दादा–दादी आदि अपने से बड़ों की नित्य श्रद्धा–भक्ति सहित सेवा करें।

जिन माता–पिता आदि ने अनेक प्रकार के कष्ट उठा कर हमारा लालन–पालन किया है, उनके ऋण से उऋण होना असम्भव ही है। जो लोग अपने इस कार्य में प्रमाद करते हैं वे नरकगामी होते हैं। अतः प्रत्येक ब्रह्मचारी व गृहस्थी का यह परम कर्त्तव्य है कि अपने माता–पिता आदि गुरुजनों को अपनी सेवा से तृप्त करें। इसी को 'तर्पण' कहते हैं, इनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करने को 'श्राद्ध' कहते हैं।

आजकल अविद्यान्धकार के कारण लोग तर्पण और श्राद्ध का अर्थ ही भूल गये हैं और माता–पिता के मर जाने पर उनको पानी देकर तर्पण और पिण्डदान तथा ब्राह्मण भोजन कराके श्राद्ध करते हैं। परन्तु यह सब व्यर्थ है, क्योंकि जीव मरकर अपने कर्मानुसार दूसरी योनि धारण कर लेता है। इस प्रकार के तर्पण व श्राद्ध से उसको लाभ नहीं पहुँच सकता।

प्रायः देखा यह जाता है कि लोग जीवित माता–पिता की सेवा में **उपेक्षा करते हैं और मरने पर उनको गंगा में पहुँचाते तथा तर्पण और श्राद्ध करते हैं, जैसा कि किसी ने कहा है –**

जियत पिता से दंगम–दंगा, मरे पिता पहुँचाये गंगा।

भला आप ही विचारें, इससे क्या लाभ? सच्चा तर्पण व 'श्राद्ध' तो यही है कि जीवित माता–पिता की नित्य प्रति श्रद्धाभक्ति पूर्वक सेवा की जावे और उनको हर तरह से तृप्त रखा जावे। यही 'पितृ–यज्ञ' है। जो ऐसा करते हैं, उसकी प्रत्येक कामना पूर्ण होती है।

4. बलिवैश्वदेव यज्ञ

विधि (1)– जब भोजन बन जाय तो भोजन करने से पूर्व प्रथम निम्नलिखित मन्त्रों से घृत मिश्रित भात अथवा खारी और नमकीन वस्तुओं के अतिरिक्त जो कुछ भोजन सामग्री बनी हो, अग्नि में उसके आगे लिखी दस आहुतियाँ दें–

ओउम् अग्नये स्वाहा।। 1।।

परमेश्वर के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओम सोमाय स्वाहा।। 2।।

सब पदार्थों को उत्पन्न और पुष्ट करके सुख देने वाले परमेश्वर के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओम् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा।। 3।।

जो प्राण स्वरूप (सब प्राणियों के जीवन का हेतु) अपान (सुख–स्वरूप) सब दुःखों के नाश का हेतु ईश्वर है, उसके लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओम् विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।। 4।।

संसार को प्रकाशित करने वाले परमेश्वर के गुण अथवा विद्वान् लोगों के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओम् धनवन्तरये स्वाहा।। 5।।

जन्म–मरण रूप रोगों के नाश करने वाले परमात्मा के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओम् कुहवै स्वाहा।। 6।।

अमावसयेष्टि आदि के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओम् अनुमत्यै स्वाहा।। 7।।

पौर्णमास्येष्टि अथवा परमेश्वर की चिति–शक्ति के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओम् प्रजापतये स्वाहा।। 8।।

सब जगत् के स्वामी के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओम् सहद्यापृथिवीभ्यां स्वाहा।। 9।।

पृथ्वी के राज्य और सत्य–विद्या के प्रकाश के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओम् स्विष्टकृते स्वाहा।। 10।।

इष्ट सुख के करने वाले प्रभु के लिए यह सुन्दर आहुति है।

विधि (2) – फिर निम्नलिखित मन्त्रों से एक थाली या पत्तल में नीचे बतलाई हुई दिशाओं में भाग रक्खें। यदि कोई अतिथि उस समय आ जायें तो उसको दे दें, अन्यथा अग्नि में छोड़ दें।

ओम् सानुगायेन्द्राय नमः।। इससे पूर्व की ओर।

सवैश्वर्य युक्त परमेश्वर और उसके गुणों के लिए यह बलि–भाग है।

ओम् सानुगाय यमाय नमः। इससे दक्षिण की ओर।

न्यायकारी परमेश्वर और सृष्टि में सत्य–न्याय के कर्त्ता सज्जनों के लिए यह बलि–भाग है।

ओम् सानुगाय वरुणाय नमः। इससे पश्चिम की ओर।

सबसे उत्तम परमेश्वर और उसके धार्मिक भक्तों के लिए यह बलि–भाग है।

ओम् सानुगाय सोमाय नमः। इससे उत्तर की ओर।

पुण्यात्माओं को आनन्दित करने वाले परमेश्वर तथा पुण्यात्मा लोगों के लिए यह बलि–भाग है।

ओम् मरुद्भ्यो नमः। इससे द्वार की ओर।

प्राण अर्थात् जिसके रहने से जीवन और निकलने से मरण होता है। इसलिये जिनकी रक्षा करनी आवश्यक है, उनके लिये यह बलि–भाग है।

ओम् अद्भ्यो नमः। इससे जल की ओर।

जो जल के समान शान्दियाक है, उनकी रक्षा आवश्यक है। इसलिये उनके लिये यह बलि–भाग है।

ओं वनस्पतिभ्यो नमः। इससे मूसल और ओखली की ओर।

जिससे वर्षा अधिक होती है, और जिनके फलादि से जगत् का उपकार होता है, इसलिये जिनकी रक्षा करनी योग्य है इनके लिए यह बलि–भाग हैं।

ओं श्रियैः नमः। इससे ईशानकोण की ओर।

जिस सबके सेवा करने योग्य परमात्मा की सेवा से राज्यश्री की प्राप्ति के लिये सदा उद्योग करना चाहिए। उसी के लिए यह बलि–भाग है।

ओं भद्रकाल्यै नमः। इससे नैऋत्यकोण की ओर।

कल्याण करने वाली परमात्मा की शक्ति का सदा आश्रय करना चाहिए। उसी के लिये यह बलि–भाग है।

ओं ब्रह्मणे नमः।

वेद के स्वामी परमात्मा की प्रार्थना और विद्या–प्रचार के लिये उद्योग करना चाहिए। उसी के लिये यह बलि–भाग है।

ओं वास्तुपतये नमः। इन दोनों से मध्य में।

गृह–सम्बन्धी पदार्थों के पालन करने वाले मनुष्य अथवा ईश्वर का सहाय सर्वत्र होना चाहिए। उसकी के लिये यह बलि–भाग है।

ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।

संसार के प्रकाशक ईश्वर के गुण अथवा विद्वान् लोगों के लिये बलि–भाग है।

ओं दिवाचरेभ्यो भूतेभ्यो नमः।

दिन में विचरने वाले प्राणियों से उपकार लेना तथा उनको सुख देना मनुष्य का काम है, उन्हीं के लिए यह बलि–भाग है।

ओं नक्तञ्चारिभ्यो भूतेभ्यो नमः। इन तीनों से ऊपर की ओर।

रात्रि में विचरने वाले प्राणियों से उपकार लेना तथा उन्हें सुख देना मनुष्य का काम है, उन्हीं के लिये यह बलि–भाग है।

ओं सर्वात्मभूतये नमः। इससे पीठ की ओर।

सब में व्याप्त परमेश्वर की सत्ता सदा ध्यान में रखनी चाहिए। उसी के लिये यह बलि–भाग है।

ओं पितृभ्य:स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। इससे दक्षिण की ओर।

माता–पिता, आचार्य, अतिथि, पुत्र और भृत्यादि को भोजन कराकर भोजन करना चाहिये। इन्हीं के लिये यह बलि–भाग है।

विधि (1) – फिर घृत सहित लवणान्न लेकर निम्न श्लोकों कहे अनुसार कुत्ता, पतित, चाण्डाल, पाप–रोगी, कौआ व कीड़े इन छः नामों से छः भाग रखें और जिसके हों उसी को दे दें।

शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम्।
वायसानां कृमीणां च शनकैर्निर्वपेद् भुवि।।

– मनु0 अ0 3 ।श्लोक।। 92

कुत्ते, पतित, चाण्डाल, पाप–रोगी, कौए, और कीड़े इनके भाग धीरे से भूमि पर रखें, जिससे कि मिट्टी न लगे।

5. अतिथि–यज्ञ

धार्मिक, परोपकारी, सत्योपदेशक, पक्षपात–रहित, सर्वहितकारक, विद्वानों की अन्नादि से सेवा करनी तथा उनसे श्रद्धापूर्वक प्रश्नोत्तर करके ज्ञान प्राप्त करना 'अतिथि–यज्ञ' कहलाता है। यह भी नित्य–कर्तव्य है। इस प्रकार उपर्युक्त पञ्च महायज्ञों को स्त्री–पुरुष नित्य किया करें।

✦

परिशिष्ट

1– प्रातः सोकर उठने के समय की प्रार्थना

(प्रातः 5 घड़ी रात रहे उठकर निम्न मंत्रों से प्रार्थना करनी चाहिये)

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम।। 1।।

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह।। 2।।

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम।। 3।।

उतेदानीं भगवन्त स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम।। 4।।

भग एव भगवां अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह।। 5।।

– ऋ0 मं0 7 सूक्त 41 ।।मं0 1 से 5।।

प्रभात–प्रार्थना

(पद्यानुवाद)

– आचार्य स्वदेश

1– हे प्रकाश के पुञ्ज सृष्टिकर्त्ता ऐश्वर्य प्रदाता।
मित्रा, वरुण, तू रूद्रदेव है सूर्य चन्द्र, निर्माता।
भक्त, वेद, ब्रह्माण्ड पालके व्यापक ब्रह्म कहाता।
प्रातः की पावन बेला में मैं तेरे गुण गाता।

2– हे विजयशील ऐश्वर्य प्रदाता तेजस्वी तपधारी।
अन्तरिक्ष के पुत्र सूर्य सम लोकों के आधारी।
हे सर्वज्ञ सुपालक, रक्षक दुर्जन–जन भयकारी।
प्रातः की पावन बेला में स्तुति करुँ तुम्हारी।

3– हे भजनीय सत्यपथप्रेरक सद्–ऐश्वर्य बढ़ाओ।
सदाचार प्रज्ञा प्रदान कर ईश मुझे अपनाओ।
घोड़े गाय आदि पशुओं से राज्यश्री प्रकटाओ।
आर्यजनों से हो सनाथ प्रभु कृपा कोर दिखलाओ।

4– भगवन् आज कृपा तेरी हो और परिश्रम मेरा।
उत्तमबल वैभव विद्या का मुझमें होय बसेरा।
दिन के मध्य धनों के स्वामी बने निवेदन मेरा।
प्रातः काल देवों की मति से हो सम्बन्ध घनेरा।

5– जिससे हे जगदीश्वर तेरे सब सज्जन गुण गावें।
भव के भीतर भव्य भावना भर दो भक्त बुलावें।
भगवन् तुमसा कौन जगत् में पूज्य जिसे अपनावें।
कृपासिन्धु कुछ कृपा बिन्दु दो जग की प्यास बुझावें।

2. रात्रि में सोने के समय की प्रार्थना

ओं अग्ने त्वं सुजागृहि वयं सुमन्दिषीमही।
रक्षाणो अप्रयुच्छन् प्रबुधे नः पुनस्कृधि।। –य0 अ0 4 । 14

जो अग्नि जगने के समय अच्छे प्रकार जगाता वा जिससे जगत् कर्मानुष्ठान करने वाले हम लोग (दुखद–स्वप्नों से रहित) आनन्दपूर्वक सोते हैं, जो प्रमाद रहित होके हम लोगों की रक्षा करता है, उसे युक्तिपूर्वक सब सेवन करते हैं।

(ब) इसके अतिरिक्त 'मानस शिव संकल्प' के छः मंत्रों का पाठ पद्यानुवाद सहित भक्ति भाव से करें। पृष्ठ 53 व 54 पर देखें।

3. भोजन के समय की प्रार्थना

ओउम् अन्नपतेऽन्नस्य नो देहि अनमीवस्य शुष्मिणः।
प्र प्र दातारं तारिषऽऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

–यजु0 11 ।83

अर्थ – हे अन्न के स्वामिन् प्रभो ! हमें अन्न दो, जो रोग रहित और

पुष्टिकारक हो। आप अन्नदाता का कल्याण करें। दुपाये (मनुष्यों) और चौपायों (पशुओं) में तेज धारण करो।

4. भोजन समाप्ति पर

ओं मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत् स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी।।

अर्थ – मूढ़ अज्ञानी तो अन्न को व्यर्थ प्राप्त करता है। सच कहता हूँ वह तो उसका घातक ही होता है, क्योंकि वह न तो राजा का पालन करता है और न ही बन्धु का। सच तो यह है कि अकेला खाने वाला केवल पापमय होता है।

5. यज्ञोपवीत बदलने का मन्त्र

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

वेदोक्त कर्म में अधिकारी बनने के लिए इस ब्रह्म–सूत्र को जो परमात्मा के ज्ञान–प्राप्ति का सूचक है, शुद्ध ज्ञान की सूचना करने वाला है, जो ईश्वर में स्वभाव–सिद्ध उदिष्ट हितकारी है, ऐसे 'ब्रह्मसूत्र' को मैं बाँधता (धारण) करता हूँ। ईश्वर करे कि यह निर्मलता का बोधक यज्ञोपवीत बल और तेज देने वाला हो।

ओं यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।

–पार0 गृह 2 ।सू0 11 ।।

हे ब्रह्मसूत्र ! तू यज्ञोपवीत है। तुझे यज्ञ कार्य के लिये ही ग्रहण करता हूँ। मैं आज स्वयं को यज्ञोपवीत में बाँधता हूँ।

6. व्रत धारण (दृढ़ प्रतिज्ञा) के मन्त्र

ओं अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेन र्ध्या समिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।। 1।।
ओं वायो व्रतपते ✤ स्वाहा। इदं वायवे इदन्न मम।। 2।।
ओं सूर्य व्रतपते ✤ स्वाहा। इदं सूर्याय इदन्न मम।। 3।।
ओं चन्द्र व्रतपते ✤ स्वाहा। इदं चन्द्राय इदन्न मम।। 4।।
ओं व्रतानां व्रतपते ✤ स्वाहा। इदमिन्द्राय व्रतपतये मम।। 5।।

7. आर्य समाज का साप्ताहिक सत्संग

यह सत्संग प्रत्येक रविवार को अथवा सप्ताह में किसी निश्चित दिन यथा सम्भव प्रातः काल और यदि असुविधा हो तो सायंकाल करना चाहिए। आर्यसमाज के प्रत्येक सदस्य तथा सभी सत्संग प्रेमियों को सपरिवार इस सत्संग में अनिवार्यतः श्रद्धा, प्रेम और भक्ति–भाव के साथ सम्मिलित होना चाहिए।'

समय – सत्संग में कम से कम 2 घण्टे से 3 घण्टे तक का समय लगाना उचित है। समय के अनुसार ही निम्नलिखित कार्यक्रम का समय–विभाग बनाकर, लिखकर रखना चाहिए।

स्थान – सत्संग का स्थान समाज मन्दिर ही हो तो उत्तम है। गाँवों आदि में जहाँ मन्दिर नहीं हो वहाँ एक छोटी कुटी तो बना ही लेनी चाहिए अथवा किसी चौपाल आदि का एक निश्चित स्थान कर देना चाहिए। स्थान को पवित्र एवं वातावरण को शान्त–शुद्ध रखना आवश्यक है।

कार्यक्रम – (अ) सामूहिक सन्ध्या– जिनका उच्चारण अति शुद्ध हो, वे करावें। शेष मौन पाठ करें।

(आ) विशेष यज्ञ। यथाविधि करें।

(इ) यज्ञ की समाप्ति पर मंगल कामना, ईश्वर स्तुति–प्रार्थना आदि निम्न प्रकार करें।

☛ इसके आगे 'व्रतं चारिष्यामि' आदि सम्पूर्ण मंत्र बोलना।

आर्यकुमार सभाओं तथा महिला सभाओं के सत्संग में भी इसी कार्यक्रम को अपनाया जा सकता है।

☛ गाँवों में जहाँ कहीं विशेष असुविधा हो, यह सत्संग अमावस्या तथा पौर्णमासी को (पाक्षिक) रखा जा सकता है।

मंगल कामना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।।

हे नाथ ! सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी।
सब हों निरोग भगवन्, धन–धान्य के भण्डारी।।
सब भद्रभाव देखें, सन्मार्ग के पथी हों।
दुखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणधारी।।

ईश्वर स्तोत्र

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

मात तुही गुरु तात तुही, मित्र भ्रात तुही धन–धान्य हमारो।
ईश तुही जगदीश तुही, मम शीश तुही प्रभु राखन हारो।।
राव तुही उमराव तुही, सत्भाव तुही प्रभु राखन हारो।
सार तुही, करतार तुही, घरवार तुही परिवार हमारो।।

नमस्ते सते ते जगत् कारणाय, नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय
नमोऽद्वैततत्वाय मुक्तिप्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय

नमस्ते निराकार निर्गुण निरूपम, नमस्ते शिवं सत्य सुन्दर स्वरूपम्
नमस्ते अगोचर अगमओजदायक, नमस्ते निरंजन निगम नीतिनायक
नमस्ते महेश्वर महा मोक्षदाता, नमस्ते विभू विश्वव्यापी विधाता
नमस्ते सदा सच्चिदानन्द स्वामी, नमस्ते नियन्ता 'भवानी' नमामी

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम्
त्वमेकं जगत्कर्तृ पातृ प्रहर्तृ त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम्

हे वन्दनीय ईश्वर ! तेरी शरण में आया।
तू है स्वयं प्रकाशित, तेरी त्रिलोक माया।।
जगके तुम्हीं जनक हो, पालक विनाशकारी।
हे नाथ ! जब दयाकर सुधि वेग लो हमारी।।

भयानां भयंभीषणंभीषणानां, गति प्राणिनां पावनं पावनानाम्
महोच्चैः पदानां नियन्तृत्वमेकं, परेषां परं रक्षणंरक्षणानाम्

भीषण तुझसे भीत और भय भी भय खावे।
जीवन को गतिशील रसज्ञ पवित्र बनावे।।
सर्वोपरि सर्वेश सच्चिदानन्द स्वरूपम्।
रक्षण के रखबार सभी में दिव्य अनुपम।।

वयंत्वांस्मरामो वयं त्वांभजामो, वयं त्वांजगत्साक्षिरूपं नमामः
सदेकं निधानं निरालम्बमीशं भवाम्बोधिपोतं शरण्यं व्रजामः

सुमिरन, भजन, साधना द्वारा तुमसे नेह लगाऊँ।
घट–घट व्यापी की छाया में श्रेय मार्ग पर जाऊँ।।
एक मात्र अवलम्ब सभी का है तू आश्रय–दाता।
तेरे नाम निगम–नौका से भवसागर तर जाता।।

–अनु0 पूज्यपाद स्वामी भवानीदयाल जी, वैदिक मिशनरी

ओं असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।।

हों असत् से दूर भगवन्, सत्य का वरदान दो।
दूरकर द्रुत तिमिर भगवन्! शुभ्र–ज्योति विहानदो।।
मृत्यु–बन्धन को हटा, अमरत्व हे भगवान् दो।
प्रकृति–पाशों से छुड़ा आनन्द मधु का पान दो।।

– अनु0 श्री पं0 द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री, मेरठ

ओं शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्यमा।
शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः।।

तुम्हीं ब्रह्मा, तुही विष्णु, तुम्हीं इन्द्र अविनाशी।
बृहस्पति अर्यमा तुम ही वरुण वर मित्र सुखराशी।।
ऋतम् सत्यम् से तूने सृष्टि को सम्यक् सँवारा है।
तेरे आलोक से भगवन्, प्रकाशित लोक सारा है।।

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्र तारकम् नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तिमनुभाति सर्वं, तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।।

जग के प्रकाश सारे तुमसे प्रकाश पाते।
रवि–चन्द्र और तारे नभ में चमक दिखाते।।
तू है स्वयं प्रकाशित, अद्भुत प्रकाश तेरा।
अपनी प्रभा दिखादे, जग से मिटे अंधेरा।।

ओं स ब्रह्मा स विष्णुः स रुद्रस्स शिवस्सोऽक्षरस्स।
परमः स्वराट्। स इन्द्रस्य कालाग्निस्स चन्द्रमाः।।

ब्रह्मा स्वराट् तू ही इन्द्र भी कहाता।
तू विष्णु सर्वव्यापी, हो चन्द्र जगमगाता।।
कालाग्नि, रुद्र, अक्षर, शिव, इष्टदेव मेरे।
तुम एक ही हो भगवन्! पर नाम हैं घनेरे।।

ओं सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।।

भगवन्! आज विपद का मारा मैं तेरे ढिंग आया हूँ।
जीवन के संग्राम–क्षेत्र में अगणित ठोकर खाया हूँ।।
ओज–तेज–बल–वीर्य ज्ञान–गुण से हमको मण्डित कीजे।
साम्यभाव, सुन्दर समाज, सुखदायक सत्संगति दीजे।।

ओं तेजोऽसि तेजो मयि धेहि, वीर्यमसि वीर्य मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि, ओजोऽस्योजो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि, सहोऽसि सहो मयि धेहि।

हे तेजवन्त भगवन्! मेरे में तेज भरदे।
ब्रह्माण्ड वीर्य! मुझको भी वीर्यवान् करदे।।
बल–वीर्य के विधायक! मुझको बली बनाओ।
हे ओज के अधीश्वर! निज ओज से सजाओ।।
पुरुषत्व, रोष पावन सहने की शक्ति दीजे।
अपने सभी गुणों से परिपूर्ण नाथ कीजे।।

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्र मरुत स्तुवन्ति दिव्यं स्तवैः
वेदैः साग पदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः

ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो।
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः।।

ब्रह्म, वरुण, रुद्र, मारुत सब जिसकी गाथा गाते।
वेद और उपनिषद् कथा कीर्तन से नहीं अघाते।।
मानस–दर्शन के हित जिसका योगी ध्यान लगाते।
उसी देव अधिनायक को हम सादर शीश नवाते।।

– पू0 स्वामी भवानीदयाल जी, वैदिक मिशनरी

यस्य मे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रः रसया सहाहुः।
यस्य मा प्रदिशो यस्य बाहुः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

हिम आवृत ये उन्नत पर्वत जिसकी महिमा गाते हैं।
ये समुद्र भी उछल–उछलकर गुण जिसके बतलाते हैं।।
चित्र विचित्र दिशायें जिसकी महिमा का करती हैं गान।
दशों दिशायें जिस विराट्की बलशाली हैं भुजा समान।।
भक्ति–भाव की भेटें लेकर उन चरणों तक जाते हैं।
श्रद्धा पूर्वक सुख–सागर के आगे शीश झुकाते हैं।।

– श्री पं0 धर्मदेव जी

वैदिक विनय

उक्त स्तोत्र पाठ के पश्चात् 'वैदिक विनय' का निम्नलिखित मन्त्र और उसका गीतमय अनुवाद मिलकर गावें।

ओउम् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो अराव्णः।

हे प्रभु ! हम तुमसे वर पावें।
अखिल विश्व को आर्य बनावें।।
फैलें, सुख–सम्पत्ति फैलावें, आप बढें प्रिय राष्ट्र बढ़ावें।
वैर–विघ्न को मार मिटावें, प्रीति–नीति की रीति चलावें।।

(ब) पश्चात् दैनिक एवं विशेष यज्ञों में यह प्रार्थना गावें–

यज्ञ प्रार्थना

– पं लोकनाथ तर्कवाचस्पति

पूजनीय प्रभो ! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल–कपट को, मानसिक बल दीजिए।। 1
वेद की गायें ऋचायें, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक–सागर से तरें।। 2
अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ पर–उपकार को।
धर्म–मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को।। 3
नित्य श्रद्धा–भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें।। 4
भावना मिट जाय मन से पाप अत्याचार की।
कामनायें पूर्ण होवें यज्ञ से नर नारि की।। 5
लाभकारी हो हवन हर प्राणधारी के लिए।
वायु–जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किये।। 6
स्वार्थ–भाव मिटे हमारा प्रेम–पथ विस्तार हो।
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।। 7
होथ जोड़ झुकायें मस्तक वन्दना हम कर रहे।
'नाथ' करुणा–रूप करुणा आपकी सब पर रहे।। 8

(ऊ) तत्पश्चात् 'भजन संकीर्तन' में से ईश्वर–भक्ति अथवा महर्षि महिमा का एक सुन्दर भजन सब मिलकर गावें –

(ए) वेदमन्त्र की व्याख्या – 'आर्याभिविनय' से।

(ओ) कथा महर्षि जीवन–चरित्र (श्रीमद्दयानन्द प्रकाश)

(औ) तत्पश्चात् ऋग्वेद के अन्तिम संगठन–सूक्त का पाठ करें।

संगठन सूक्त

सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इड़स्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर।। 1

हे प्रभो ! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए सुख-वृष्टि को।। 1

सगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानानां उपासते।। 2

प्रेम से मिलकर चलें बोलें सभी ज्ञानी बनें।
पूर्वजों की भाँति हम कर्त्तव्य के मानी बनें।। 2

संमानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मंत्रमभिमंत्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।। 3

हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान पाते हैं बराबर भोग्य पा सब नेक हों।। 3

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। 4

हों सभी के मन तथा संकल्प अ-विरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख-सम्पदा।। 4

वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना

ओं आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्।
आराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्
दोग्धीधेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषाजिष्णुरथेष्ठा
सभेयोयुवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्
निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः
पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्।। —यजु0 अ0 22।मंत्र 22

ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हो द्विज ब्रह्म तेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों अरि-दल विनाशकारी।।
होवें दुधारु गौवें, वृष अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही।।

बलवान् सभ्य योद्धा यजमान पुत्र होवें।
इच्छानुसार वर्षें, पर्जन्य ताप धोवें।।
फल-फूल से लदी हों औषध अमोघ सारी।
हो योगक्षेम-कारी, स्वाधीनता हमारी।।

(अ) आर्य समाज के दस नियम मिलकर पाठ करें (ये आगे दिये हैं)

(आ) आवश्यक सूचनायें व परिचय आदि के पश्चात् शांति पाठ।

8. पारिवारिक सत्संग

द्रष्टव्य – आर्य परिवार में इन सत्संगों का आयोजन अत्यावश्यक है। आठवें दिन या अमावस्या पूर्णिमा को या जैसी सुविधा हो ये सत्संग आवश्यक है। वैदिक भावनाओं के प्रचार प्रसार का इन्हें सर्वोतम साधन बनाया जा सकता है।

विधि – अन्य समस्त विधि साप्ताहिक सत्संग की रखें। सत्यार्थ प्रकाश, महर्षि जीवन चरित्र के स्थान पर पारिवारिक कर्त्तव्य विषयक भाषण का आयोजन करें। स्त्रियोपयोगी भजन भी हों। बीच में ऋषि, सत्यार्थ प्रकाश के उदाहरण दें।

9. वेद सप्ताह एवं महर्षि बोध सप्ताह

श्रावणी से जन्माष्टमी तक 'वेद सप्ताह' तथा शिवरात्रि से एक सप्ताह पूर्व से, शिवरात्रि तक 'महर्षि बोध सप्ताह' प्रतिवर्ष सभी आर्यसमाजों में उत्साह पूर्वक मनाना चाहिए।

कार्यक्रम

(अ) प्रतिदिन प्रातः प्रभात फेरी (गायन आगे दिये गये हैं)

(आ) सामान्य होम के अतिरिक्त प्रतिदिन यजुर्वेद के एक अध्याय की विशेष आहुतियाँ दी जायें। यजु0 अ0 22, 30, 31, 32, 35, 36 तथा 40, एक सप्ताह के लिए ये 7 अध्याय उपयुक्त रहेंगे। (इनमें से कुछ आगे दिये हैं)

(इ) वेद कथा या महर्षि जीवन कथा।

(ई) आत्म-निरीक्षण जीवन को साधनशील बनाने के लिए किसी व्रत का धारण, आर्य सदस्यों की वृद्धि, आर्य साहित्य का विक्रय-वितरण आदि रचनात्मक कार्यों पर बल दिया जावे।